



Komal tawani

20 Mar 1993

01:00 AM

Nizamabad

Model: Web-KundliDarpan

Order No: 119216601

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

लिंग _____: स्त्रीलिंग
जन्म तिथि _____: 19-20/03/1993
दिन _____: शुक्र-शनिवार
जन्म समय _____: 01:00:00 घंटे
इष्ट _____: 46:32:16 घटी
स्थान _____: Nizamabad
राज्य _____: Andhra Pradesh
देश _____: India

अक्षांश _____: 18:40:00 उत्तर
रेखांश _____: 78:05:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:17:40 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 00:42:20 घंटे
वेलान्तर _____: -00:07:49 घंटे
साम्पातिक काल _____: 12:31:44 घंटे
सूर्योदय _____: 06:23:05 घंटे
सूर्यास्त _____: 18:28:10 घंटे
दिनमान _____: 12:05:05 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: वसन्त
सूर्य के अंश _____: 05:26:20 मीन
लग्न के अंश _____: 05:47:15 धनु

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: धनु - गुरु
राशि-स्वामी _____: मकर - शनि
नक्षत्र-चरण _____: धनिष्ठा - 2
नक्षत्र स्वामी _____: मंगल
योग _____: सिद्ध
करण _____: तैत्तिरीय
गण _____: राक्षस
योनि _____: सिंह
नाड़ी _____: मध्य
वर्ण _____: वैश्य
वश्य _____: जलचर
वर्ग _____: मार्जार
युँजा _____: अन्त्य
हंसक _____: भूमि
जन्म नामाक्षर _____: गी-गीता
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: रजत - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: मीन

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1914	फाल्गुन	29
पंजाबी	संवत : 2049	चैत्र	7
बंगाली	सन् : 1399	चैत्र	6
तमिल	संवत : 2049	पंगुनी	7
केरल	कोल्लम : 1168	मीनम	6
नेपाली	संवत : 2049	चैत्र	7
चैत्रादि	संवत : 2049	चैत्र	कृष्ण 13
कार्तिकादि	संवत : 2049	फाल्गुन	कृष्ण 13

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 12
तिथि समाप्ति काल _____ : 29:18:02
जन्म तिथि _____ : 12
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : श्रवण
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 16:37:27 घंटे
जन्म योग _____ : धनिष्ठा
सूर्योदय कालीन योग _____ : शिव
योग समाप्ति काल _____ : 13:21:20 घंटे
जन्म योग _____ : सिद्ध
सूर्योदय कालीन करण _____ : कौलव
करण समाप्ति काल _____ : 16:05:36 घंटे
जन्म करण _____ : तैतिल
भयात _____ : 20:56:24
भभोग _____ : 67:19:19
भोग्य दशा काल _____ : मंगल 4 वर्ष 9 मा 25 दि

घात चक्र

मास _____ : वैशाख
तिथि _____ : 4-9-14
दिन _____ : मंगलवार
नक्षत्र _____ : रोहिणी
योग _____ : वैधृति
करण _____ : शकुनि
प्रहर _____ : 4
वर्ग _____ : मूषक
लग्न _____ : कुम्भ
सूर्य _____ : कुम्भ
चन्द्र _____ : वृश्चिक
मंगल _____ : मीन
बुध _____ : धनु
गुरु _____ : मेष
शुक्र _____ : वृष
शनि _____ : मकर
राहु _____ : मिथुन

SURESH MAHARAJ

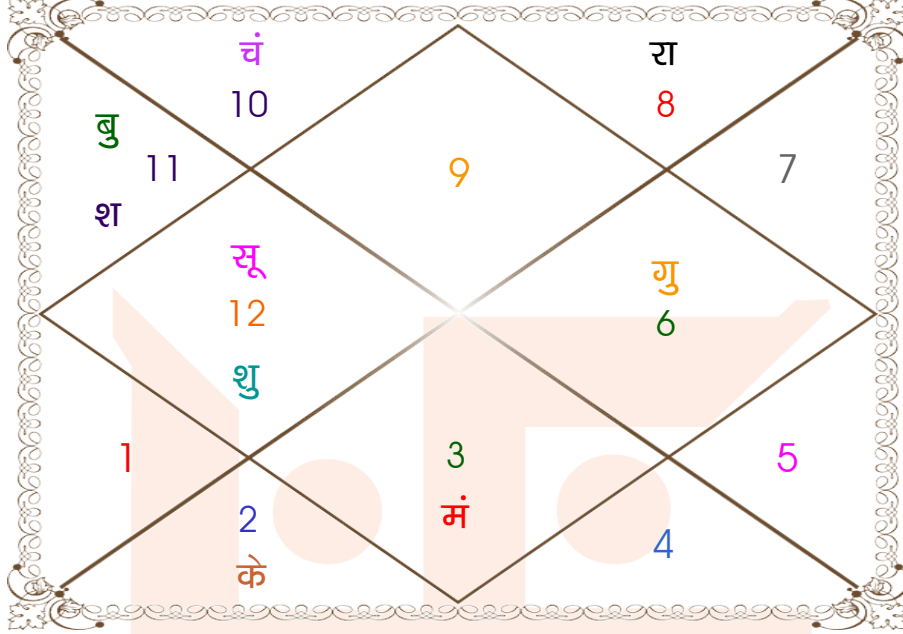
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

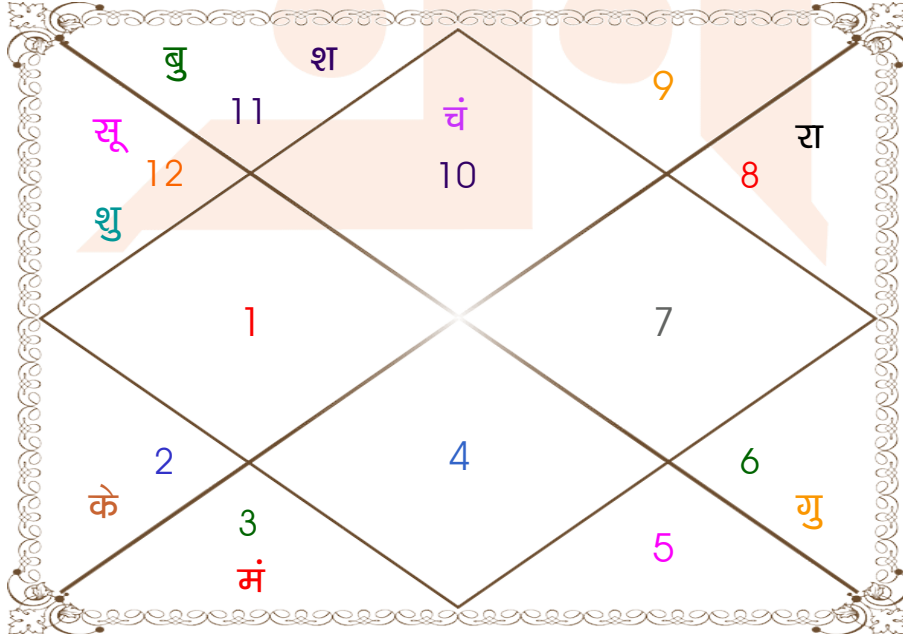
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

शु सू		के	मं
श बु			
चं			
ल	रा		गु

लग्न कुंडली

के		शु सू	श बु
मं			चं
			ल
गु		रा	

विंशोत्तरी
मंगल 4वर्ष 9मा 25दि
मंगल

20/03/1993

14/01/2111

मंगल	13/01/1998
राहु	13/01/2016
गुरु	13/01/2032
शनि	13/01/2051
बुध	13/01/2068
केतु	13/01/2075
शुक्र	13/01/2095
सूर्य	14/01/2101
चन्द्र	14/01/2111

योगिनी
पिंगला 1वर्ष 4मा 15दि
संकटा

05/08/2019

05/08/2027

संकटा	15/05/2021
मंगला	04/08/2021
पिंगला	14/01/2022
धान्या	14/09/2022
भ्रामरी	05/08/2023
भद्रिका	14/09/2024
उल्का	14/01/2026
सिद्धा	05/08/2027

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

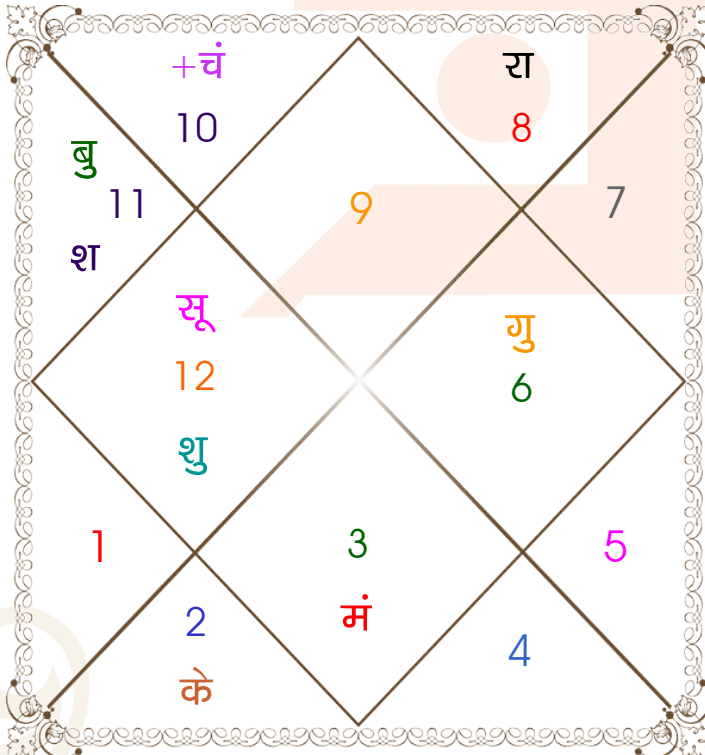
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			धनु	05:47:15	330:56:14	मूल	2	19	गुरु	केतु	राहु	---
सूर्य			मीन	05:26:20	00:59:39	उ०भाद्रपद	1	26	गुरु	शनि	शनि	मित्र राशि
चंद्र			मक	27:29:13	11:53:29	धनिष्ठा	2	23	शनि	मंगल	गुरु	सम राशि
मंगल			मिथु	20:26:25	00:18:23	पुनर्वसु	1	7	बुध	गुरु	गुरु	शत्रु राशि
बुध	व		कुंभ	16:54:26	00:16:49	शतभिषा	4	24	शनि	राहु	शुक्र	सम राशि
गुरु	व		कन्या	17:23:30	00:07:25	हस्त	3	13	बुध	चंद्र	शनि	शत्रु राशि
शुक्र	व		मीन	24:47:58	00:20:37	रेवती	3	27	गुरु	बुध	राहु	उच्च राशि
शनि			कुंभ	01:35:22	00:06:25	धनिष्ठा	3	23	शनि	मंगल	बुध	मूलत्रिकोण
राहु	व		वृश्चि	21:59:48	00:10:26	ज्येष्ठा	2	18	मंगल	बुध	सूर्य	शत्रु राशि
केतु	व		वृष	21:59:48	00:10:26	रोहिणी	4	4	शुक्र	चंद्र	शुक्र	सम राशि
हर्ष			धनु	27:50:04	00:01:51	उत्तराषाढ़ा	1	21	गुरु	सूर्य	चंद्र	---
नेप			धनु	27:04:01	00:01:06	उत्तराषाढ़ा	1	21	गुरु	सूर्य	सूर्य	---
प्लूटो	व		वृश्चि	01:37:38	00:00:43	विशाखा	4	16	मंगल	गुरु	राहु	---
दशम भाव			कन्या	14:52:28	--	हस्त	--	13	बुध	चंद्र	गुरु	--

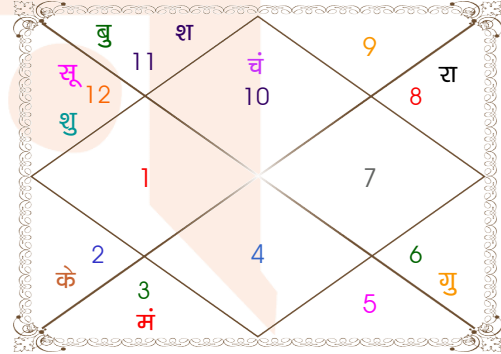
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:46:01

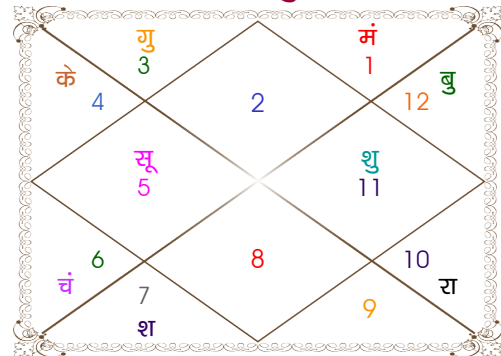
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	वृश्चिक 22:18:07	धनु 05:47:15
2	धनु 22:18:07	मकर 08:48:59
3	मकर 25:19:51	कुम्भ 11:50:44
4	कुम्भ 28:21:36	मीन 14:52:28
5	मीन 28:21:36	मेष 11:50:44
6	मेष 25:19:51	वृष 08:48:59
7	वृष 22:18:07	मिथुन 05:47:15
8	मिथुन 22:18:07	कर्क 08:48:59
9	कर्क 25:19:51	सिंह 11:50:44
10	सिंह 28:21:36	कन्या 14:52:28
11	कन्या 28:21:36	तुला 11:50:44
12	तुला 25:19:51	वृश्चिक 08:48:59

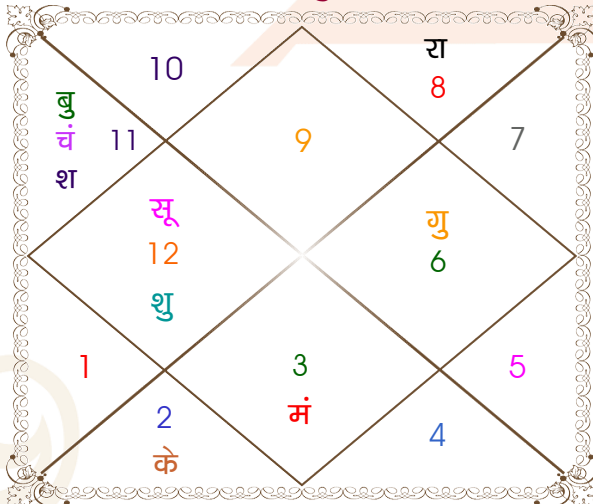
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	धनु	05:47:15
2	मकर	07:15:24
3	कुम्भ	11:13:53
4	मीन	14:52:28
5	मेष	14:53:45
6	वृष	11:07:17
7	मिथुन	05:47:15
8	कर्क	07:15:24
9	सिंह	11:13:53
10	कन्या	14:52:28
11	तुला	14:53:45
12	वृश्चिक	11:07:17

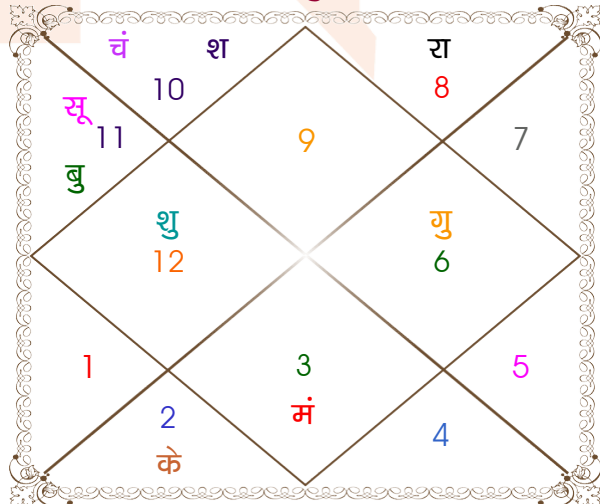
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी
मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त
चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण

चलित कुंडली



भाव कुंडली



SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

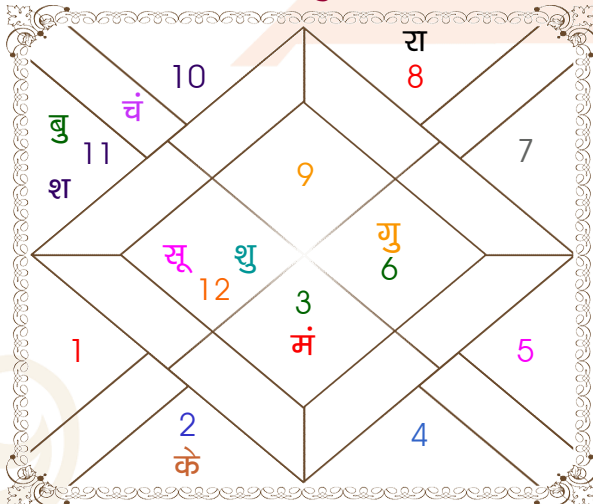
कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	----- कारक -----	----- अवस्था -----					
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	ज्ञाति	पितृ	मृत	मुदित	नृत्यलिप्सा	8.08	50 %
चंद्र	आत्मा	मातृ	बाल	शान्त	निद्रा	5.07	79 %
मंगल	भातृ	भातृ	वृद्ध	खल	भोजन	0.42	33 %
बुध	पुत्र	ज्ञाति	युवा	शक्त	आगमन	0.39	59 %
गुरु	मातृ	धन	युवा	खल	निद्रा	1.67	67 %
शुक्र	अमात्य	कलत्र	बाल	दीप्त	आगमन	23.71	57 %
शनि	कलत्र	आयु	बाल	स्वस्थ	कौतुक	4.36	56 %
राहु	---	ज्ञान	कुमार	खल	आगमन	0.00	0 %
केतु	---	मोक्ष	कुमार	शक्त	आगमन	0.00	2 %
कुल						43.69	

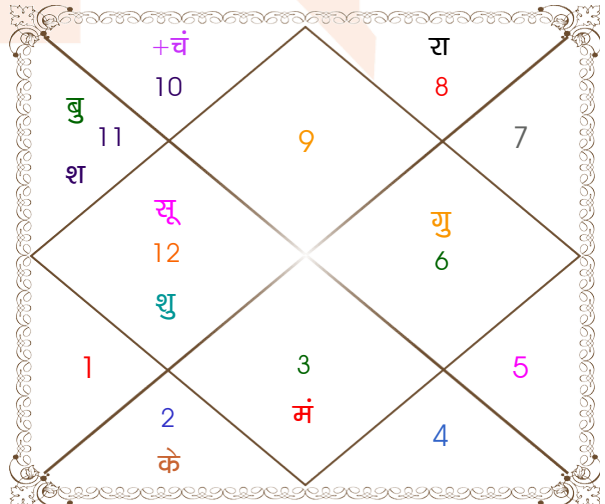
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी
मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त
चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण

चलित कुंडली



लग्न-चलित



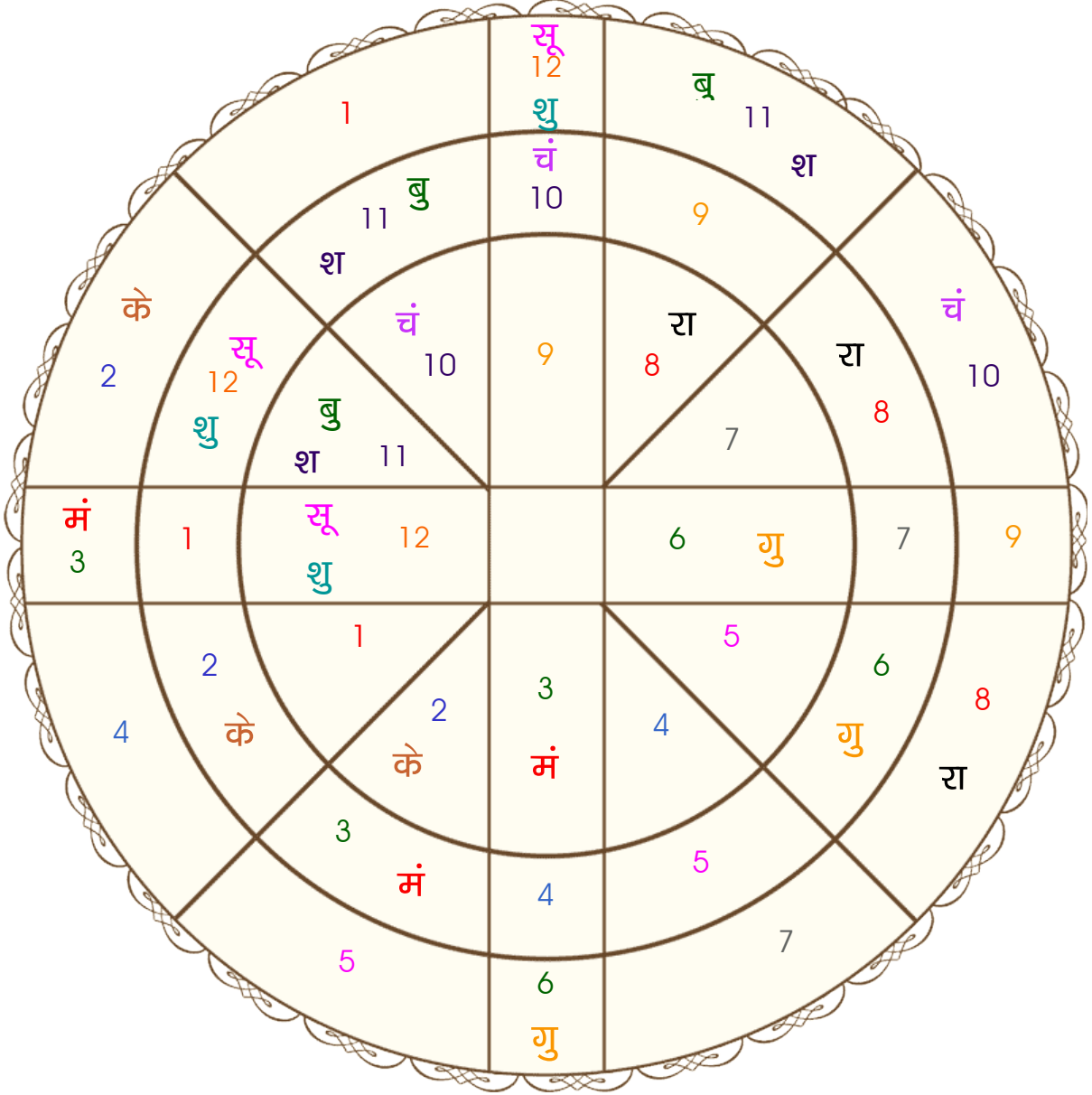
SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

सुदर्शन चक्र



नोट: सुदर्शन चक्र कमानुसार बाहरी वृत्त से अन्तः वृत्त तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

कृष्णमूर्ति पद्धति

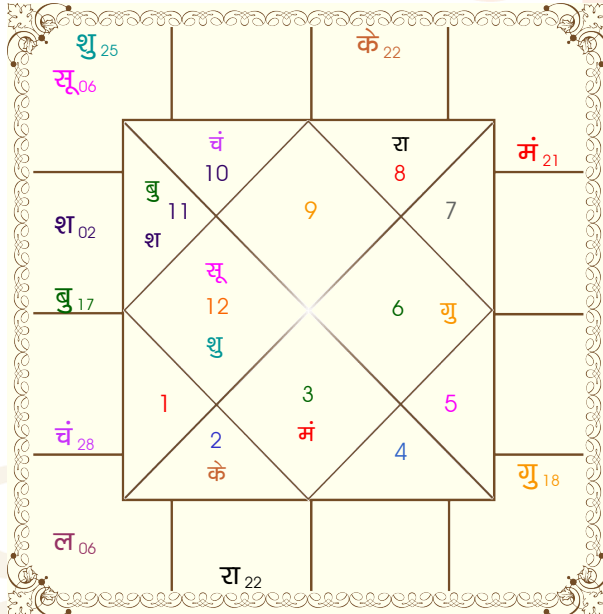
भोग्य दशा काल : मंगल 4 वर्ष 9 मास 4 दिन

ग्रह								निरयण भाव						
ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.	भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		मीन	05:32:50	गुरु	शनि	बुध	बुध	1	धनु	05:53:45	गुरु	केतु	राहु	गुरु
चंद्र		मक	27:35:43	शनि	मंगल	गुरु	मंगल	2	मक	07:21:54	शनि	सूर्य	केतु	राहु
मंगल		मिथु	20:32:55	बुध	गुरु	गुरु	बुध	3	कुंभ	11:20:24	शनि	राहु	शनि	शुक्र
बुध	व	कुंभ	17:00:56	शनि	राहु	शुक्र	बुध	4	मीन	14:58:59	गुरु	शनि	गुरु	गुरु
गुरु	व	कन्या	17:30:00	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	5	मेष	15:00:16	मंगल	शुक्र	शुक्र	शनि
शुक्र	व	मीन	24:54:29	गुरु	बुध	राहु	शनि	6	वृष	11:13:47	शुक्र	चंद्र	मंगल	राहु
शनि		कुंभ	01:41:53	शनि	मंगल	बुध	शनि	7	मिथु	05:53:45	बुध	मंगल	चंद्र	गुरु
राहु	व	वृश्चि	22:06:19	मंगल	बुध	सूर्य	केतु	8	कर्क	07:21:54	चंद्र	शनि	केतु	केतु
केतु	व	वृष	22:06:19	शुक्र	चंद्र	शुक्र	शनि	9	सिंह	11:20:24	सूर्य	केतु	शनि	गुरु
हर्ष		धनु	27:56:35	गुरु	सूर्य	चंद्र	शनि	10	कन्या	14:58:59	बुध	चंद्र	गुरु	शुक्र
नेप		धनु	27:10:31	गुरु	सूर्य	सूर्य	बुध	11	तुला	15:00:16	शुक्र	राहु	केतु	शनि
प्लूटो	व	वृश्चि	01:44:09	मंगल	गुरु	राहु	गुरु	12	वृश्चि	11:13:47	मंगल	शनि	चंद्र	राहु

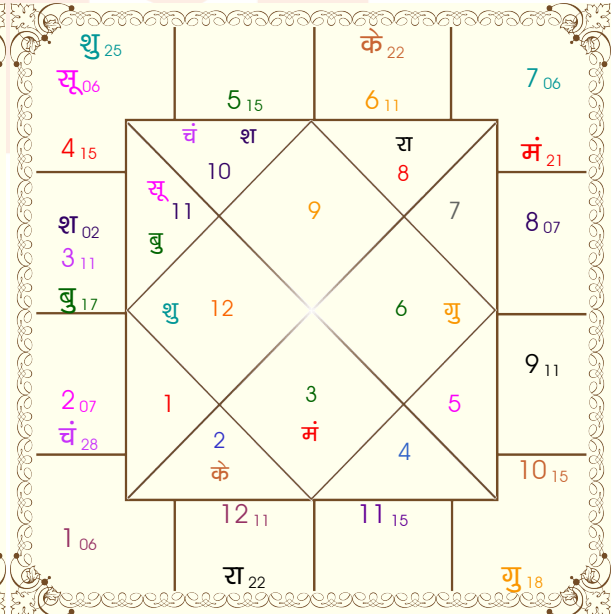
के.पी. अयनांश : 23:39:31

फॉरच्युना : तुला 27:56:38

लग्न कुंडली



भाव कुंडली



SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	मंगल- गुरु-
2	सूर्य+ चंद्र, गुरु, शनि, केतु,
3	सूर्य+ बुध, शुक्र, शनि- राहु,
4	मंगल- गुरु- शुक्र,
5	चंद्र- मंगल- शनि-
6	शुक्र- केतु,
7	चंद्र, मंगल, बुध- शुक्र- शनि, राहु-
8	चंद्र- गुरु- केतु-
9	सूर्य-
10	मंगल, बुध- गुरु, शुक्र- राहु-
11	शुक्र-
12	चंद्र- मंगल- बुध, शनि- राहु,

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	2+ 3+ 9-
चंद्र	2, 5- 7, 8- 12-
मंगल	1- 4- 5- 7, 10, 12-
बुध	3, 7- 10- 12,
गुरु	1- 2, 4- 8- 10,
शुक्र	3, 4, 6- 7- 10- 11-
शनि	2, 3- 5- 7, 12-
राहु	3, 7- 10- 12,
केतु	2, 6, 8-

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	केतु
लग्न राशि स्वामी	गुरु
राशि नक्षत्र स्वामी	मंगल
राशि स्वामी	शनि
वार स्वामी	शनि
लग्न अन्तर स्वामी	राहु
राशि अन्तर स्वामी	गुरु

SURESH MAHARAJ

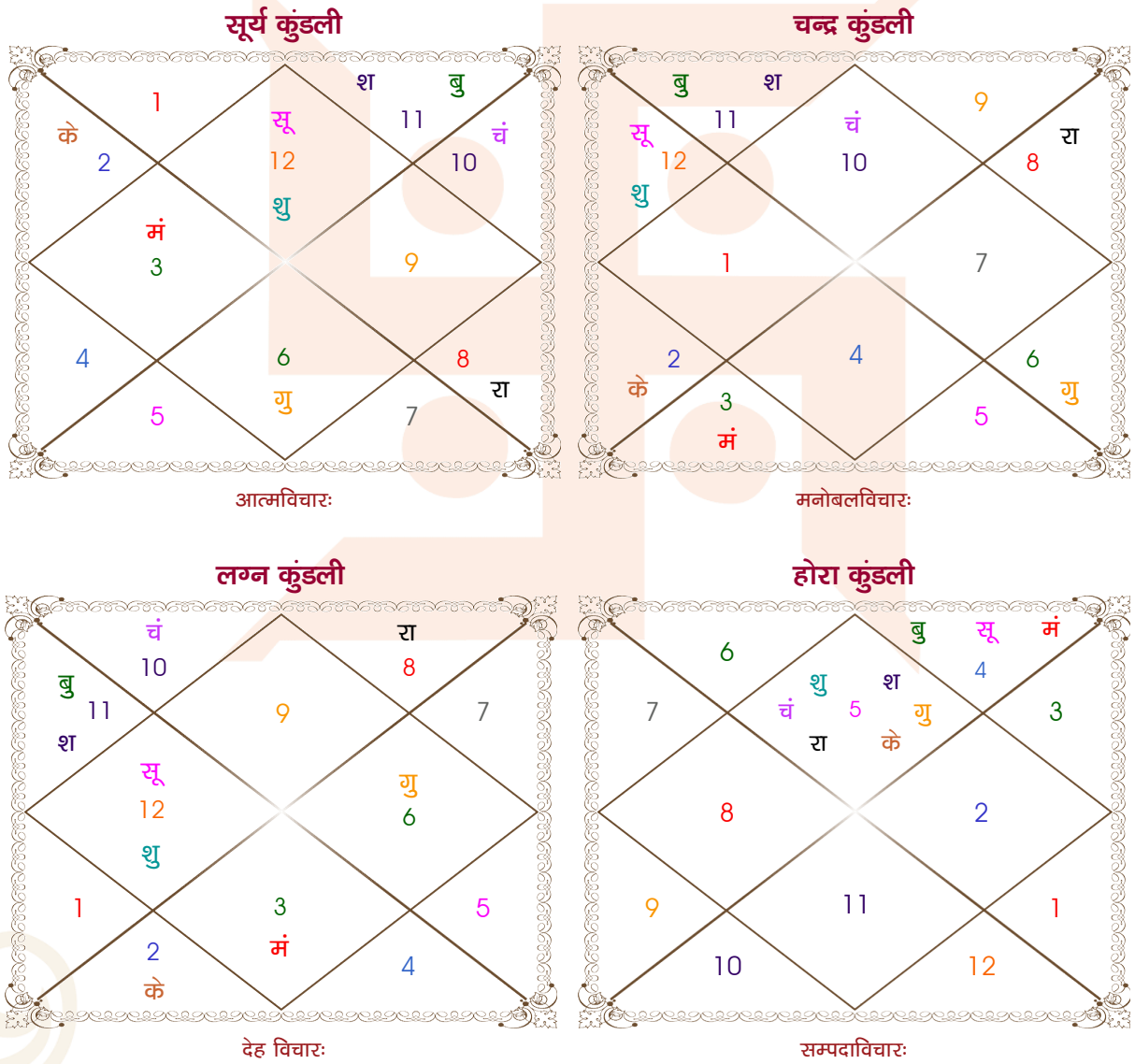
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिए, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।



SURESH MAHARAJ

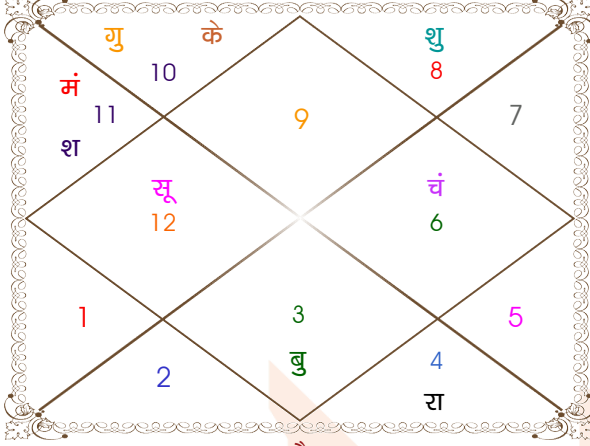
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

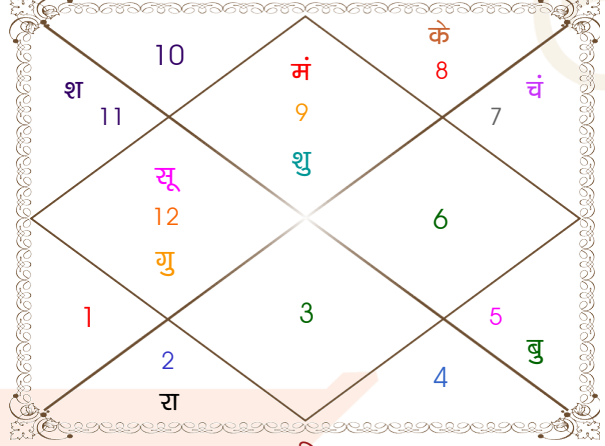
षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली



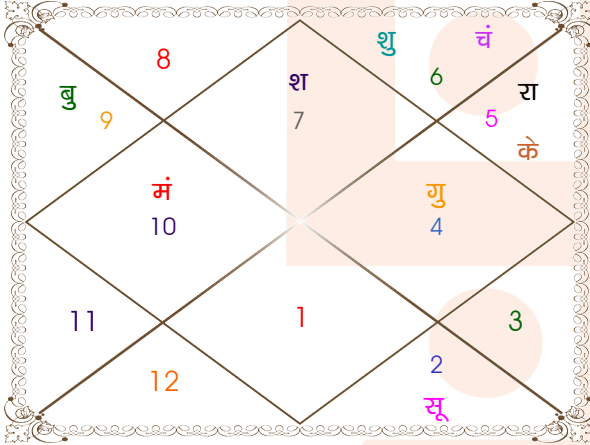
भातृसौख्यम्

चतुर्थाश कुंडली



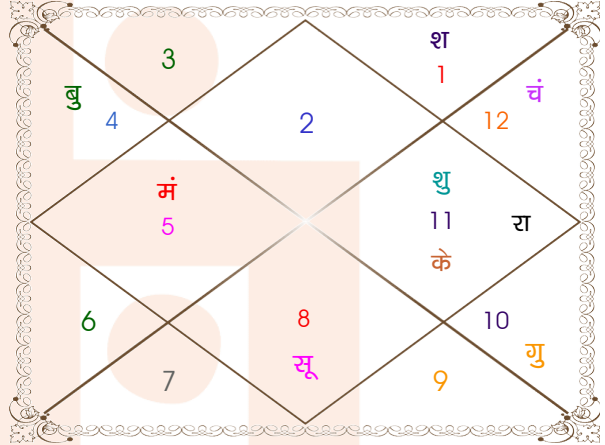
भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली



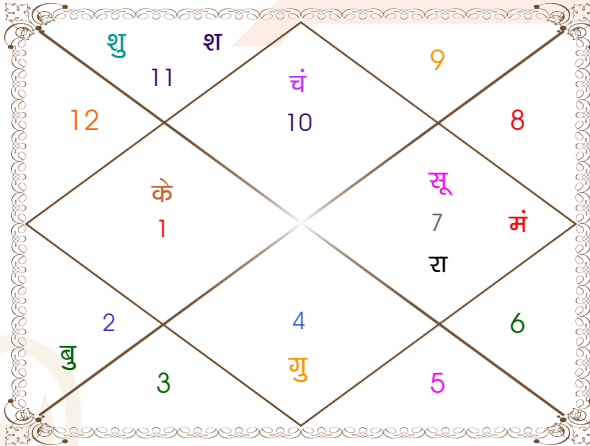
ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली



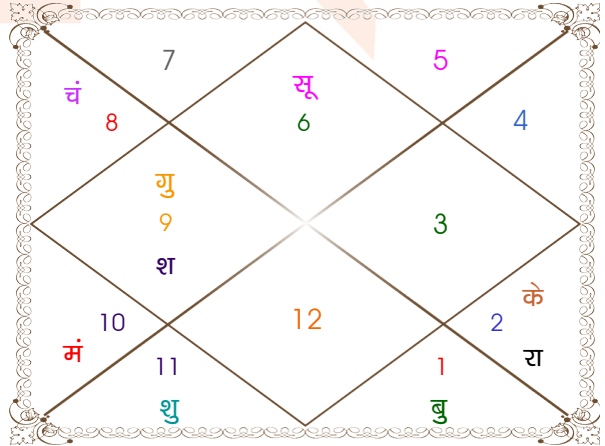
रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली



पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली



आयुविचारः

SURESH MAHARAJ

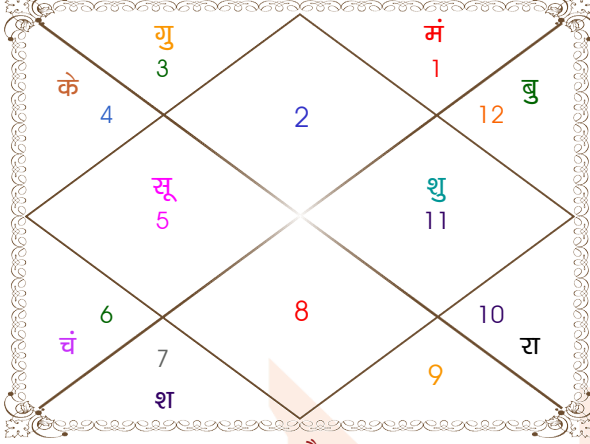
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

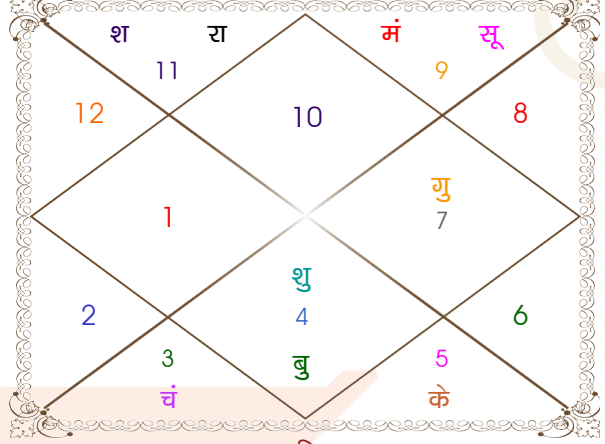
षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली



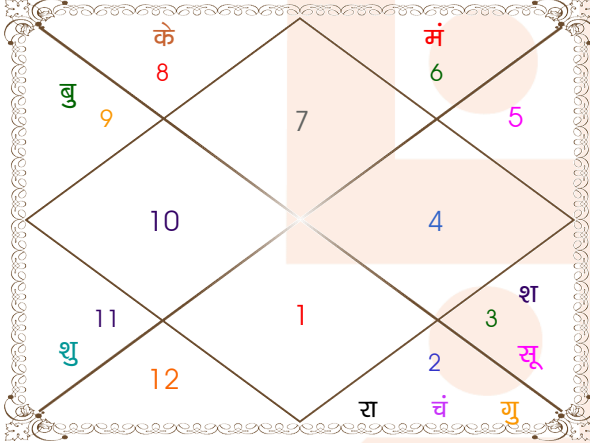
कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली



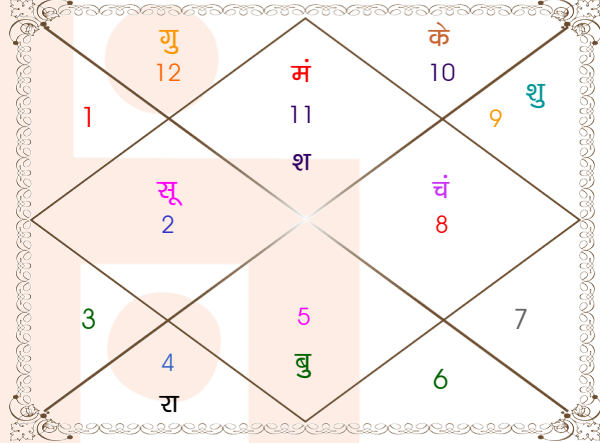
राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली



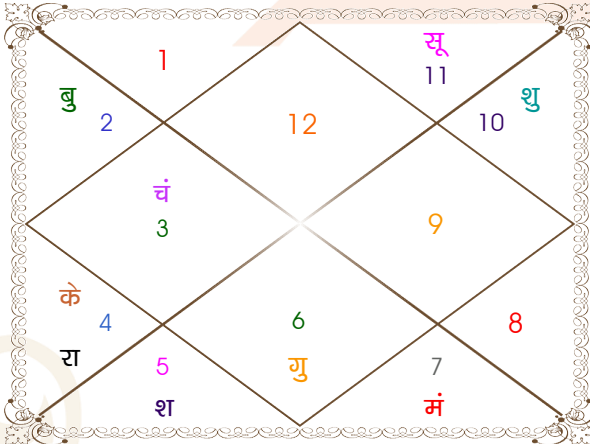
लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली



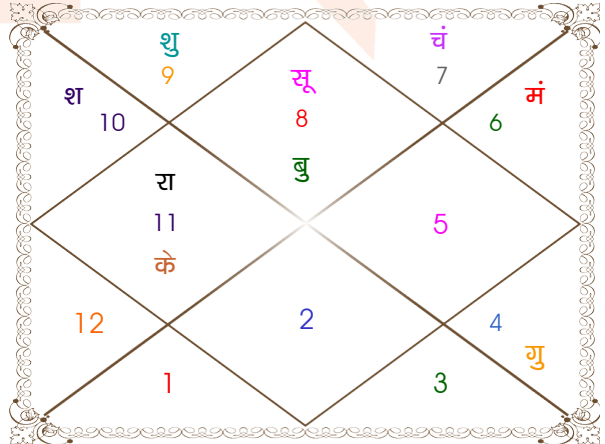
पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली



वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली



उपासनाज्ञानम्

SURESH MAHARAJ

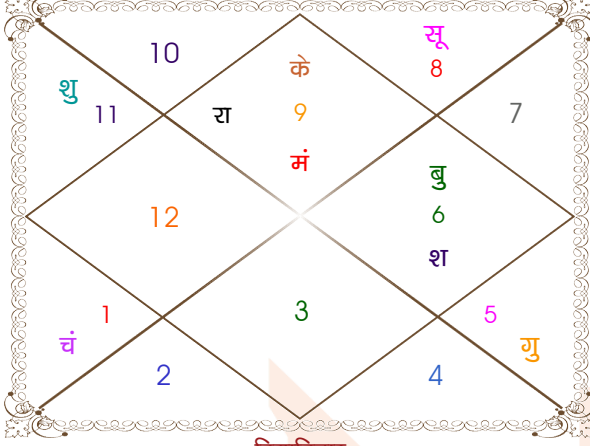
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

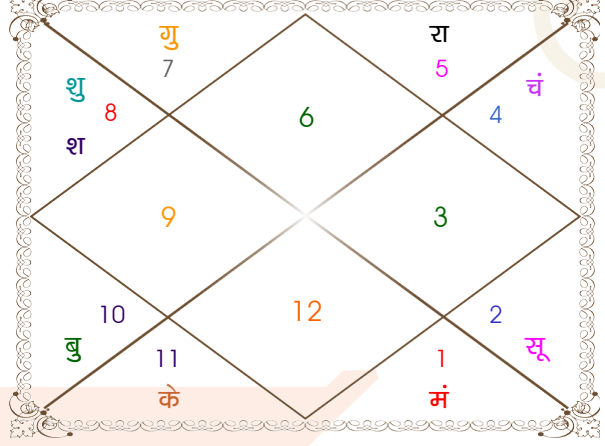
षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशश कुंडली



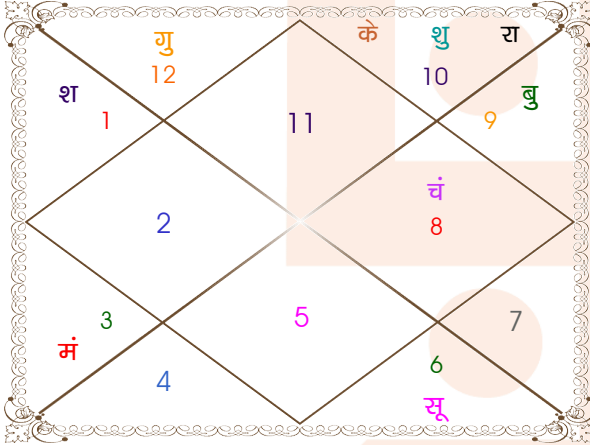
विद्याविचारः

सप्तविंशश कुंडली



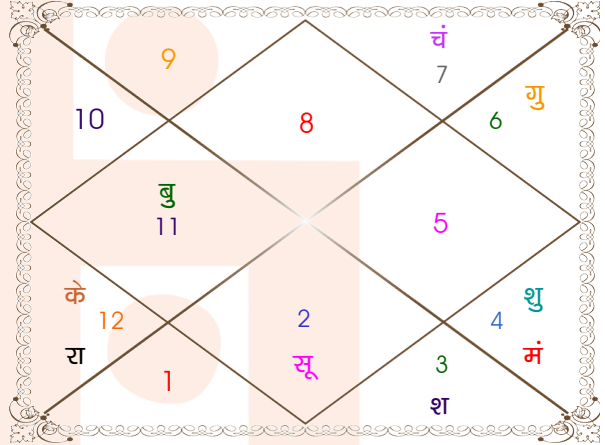
बलाबलज्ञानम्

त्रिंशश कुंडली



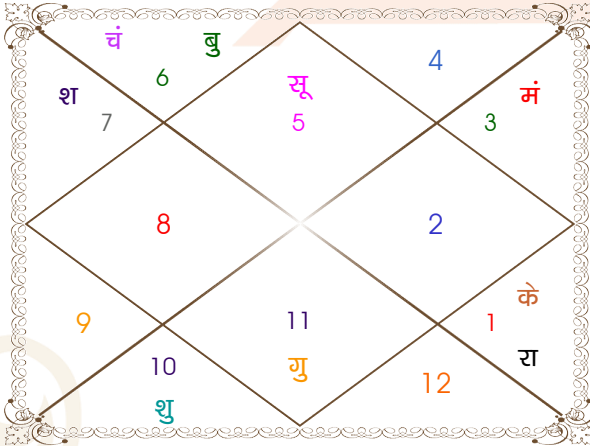
अरिष्टज्ञानम्

अष्टवेदांश कुंडली



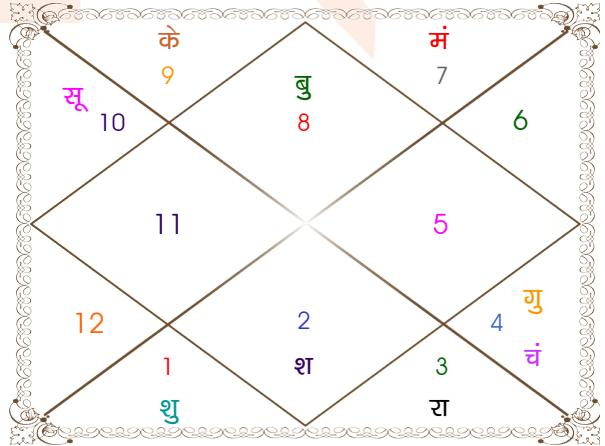
शुभाशुभज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली



सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली



सर्वास्थितिविचारः

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	धनु	मीन	मक	मिथु	कुंभ	कन्या	मीन	कुंभ	वृश्चि	वृष
होरा	सिंह	कर्क	सिंह	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह	सिंह	सिंह	सिंह
द्रेष्काण	धनु	मीन	कन्या	कुंभ	मिथु	मक	वृश्चि	कुंभ	कर्क	मक
चतुर्थांश	धनु	मीन	तुला	धनु	सिंह	मीन	धनु	कुंभ	वृष	वृश्चि
सप्तमांश	मक	तुला	मक	तुला	वृष	कर्क	कुंभ	कुंभ	तुला	मेष
नवमांश	वृष	सिंह	कन्या	मेष	मीन	मिथु	कुंभ	तुला	मक	कर्क
दशमांश	मक	धनु	मिथु	धनु	कर्क	तुला	कर्क	कुंभ	कुंभ	सिंह
द्वादशांश	कुंभ	वृष	वृश्चि	कुंभ	सिंह	मीन	धनु	कुंभ	कर्क	मक
षोडशांश	मीन	कुंभ	मिथु	तुला	वृष	कन्या	मक	सिंह	कर्क	कर्क
विंशांश	वृश्चि	वृश्चि	तुला	कन्या	वृश्चि	कर्क	धनु	मक	कुंभ	कुंभ
चतुर्विंशांश	धनु	वृश्चि	मेष	धनु	कन्या	सिंह	कुंभ	कन्या	धनु	धनु
सप्तविंशांश	कन्या	वृष	कर्क	मेष	मक	तुला	वृश्चि	वृश्चि	सिंह	कुंभ
त्रिंशांश	कुंभ	कन्या	वृश्चि	मिथु	धनु	मीन	मक	मेष	मक	मक
खवेदांश	वृश्चि	वृष	तुला	कर्क	कुंभ	कन्या	कर्क	मिथु	मीन	मीन
अक्षवेदांश	सिंह	सिंह	कन्या	मिथु	कन्या	कुंभ	मक	तुला	मेष	मेष
षष्ट्यंश	वृश्चि	मक	कर्क	तुला	वृश्चि	कर्क	मेष	वृष	मिथु	धनु

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	1 ---	1 ---	1 ---	2 भेदक
चन्द्र	0 ---	0 ---	1 ---	2 भेदक
मंगल	1 ---	1 ---	1 ---	2 भेदक
बुध	1 ---	1 ---	1 ---	3 कुसुम
गुरु	2 किंसुक	3 व्यंजन	4 गोपुर	6 केरल
शुक्र	1 ---	1 ---	1 ---	1 ---
शनि	4 चामर	5 छत्र	6 पारवत	9 पूर्णचन्द्र
राहु	0 ---	0 ---	1 ---	1 ---
केतु	0 ---	0 ---	1 ---	3 कुसुम

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	13.05	15.45	9.85	11.00	8.15	11.70	17.75	10.40	11.15
सप्तवर्ग	12.18	15.23	10.63	11.73	8.68	12.40	17.80	10.45	11.88
दशवर्ग	10.98	16.18	11.78	10.90	9.40	12.98	16.73	11.93	10.30
षोडशवर्ग	12.30	16.53	12.38	10.45	8.28	13.38	16.13	11.88	10.00

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र
चंद्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
मंगल	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र
गुरु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु
शुक्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	मित्र	शत्रु	मित्र
शनि	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	---	मित्र	मित्र
राहु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	---	शत्रु
केतु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	---

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	अतिमित्र	अतिमित्र	मित्र	सम	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु	सम
चंद्र	अतिमित्र	---	शत्रु	अतिमित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	सम	अधिशत्रु
मंगल	अतिमित्र	सम	---	अधिशत्रु	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	अधिशत्रु	अतिमित्र
बुध	अतिमित्र	सम	शत्रु	---	शत्रु	अतिमित्र	शत्रु	मित्र	मित्र
गुरु	सम	सम	अतिमित्र	अधिशत्रु	---	अधिशत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु
शुक्र	अधिशत्रु	सम	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	---	अतिमित्र	सम	अतिमित्र
शनि	सम	सम	अधिशत्रु	सम	शत्रु	अतिमित्र	---	अतिमित्र	सम
राहु	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु	मित्र	मित्र	सम	अतिमित्र	---	अधिशत्रु
केतु	सम	अधिशत्रु	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	अतिमित्र	सम	अधिशत्रु	---

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	48	28	13	9	36	59	26
सप्तवर्गज बल	86	105	64	94	83	92	167
ओजयुग्मक बल	15	30	30	15	15	15	30
केन्द्र बल	60	30	60	15	60	60	15
द्रेष्काण बल	15	15	0	15	0	15	0
कुल स्थान बल	225	208	166	148	193	241	238
कुल दिग्बल	3	44	32	36	34	57	19
नतोन्नत बल	3	57	57	60	3	3	57
पक्ष बल	47	95	47	47	13	13	47
त्रिभाग बल	0	0	0	0	60	60	0
अब्द बल	0	0	0	15	0	0	0
मास बल	0	0	30	0	0	0	0
वार बल	0	0	0	0	0	45	0
होरा बल	0	0	0	0	60	0	0
अयन बल	59	49	59	40	24	40	47
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	109	201	194	162	160	160	152
कुल चेष्टाबल	0	0	41	49	56	55	11
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	2	-2	-7	-4	-42	4	-2
कुल षट्बल	399	503	442	417	435	559	425
रूप षट्बल	6.7	8.4	7.4	7.0	7.3	9.3	7.1
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	1.3	1.4	1.5	1.0	1.1	1.7	1.4
संबंधित पद	5	4	2	7	6	1	3

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	37.97	18.88	22.54	21.37	44.71	57.10	16.90
कष्ट फल	18.67	38.83	30.35	23.84	10.15	1.91	40.76

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	435	425	425	435	442	559	417	503	399	417	559	442
भावदिग्बल	60	20	40	60	10	20	0	20	50	30	40	10
भावदृष्टि बल	34	24	23	47	33	48	70	6	20	14	11	13
कुल भाव बल	529	469	489	542	486	628	487	529	470	461	610	465
रूप भाव बल	8.8	7.8	8.1	9.0	8.1	10.5	8.1	8.8	7.8	7.7	10.2	7.8
संबंधित पद	4	10	6	3	8	1	7	5	9	12	2	11

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

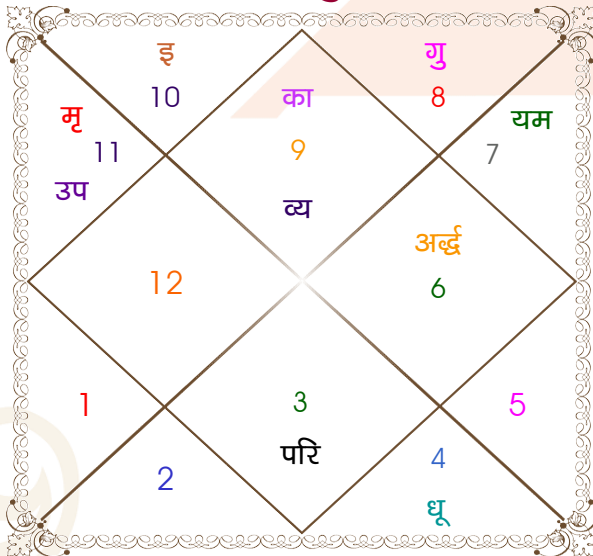
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

उपग्रह एवं आरुढ़

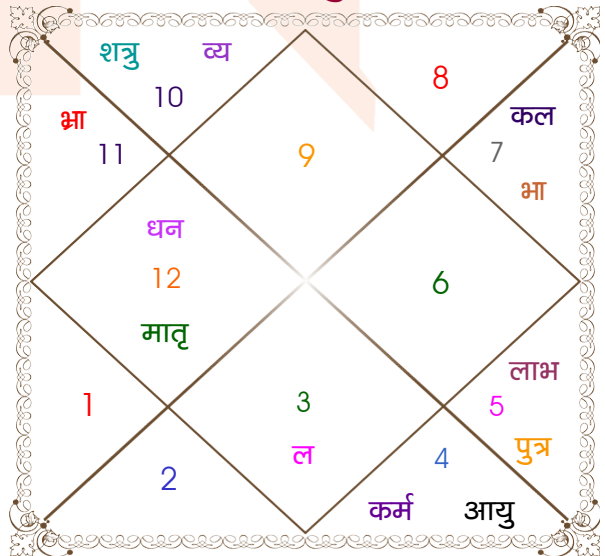
उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	धनु	05:47:15	--	--	मूल	2	19
गुलिक	गु	वृश्चि	29:04:55	--	--	ज्येष्ठा	4	18
काल	का	धनु	19:52:25	--	--	पूर्वाषाढा	2	20
मृत्यु	मृ	कुंभ	08:20:08	--	--	शतभिषा	1	24
यमघंटक	यम	तुला	18:59:45	--	--	स्वाति	4	15
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	कन्या	28:19:09	--	--	चित्रा	2	14
धूम	धू	कर्क	18:46:20	--	--	आश्लेषा	1	9
व्यतिपात	व्य	धनु	11:13:40	--	--	मूल	4	19
परिवेश	परि	मिथु	11:13:40	उच्च	--	आर्द्रा	2	6
इन्द्रचाप	इ	मक	18:46:20	--	--	श्रवण	3	22
उपकेतु	उप	कुंभ	05:26:20	उच्च	--	धनिष्ठा	4	23

प्राणपद	:	मक	09:58:17	कारकांश लग्न	:	कन्या	07:22:56
भाव लग्न	:	धनु	14:39:56	होरा लग्न	:	कन्या	23:53:31
घटी लग्न	:	मक	21:34:19	वर्णद लग्न	:	कुंभ	00:19:14

उपग्रह कुंडली



आरुढ़ कुंडली



SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	मी	मे	वृ	मि	क	सि	क	तु	वृ	ध	म	कुं	कुल
शनि	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	8
गुरु	0	0	1	0	1	0	0	0	0	0	1	1	4
मंगल	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	0	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	3
बुध	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	0	7
चंद्र	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	0	0	4
लग्न	1	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	6
कुल	5	3	3	4	3	2	5	5	5	4	4	5	48

चंद्र का अष्टकवर्ग

	मी	मे	वृ	मि	क	सि	क	तु	वृ	ध	म	कुं	कुल
शनि	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	4
गुरु	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	7
मंगल	0	0	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	6
सूर्य	1	0	0	0	1	0	0	1	1	1	0	1	6
शुक्र	1	0	0	0	1	1	1	0	1	0	1	1	7
बुध	0	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	0	4
कुल	3	2	3	4	4	5	5	3	6	5	4	5	49

मंगल का अष्टकवर्ग

	मि	क	सि	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	कुल
शनि	0	0	1	1	1	1	1	0	1	0	0	1	7
गुरु	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	0	1	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	5
शुक्र	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	0	0	4
बुध	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	4
चंद्र	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	3
लग्न	0	0	0	1	1	0	1	0	1	0	0	1	5
कुल	4	4	4	3	3	2	5	3	4	2	2	3	39

बुध का अष्टकवर्ग

	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सि	क	तु	वृ	ध	म	कुल
शनि	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
गुरु	1	0	1	0	0	1	1	0	0	0	0	0	4
मंगल	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	8
सूर्य	1	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	5
शुक्र	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	0	6
लग्न	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	1	1	7
कुल	6	4	5	3	4	6	4	3	5	5	4	5	54

गुरु का अष्टकवर्ग

	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सि	कुल
शनि	0	0	0	0	1	0	0	1	0	1	1	0	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	1	1	1	1	1	0	1	1	1	1	0	0	9
शुक्र	0	0	1	1	1	0	0	1	0	0	1	1	6
बुध	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	0	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	0	0	1	0	1	0	5
लग्न	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1	0	1	9
कुल	5	4	5	6	5	2	5	6	4	6	6	2	56

शुक्र का अष्टकवर्ग

	मी	मे	वृ	मि	क	सि	क	तु	वृ	ध	म	कुं	कुल
शनि	0	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	0	7
गुरु	0	1	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	5
मंगल	0	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	1	6
सूर्य	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	0	5
चंद्र	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	1	1	9
लग्न	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	1	1	8
कुल	3	7	5	4	4	3	3	5	4	5	5	4	52

शनि का अष्टकवर्ग

	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सि	क	तु	वृ	ध	म	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	4
मंगल	0	1	1	1	0	0	1	0	1	1	0	0	6
सूर्य	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	7
शुक्र	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	0	1	3
बुध	0	0	0	0	0	1	0	1	1	1	1	1	6
चंद्र	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1	0	0	3
लग्न	1	1	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	6
कुल	3	4	3	2	3	3	3	3	4	3	4	4	39

लग्न का अष्टकवर्ग

	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सि	क	तु	वृ	कुल
शनि	1	0	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	6
गुरु	1	1	1	1	0	1	1	1	0	1	1	0	9
मंगल	0	0	0	1	1	0	1	0	1	0	0	1	5
सूर्य	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	0	6
शुक्र	0	0	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	7
बुध	1	0	1	1	0	1	0	1	0	1	0	1	7
चंद्र	1	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	5	2	5	5	3	6	5	4	2	3	4	5	49

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	क	सि	कं	बु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	3	2	3	3	3	3	4	3	4	4	3	4	39
गुरु	6	4	6	6	2	5	4	5	6	5	2	5	56
मंगल	2	3	4	4	4	3	3	2	5	3	4	2	39
सूर्य	3	3	4	3	2	5	5	5	4	4	5	5	48
शुक्र	7	5	4	4	3	3	5	4	5	5	4	3	52
बुध	5	3	4	6	4	3	5	5	4	5	6	4	54
चंद्र	4	4	5	5	3	6	5	4	5	3	2	3	49
बिन्दु	30	24	30	31	21	28	31	28	33	29	26	26	337
रेखा	26	32	26	25	35	28	25	28	23	27	30	30	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	क	सि	कं	बु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	0	0	0	0	1	1	0	1	2	0	1	6
गुरु	4	0	4	1	0	1	2	0	4	1	0	0	17
मंगल	0	0	1	2	2	0	0	0	3	0	1	0	9
सूर्य	1	0	0	0	0	2	1	2	2	1	1	2	12
शुक्र	4	2	0	1	0	0	1	1	2	2	0	0	13
बुध	1	0	0	2	0	0	1	1	0	2	2	0	9
चंद्र	1	1	3	2	0	3	3	1	2	0	0	0	16
रेखा	11	3	8	8	2	7	9	5	14	8	4	3	82

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	क	सि	कं	बु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	0	0	0	0	1	1	0	0	2	0	1	5
गुरु	4	0	4	1	0	1	2	0	4	1	0	0	17
मंगल	0	0	1	2	2	0	0	0	3	0	1	0	9
सूर्य	1	0	0	0	0	2	1	1	0	1	1	2	9
शुक्र	3	1	0	1	0	0	1	1	2	2	0	0	11
बुध	0	0	0	2	0	0	1	0	0	2	2	0	7
चंद्र	0	1	3	2	0	3	2	0	2	0	0	0	13
रेखा	8	2	8	8	2	7	8	2	11	8	4	3	71

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	72	89	74	47	124	78	34
ग्रह पिंड	59	54	18	30	47	10	32
शोध्य पिंड	131	143	92	77	171	88	66

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

अष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग	सर्वाष्टकवर्ग	चंद्र का अष्टकवर्ग
मंगल का अष्टकवर्ग	बुध का अष्टकवर्ग	गुरु का अष्टकवर्ग
शुक्र का अष्टकवर्ग	शनि का अष्टकवर्ग	लग्न का अष्टकवर्ग

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : मंगल 4 वर्ष 9 मास 25 दिन

मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष
20/03/1993	13/01/1998	13/01/2016	13/01/2032	13/01/2051
13/01/1998	13/01/2016	13/01/2032	13/01/2051	13/01/2068
00/00/0000	राहु 25/09/2000	गुरु 03/03/2018	शनि 16/01/2035	बुध 11/06/2053
20/03/1993	गुरु 19/02/2003	शनि 13/09/2020	बुध 25/09/2037	केतु 08/06/2054
गुरु 05/06/1993	शनि 26/12/2005	बुध 20/12/2022	केतु 04/11/2038	शुक्र 08/04/2057
शनि 14/07/1994	बुध 14/07/2008	केतु 26/11/2023	शुक्र 04/01/2042	सूर्य 12/02/2058
बुध 12/07/1995	केतु 01/08/2009	शुक्र 27/07/2026	सूर्य 17/12/2042	चंद्र 15/07/2059
केतु 08/12/1995	शुक्र 01/08/2012	सूर्य 15/05/2027	चंद्र 17/07/2044	मंगल 11/07/2060
शुक्र 06/02/1997	सूर्य 26/06/2013	चंद्र 13/09/2028	मंगल 26/08/2045	राहु 28/01/2063
सूर्य 14/06/1997	चंद्र 26/12/2014	मंगल 20/08/2029	राहु 02/07/2048	गुरु 05/05/2065
चंद्र 13/01/1998	मंगल 13/01/2016	राहु 13/01/2032	गुरु 13/01/2051	शनि 13/01/2068

केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष
13/01/2068	13/01/2075	13/01/2095	14/01/2101	14/01/2111
13/01/2075	13/01/2095	14/01/2101	14/01/2111	00/00/0000
केतु 10/06/2068	शुक्र 15/05/2078	सूर्य 03/05/2095	चंद्र 14/11/2101	मंगल 12/06/2111
शुक्र 11/08/2069	सूर्य 15/05/2079	चंद्र 01/11/2095	मंगल 15/06/2102	राहु 30/06/2112
सूर्य 16/12/2069	चंद्र 13/01/2081	मंगल 08/03/2096	राहु 15/12/2103	गुरु 21/03/2113
चंद्र 17/07/2070	मंगल 15/03/2082	राहु 31/01/2097	गुरु 15/04/2105	00/00/0000
मंगल 14/12/2070	राहु 14/03/2085	गुरु 19/11/2097	शनि 14/11/2106	00/00/0000
राहु 01/01/2072	गुरु 13/11/2087	शनि 01/11/2098	बुध 15/04/2108	00/00/0000
गुरु 07/12/2072	शनि 13/01/2091	बुध 07/09/2099	केतु 14/11/2108	00/00/0000
शनि 16/01/2074	बुध 13/11/2093	केतु 13/01/2100	शुक्र 15/07/2110	00/00/0000
बुध 13/01/2075	केतु 13/01/2095	शुक्र 14/01/2101	सूर्य 14/01/2111	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल मंगल 4 वर्ष 9 मा 26 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - गुरु 20/03/1993 05/06/1993	मंगल - शनि 05/06/1993 14/07/1994	मंगल - बुध 14/07/1994 12/07/1995	मंगल - केतु 12/07/1995 08/12/1995	मंगल - शुक्र 08/12/1995 06/02/1997
00/00/0000	शनि 08/08/1993	बुध 04/09/1994	केतु 20/07/1995	शुक्र 17/02/1996
00/00/0000	बुध 04/10/1993	केतु 25/09/1994	शुक्र 14/08/1995	सूर्य 09/03/1996
00/00/0000	केतु 28/10/1993	शुक्र 24/11/1994	सूर्य 22/08/1995	चंद्र 14/04/1996
00/00/0000	शुक्र 03/01/1994	सूर्य 12/12/1994	चंद्र 03/09/1995	मंगल 08/05/1996
00/00/0000	सूर्य 23/01/1994	चंद्र 12/01/1995	मंगल 12/09/1995	राहु 11/07/1996
20/03/1993	चंद्र 26/02/1994	मंगल 02/02/1995	राहु 04/10/1995	गुरु 06/09/1996
चंद्र 26/03/1993	मंगल 22/03/1994	राहु 28/03/1995	गुरु 24/10/1995	शनि 13/11/1996
मंगल 14/04/1993	राहु 21/05/1994	गुरु 15/05/1995	शनि 17/11/1995	बुध 12/01/1997
राहु 05/06/1993	गुरु 14/07/1994	शनि 12/07/1995	बुध 08/12/1995	केतु 06/02/1997
मंगल - सूर्य 06/02/1997 14/06/1997	मंगल - चंद्र 14/06/1997 13/01/1998	राहु - राहु 13/01/1998 25/09/2000	राहु - गुरु 25/09/2000 19/02/2003	राहु - शनि 19/02/2003 26/12/2005
सूर्य 12/02/1997	चंद्र 02/07/1997	राहु 10/06/1998	गुरु 20/01/2001	शनि 02/08/2003
चंद्र 23/02/1997	मंगल 14/07/1997	गुरु 19/10/1998	शनि 08/06/2001	बुध 28/12/2003
मंगल 02/03/1997	राहु 15/08/1997	शनि 24/03/1999	बुध 10/10/2001	केतु 27/02/2004
राहु 22/03/1997	गुरु 12/09/1997	बुध 11/08/1999	केतु 30/11/2001	शुक्र 18/08/2004
गुरु 08/04/1997	शनि 16/10/1997	केतु 08/10/1999	शुक्र 25/04/2002	सूर्य 09/10/2004
शनि 28/04/1997	बुध 15/11/1997	शुक्र 20/03/2000	सूर्य 08/06/2002	चंद्र 04/01/2005
बुध 16/05/1997	केतु 28/11/1997	सूर्य 08/05/2000	चंद्र 20/08/2002	मंगल 06/03/2005
केतु 23/05/1997	शुक्र 02/01/1998	चंद्र 29/07/2000	मंगल 10/10/2002	राहु 09/08/2005
शुक्र 14/06/1997	सूर्य 13/01/1998	मंगल 25/09/2000	राहु 19/02/2003	गुरु 26/12/2005
राहु - बुध 26/12/2005 14/07/2008	राहु - केतु 14/07/2008 01/08/2009	राहु - शुक्र 01/08/2009 01/08/2012	राहु - सूर्य 01/08/2012 26/06/2013	राहु - चंद्र 26/06/2013 26/12/2014
बुध 07/05/2006	केतु 05/08/2008	शुक्र 31/01/2010	सूर्य 18/08/2012	चंद्र 11/08/2013
केतु 30/06/2006	शुक्र 08/10/2008	सूर्य 27/03/2010	चंद्र 14/09/2012	मंगल 12/09/2013
शुक्र 02/12/2006	सूर्य 27/10/2008	चंद्र 26/06/2010	मंगल 03/10/2012	राहु 03/12/2013
सूर्य 18/01/2007	चंद्र 28/11/2008	मंगल 29/08/2010	राहु 22/11/2012	गुरु 14/02/2014
चंद्र 05/04/2007	मंगल 21/12/2008	राहु 09/02/2011	गुरु 04/01/2013	शनि 12/05/2014
मंगल 30/05/2007	राहु 16/02/2009	गुरु 06/07/2011	शनि 25/02/2013	बुध 28/07/2014
राहु 16/10/2007	गुरु 08/04/2009	शनि 26/12/2011	बुध 13/04/2013	केतु 29/08/2014
गुरु 17/02/2008	शनि 08/06/2009	बुध 29/05/2012	केतु 02/05/2013	शुक्र 28/11/2014
शनि 14/07/2008	बुध 01/08/2009	केतु 01/08/2012	शुक्र 26/06/2013	सूर्य 26/12/2014

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - मंगल 26/12/2014 13/01/2016	गुरु - गुरु 13/01/2016 03/03/2018	गुरु - शनि 03/03/2018 13/09/2020	गुरु - बुध 13/09/2020 20/12/2022	गुरु - केतु 20/12/2022 26/11/2023
मंगल 17/01/2015	गुरु 26/04/2016	शनि 27/07/2018	बुध 08/01/2021	केतु 09/01/2023
राहु 16/03/2015	शनि 28/08/2016	बुध 05/12/2018	केतु 25/02/2021	शुक्र 06/03/2023
गुरु 06/05/2015	बुध 16/12/2016	केतु 28/01/2019	शुक्र 13/07/2021	सूर्य 23/03/2023
शनि 06/07/2015	केतु 30/01/2017	शुक्र 01/07/2019	सूर्य 24/08/2021	चंद्र 21/04/2023
बुध 29/08/2015	शुक्र 09/06/2017	सूर्य 17/08/2019	चंद्र 01/11/2021	मंगल 11/05/2023
केतु 20/09/2015	सूर्य 18/07/2017	चंद्र 02/11/2019	मंगल 19/12/2021	राहु 01/07/2023
शुक्र 23/11/2015	चंद्र 21/09/2017	मंगल 26/12/2019	राहु 22/04/2022	गुरु 15/08/2023
सूर्य 12/12/2015	मंगल 06/11/2017	राहु 12/05/2020	गुरु 11/08/2022	शनि 08/10/2023
चंद्र 13/01/2016	राहु 03/03/2018	गुरु 13/09/2020	शनि 20/12/2022	बुध 26/11/2023
गुरु - शुक्र 26/11/2023 27/07/2026	गुरु - सूर्य 27/07/2026 15/05/2027	गुरु - चंद्र 15/05/2027 13/09/2028	गुरु - मंगल 13/09/2028 20/08/2029	गुरु - राहु 20/08/2029 13/01/2032
शुक्र 06/05/2024	सूर्य 10/08/2026	चंद्र 24/06/2027	मंगल 03/10/2028	राहु 29/12/2029
सूर्य 24/06/2024	चंद्र 04/09/2026	मंगल 23/07/2027	राहु 23/11/2028	गुरु 25/04/2030
चंद्र 13/09/2024	मंगल 21/09/2026	राहु 04/10/2027	गुरु 07/01/2029	शनि 11/09/2030
मंगल 09/11/2024	राहु 03/11/2026	गुरु 08/12/2027	शनि 02/03/2029	बुध 13/01/2031
राहु 04/04/2025	गुरु 12/12/2026	शनि 23/02/2028	बुध 20/04/2029	केतु 05/03/2031
गुरु 12/08/2025	शनि 28/01/2027	बुध 02/05/2028	केतु 09/05/2029	शुक्र 29/07/2031
शनि 13/01/2026	बुध 10/03/2027	केतु 30/05/2028	शुक्र 05/07/2029	सूर्य 11/09/2031
बुध 31/05/2026	केतु 27/03/2027	शुक्र 19/08/2028	सूर्य 22/07/2029	चंद्र 23/11/2031
केतु 27/07/2026	शुक्र 15/05/2027	सूर्य 13/09/2028	चंद्र 20/08/2029	मंगल 13/01/2032
शनि - शनि 13/01/2032 16/01/2035	शनि - बुध 16/01/2035 25/09/2037	शनि - केतु 25/09/2037 04/11/2038	शनि - शुक्र 04/11/2038 04/01/2042	शनि - सूर्य 04/01/2042 17/12/2042
शनि 05/07/2032	बुध 04/06/2035	केतु 19/10/2037	शुक्र 16/05/2039	सूर्य 21/01/2042
बुध 08/12/2032	केतु 01/08/2035	शुक्र 25/12/2037	सूर्य 13/07/2039	चंद्र 19/02/2042
केतु 10/02/2033	शुक्र 12/01/2036	सूर्य 15/01/2038	चंद्र 17/10/2039	मंगल 11/03/2042
शुक्र 12/08/2033	सूर्य 01/03/2036	चंद्र 17/02/2038	मंगल 24/12/2039	राहु 02/05/2042
सूर्य 06/10/2033	चंद्र 22/05/2036	मंगल 13/03/2038	राहु 14/06/2040	गुरु 18/06/2042
चंद्र 06/01/2034	मंगल 18/07/2036	राहु 13/05/2038	गुरु 15/11/2040	शनि 11/08/2042
मंगल 11/03/2034	राहु 12/12/2036	गुरु 06/07/2038	शनि 17/05/2041	बुध 30/09/2042
राहु 23/08/2034	गुरु 23/04/2037	शनि 08/09/2038	बुध 28/10/2041	केतु 20/10/2042
गुरु 16/01/2035	शनि 25/09/2037	बुध 04/11/2038	केतु 04/01/2042	शुक्र 17/12/2042

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - चंद्र 17/12/2042 17/07/2044	शनि - मंगल 17/07/2044 26/08/2045	शनि - राहु 26/08/2045 02/07/2048	शनि - गुरु 02/07/2048 13/01/2051	बुध - बुध 13/01/2051 11/06/2053
चंद्र 03/02/2043 मंगल 09/03/2043 राहु 03/06/2043 गुरु 19/08/2043 शनि 19/11/2043 बुध 09/02/2044 केतु 14/03/2044 शुक्र 18/06/2044 सूर्य 17/07/2044	मंगल 10/08/2044 राहु 09/10/2044 गुरु 02/12/2044 शनि 04/02/2045 बुध 03/04/2045 केतु 26/04/2045 शुक्र 03/07/2045 सूर्य 23/07/2045 चंद्र 26/08/2045	राहु 29/01/2046 गुरु 17/06/2046 शनि 29/11/2046 बुध 25/04/2047 केतु 25/06/2047 शुक्र 15/12/2047 सूर्य 05/02/2048 चंद्र 02/05/2048 मंगल 02/07/2048	गुरु 02/11/2048 शनि 29/03/2049 बुध 07/08/2049 केतु 30/09/2049 शुक्र 03/03/2050 सूर्य 18/04/2050 चंद्र 04/07/2050 मंगल 27/08/2050 राहु 13/01/2051	बुध 18/05/2051 केतु 08/07/2051 शुक्र 02/12/2051 सूर्य 15/01/2052 चंद्र 28/03/2052 मंगल 18/05/2052 राहु 27/09/2052 गुरु 22/01/2053 शनि 11/06/2053
बुध - केतु 11/06/2053 08/06/2054	बुध - शुक्र 08/06/2054 08/04/2057	बुध - सूर्य 08/04/2057 12/02/2058	बुध - चंद्र 12/02/2058 15/07/2059	बुध - मंगल 15/07/2059 11/07/2060
केतु 02/07/2053 शुक्र 31/08/2053 सूर्य 18/09/2053 चंद्र 19/10/2053 मंगल 09/11/2053 राहु 02/01/2054 गुरु 19/02/2054 शनि 18/04/2054 बुध 08/06/2054	शुक्र 27/11/2054 सूर्य 18/01/2055 चंद्र 14/04/2055 मंगल 14/06/2055 राहु 16/11/2055 गुरु 02/04/2056 शनि 13/09/2056 बुध 06/02/2057 केतु 08/04/2057	सूर्य 23/04/2057 चंद्र 19/05/2057 मंगल 06/06/2057 राहु 23/07/2057 गुरु 02/09/2057 शनि 21/10/2057 बुध 04/12/2057 केतु 23/12/2057 शुक्र 12/02/2058	चंद्र 27/03/2058 मंगल 27/04/2058 राहु 13/07/2058 गुरु 20/09/2058 शनि 11/12/2058 बुध 22/02/2059 केतु 25/03/2059 शुक्र 19/06/2059 सूर्य 15/07/2059	मंगल 05/08/2059 राहु 28/09/2059 गुरु 15/11/2059 शनि 12/01/2060 बुध 03/03/2060 केतु 24/03/2060 शुक्र 24/05/2060 सूर्य 11/06/2060 चंद्र 11/07/2060
बुध - राहु 11/07/2060 28/01/2063	बुध - गुरु 28/01/2063 05/05/2065	बुध - शनि 05/05/2065 13/01/2068	केतु - केतु 13/01/2068 10/06/2068	केतु - शुक्र 10/06/2068 11/08/2069
राहु 28/11/2060 गुरु 01/04/2061 शनि 26/08/2061 बुध 05/01/2062 केतु 01/03/2062 शुक्र 03/08/2062 सूर्य 18/09/2062 चंद्र 05/12/2062 मंगल 28/01/2063	गुरु 19/05/2063 शनि 27/09/2063 बुध 22/01/2064 केतु 10/03/2064 शुक्र 26/07/2064 सूर्य 06/09/2064 चंद्र 14/11/2064 मंगल 01/01/2065 राहु 05/05/2065	शनि 08/10/2065 बुध 24/02/2066 केतु 22/04/2066 शुक्र 03/10/2066 सूर्य 21/11/2066 चंद्र 11/02/2067 मंगल 10/04/2067 राहु 04/09/2067 गुरु 13/01/2068	केतु 22/01/2068 शुक्र 16/02/2068 सूर्य 23/02/2068 चंद्र 07/03/2068 मंगल 15/03/2068 राहु 07/04/2068 गुरु 27/04/2068 शनि 20/05/2068 बुध 10/06/2068	शुक्र 20/08/2068 सूर्य 11/09/2068 चंद्र 16/10/2068 मंगल 10/11/2068 राहु 13/01/2069 गुरु 11/03/2069 शनि 17/05/2069 बुध 17/07/2069 केतु 11/08/2069

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - सूर्य	केतु - चंद्र	केतु - मंगल	केतु - राहु	केतु - गुरु
11/08/2069	16/12/2069	17/07/2070	14/12/2070	01/01/2072
16/12/2069	17/07/2070	14/12/2070	01/01/2072	07/12/2072
सूर्य 17/08/2069	चंद्र 03/01/2070	मंगल 26/07/2070	राहु 09/02/2071	गुरु 16/02/2072
चंद्र 28/08/2069	मंगल 16/01/2070	राहु 18/08/2070	गुरु 01/04/2071	शनि 10/04/2072
मंगल 04/09/2069	राहु 17/02/2070	गुरु 06/09/2070	शनि 01/06/2071	बुध 28/05/2072
राहु 23/09/2069	गुरु 17/03/2070	शनि 30/09/2070	बुध 25/07/2071	केतु 17/06/2072
गुरु 10/10/2069	शनि 20/04/2070	बुध 21/10/2070	केतु 17/08/2071	शुक्र 13/08/2072
शनि 31/10/2069	बुध 20/05/2070	केतु 30/10/2070	शुक्र 20/10/2071	सूर्य 30/08/2072
बुध 18/11/2069	केतु 01/06/2070	शुक्र 24/11/2070	सूर्य 08/11/2071	चंद्र 27/09/2072
केतु 25/11/2069	शुक्र 07/07/2070	सूर्य 01/12/2070	चंद्र 10/12/2071	मंगल 17/10/2072
शुक्र 16/12/2069	सूर्य 17/07/2070	चंद्र 14/12/2070	मंगल 01/01/2072	राहु 07/12/2072
केतु - शनि	केतु - बुध	शुक्र - शुक्र	शुक्र - सूर्य	शुक्र - चंद्र
07/12/2072	16/01/2074	13/01/2075	15/05/2078	15/05/2079
16/01/2074	13/01/2075	15/05/2078	15/05/2079	13/01/2081
शनि 09/02/2073	बुध 08/03/2074	शुक्र 04/08/2075	सूर्य 02/06/2078	चंद्र 05/07/2079
बुध 07/04/2073	केतु 29/03/2074	सूर्य 04/10/2075	चंद्र 02/07/2078	मंगल 09/08/2079
केतु 01/05/2073	शुक्र 29/05/2074	चंद्र 13/01/2076	मंगल 24/07/2078	राहु 08/11/2079
शुक्र 08/07/2073	सूर्य 16/06/2074	मंगल 24/03/2076	राहु 16/09/2078	गुरु 29/01/2080
सूर्य 28/07/2073	चंद्र 16/07/2074	राहु 23/09/2076	गुरु 04/11/2078	शनि 04/05/2080
चंद्र 31/08/2073	मंगल 06/08/2074	गुरु 04/03/2077	शनि 01/01/2079	बुध 29/07/2080
मंगल 23/09/2073	राहु 29/09/2074	शनि 13/09/2077	बुध 22/02/2079	केतु 03/09/2080
राहु 23/11/2073	गुरु 17/11/2074	बुध 05/03/2078	केतु 15/03/2079	शुक्र 13/12/2080
गुरु 16/01/2074	शनि 13/01/2075	केतु 15/05/2078	शुक्र 15/05/2079	सूर्य 13/01/2081
शुक्र - मंगल	शुक्र - राहु	शुक्र - गुरु	शुक्र - शनि	शुक्र - बुध
13/01/2081	15/03/2082	14/03/2085	13/11/2087	13/01/2091
15/03/2082	14/03/2085	13/11/2087	13/01/2091	13/11/2093
मंगल 06/02/2081	राहु 26/08/2082	गुरु 22/07/2085	शनि 15/05/2088	बुध 09/06/2091
राहु 11/04/2081	गुरु 19/01/2083	शनि 24/12/2085	बुध 25/10/2088	केतु 08/08/2091
गुरु 07/06/2081	शनि 12/07/2083	बुध 11/05/2086	केतु 01/01/2089	शुक्र 28/01/2092
शनि 14/08/2081	बुध 14/12/2083	केतु 06/07/2086	शुक्र 13/07/2089	सूर्य 19/03/2092
बुध 13/10/2081	केतु 16/02/2084	शुक्र 16/12/2086	सूर्य 09/09/2089	चंद्र 14/06/2092
केतु 07/11/2081	शुक्र 16/08/2084	सूर्य 02/02/2087	चंद्र 14/12/2089	मंगल 13/08/2092
शुक्र 17/01/2082	सूर्य 10/10/2084	चंद्र 25/04/2087	मंगल 19/02/2090	राहु 15/01/2093
सूर्य 07/02/2082	चंद्र 10/01/2085	मंगल 20/06/2087	राहु 12/08/2090	गुरु 02/06/2093
चंद्र 15/03/2082	मंगल 14/03/2085	राहु 13/11/2087	गुरु 13/01/2091	शनि 13/11/2093

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - केतु 13/11/2093 13/01/2095	सूर्य - सूर्य 13/01/2095 03/05/2095	सूर्य - चंद्र 03/05/2095 01/11/2095	सूर्य - मंगल 01/11/2095 08/03/2096	सूर्य - राहु 08/03/2096 31/01/2097
केतु 08/12/2093 शुक्र 17/02/2094 सूर्य 10/03/2094 चंद्र 15/04/2094 मंगल 09/05/2094 राहु 12/07/2094 गुरु 07/09/2094 शनि 14/11/2094 बुध 13/01/2095	सूर्य 19/01/2095 चंद्र 28/01/2095 मंगल 03/02/2095 राहु 20/02/2095 गुरु 06/03/2095 शनि 23/03/2095 बुध 08/04/2095 केतु 14/04/2095 शुक्र 03/05/2095	चंद्र 18/05/2095 मंगल 29/05/2095 राहु 25/06/2095 गुरु 19/07/2095 शनि 17/08/2095 बुध 12/09/2095 केतु 23/09/2095 शुक्र 23/10/2095 सूर्य 01/11/2095	मंगल 09/11/2095 राहु 28/11/2095 गुरु 15/12/2095 शनि 04/01/2096 बुध 22/01/2096 केतु 30/01/2096 शुक्र 20/02/2096 सूर्य 26/02/2096 चंद्र 08/03/2096	राहु 26/04/2096 गुरु 09/06/2096 शनि 31/07/2096 बुध 16/09/2096 केतु 05/10/2096 शुक्र 29/11/2096 सूर्य 15/12/2096 चंद्र 12/01/2097 मंगल 31/01/2097
सूर्य - गुरु 31/01/2097 19/11/2097	सूर्य - शनि 19/11/2097 01/11/2098	सूर्य - बुध 01/11/2098 07/09/2099	सूर्य - केतु 07/09/2099 13/01/2100	सूर्य - शुक्र 13/01/2100 14/01/2101
गुरु 11/03/2097 शनि 26/04/2097 बुध 06/06/2097 केतु 23/06/2097 शुक्र 11/08/2097 सूर्य 26/08/2097 चंद्र 19/09/2097 मंगल 06/10/2097 राहु 19/11/2097	शनि 13/01/2098 बुध 03/03/2098 केतु 23/03/2098 शुक्र 20/05/2098 सूर्य 07/06/2098 चंद्र 05/07/2098 मंगल 26/07/2098 राहु 16/09/2098 गुरु 01/11/2098	बुध 15/12/2098 केतु 02/01/2099 शुक्र 23/02/2099 सूर्य 10/03/2099 चंद्र 05/04/2099 मंगल 23/04/2099 राहु 09/06/2099 गुरु 20/07/2099 शनि 07/09/2099	केतु 15/09/2099 शुक्र 06/10/2099 सूर्य 13/10/2099 चंद्र 23/10/2099 मंगल 31/10/2099 राहु 19/11/2099 गुरु 06/12/2099 शनि 26/12/2099 बुध 13/01/2100	शुक्र 15/03/2100 सूर्य 02/04/2100 चंद्र 03/05/2100 मंगल 24/05/2100 राहु 18/07/2100 गुरु 05/09/2100 शनि 02/11/2100 बुध 23/12/2100 केतु 14/01/2101
चंद्र - चंद्र 14/01/2101 14/11/2101	चंद्र - मंगल 14/11/2101 15/06/2102	चंद्र - राहु 15/06/2102 15/12/2103	चंद्र - गुरु 15/12/2103 15/04/2105	चंद्र - शनि 15/04/2105 14/11/2106
चंद्र 08/02/2101 मंगल 26/02/2101 राहु 12/04/2101 गुरु 23/05/2101 शनि 10/07/2101 बुध 22/08/2101 केतु 09/09/2101 शुक्र 30/10/2101 सूर्य 14/11/2101	मंगल 26/11/2101 राहु 28/12/2101 गुरु 26/01/2102 शनि 28/02/2102 बुध 31/03/2102 केतु 12/04/2102 शुक्र 18/05/2102 सूर्य 28/05/2102 चंद्र 15/06/2102	राहु 05/09/2102 गुरु 17/11/2102 शनि 12/02/2103 बुध 01/05/2103 केतु 02/06/2103 शुक्र 01/09/2103 सूर्य 28/09/2103 चंद्र 13/11/2103 मंगल 15/12/2103	गुरु 18/02/2104 शनि 05/05/2104 बुध 13/07/2104 केतु 10/08/2104 शुक्र 30/10/2104 सूर्य 24/11/2104 चंद्र 03/01/2105 मंगल 01/02/2105 राहु 15/04/2105	शनि 15/07/2105 बुध 05/10/2105 केतु 08/11/2105 शुक्र 12/02/2106 सूर्य 13/03/2106 चंद्र 01/05/2106 मंगल 03/06/2106 राहु 29/08/2106 गुरु 14/11/2106

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

गुरु - शुक्र - शनि	गुरु - शुक्र - बुध	गुरु - शुक्र - केतु	गुरु - सूर्य - सूर्य
12/08/2025 02:27	13/01/2026 07:39	31/05/2026 07:15	27/07/2026 02:51
13/01/2026 07:39	31/05/2026 07:15	27/07/2026 02:51	10/08/2026 17:30
शनि 05/09/2025 12:29	बुध 01/02/2026 20:48	केतु 03/06/2026 14:48	सूर्य 27/07/2026 20:23
बुध 27/09/2025 08:49	केतु 09/02/2026 21:59	शुक्र 13/06/2026 02:04	चंद्र 29/07/2026 01:37
केतु 06/10/2025 08:43	शुक्र 04/03/2026 21:55	सूर्य 15/06/2026 22:15	मंगल 29/07/2026 22:04
शुक्र 01/11/2025 01:35	सूर्य 11/03/2026 19:29	चंद्र 20/06/2026 15:53	राहु 01/08/2026 02:40
सूर्य 08/11/2025 18:39	चंद्र 23/03/2026 07:27	मंगल 23/06/2026 23:25	गुरु 03/08/2026 01:25
चंद्र 21/11/2025 15:05	मंगल 31/03/2026 08:38	राहु 02/07/2026 11:58	शनि 05/08/2026 08:56
मंगल 30/11/2025 14:59	राहु 21/04/2026 01:22	गुरु 10/07/2026 01:47	बुध 07/08/2026 10:36
राहु 23/12/2025 18:10	गुरु 09/05/2026 10:55	शनि 19/07/2026 01:41	केतु 08/08/2026 07:03
गुरु 13/01/2026 07:39	शनि 31/05/2026 07:15	बुध 27/07/2026 02:51	शुक्र 10/08/2026 17:30
गुरु - सूर्य - चंद्र	गुरु - सूर्य - मंगल	गुरु - सूर्य - राहु	गुरु - सूर्य - गुरु
10/08/2026 17:30	04/09/2026 01:54	21/09/2026 02:59	03/11/2026 22:54
04/09/2026 01:54	21/09/2026 02:59	03/11/2026 22:54	12/12/2026 21:56
चंद्र 12/08/2026 18:12	मंगल 05/09/2026 01:46	राहु 27/09/2026 16:46	गुरु 09/11/2026 03:34
मंगल 14/08/2026 04:17	राहु 07/09/2026 15:07	गुरु 03/10/2026 13:01	शनि 15/11/2026 07:37
राहु 17/08/2026 19:57	गुरु 09/09/2026 21:40	शनि 10/10/2026 11:35	बुध 20/11/2026 20:05
गुरु 21/08/2026 01:52	शनि 12/09/2026 14:26	बुध 16/10/2026 16:36	केतु 23/11/2026 02:38
शनि 24/08/2026 22:24	बुध 15/09/2026 00:23	केतु 19/10/2026 05:58	शुक्र 29/11/2026 14:28
बुध 28/08/2026 09:11	केतु 16/09/2026 00:15	शुक्र 26/10/2026 13:17	सूर्य 01/12/2026 13:13
केतु 29/08/2026 19:17	शुक्र 18/09/2026 20:26	सूर्य 28/10/2026 17:53	चंद्र 04/12/2026 19:08
शुक्र 02/09/2026 20:41	सूर्य 19/09/2026 16:53	चंद्र 01/11/2026 09:32	मंगल 07/12/2026 01:41
सूर्य 04/09/2026 01:54	चंद्र 21/09/2026 02:59	मंगल 03/11/2026 22:54	राहु 12/12/2026 21:56
गुरु - सूर्य - शनि	गुरु - सूर्य - बुध	गुरु - सूर्य - केतु	गुरु - सूर्य - शुक्र
12/12/2026 21:56	28/01/2027 04:18	10/03/2027 13:47	27/03/2027 14:51
28/01/2027 04:18	10/03/2027 13:47	27/03/2027 14:51	15/05/2027 07:39
शनि 20/12/2026 05:45	बुध 03/02/2027 01:02	केतु 11/03/2027 13:38	शुक्र 04/04/2027 17:39
बुध 26/12/2026 19:03	केतु 05/02/2027 11:00	शुक्र 14/03/2027 09:49	सूर्य 07/04/2027 04:06
केतु 29/12/2026 11:49	शुक्र 12/02/2027 08:34	सूर्य 15/03/2027 06:16	चंद्र 11/04/2027 05:30
शुक्र 06/01/2027 04:53	सूर्य 14/02/2027 10:15	चंद्र 16/03/2027 16:22	मंगल 14/04/2027 01:41
सूर्य 08/01/2027 12:24	चंद्र 17/02/2027 21:02	मंगल 17/03/2027 16:14	राहु 21/04/2027 09:00
चंद्र 12/01/2027 08:55	मंगल 20/02/2027 06:59	राहु 20/03/2027 05:35	गुरु 27/04/2027 20:50
मंगल 15/01/2027 01:42	राहु 26/02/2027 12:01	गुरु 22/03/2027 12:08	शनि 05/05/2027 13:54
राहु 22/01/2027 00:15	गुरु 04/03/2027 00:29	शनि 25/03/2027 04:54	बुध 12/05/2027 11:29
गुरु 28/01/2027 04:18	शनि 10/03/2027 13:47	बुध 27/03/2027 14:51	केतु 15/05/2027 07:39

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

गुरु - चंद्र - चंद्र	गुरु - चंद्र - मंगल	गुरु - चंद्र - राहु	गुरु - चंद्र - गुरु
15/05/2027 07:39	24/06/2027 21:39	23/07/2027 07:27	04/10/2027 08:39
24/06/2027 21:39	23/07/2027 07:27	04/10/2027 08:39	08/12/2027 07:03
चंद्र 18/05/2027 16:49	मंगल 26/06/2027 13:26	राहु 03/08/2027 06:26	गुरु 13/10/2027 00:27
मंगल 21/05/2027 01:38	राहु 30/06/2027 19:42	गुरु 13/08/2027 00:12	शनि 23/10/2027 07:11
राहु 27/05/2027 03:44	गुरु 04/07/2027 14:36	शनि 24/08/2027 13:47	बुध 01/11/2027 11:58
गुरु 01/06/2027 13:36	शनि 09/07/2027 02:33	बुध 03/09/2027 22:09	केतु 05/11/2027 06:52
शनि 07/06/2027 23:49	बुध 13/07/2027 03:09	केतु 08/09/2027 04:26	शुक्र 16/11/2027 02:36
बुध 13/06/2027 17:48	केतु 14/07/2027 18:55	शुक्र 20/09/2027 08:38	सूर्य 19/11/2027 08:31
केतु 16/06/2027 02:37	शुक्र 19/07/2027 12:33	सूर्य 24/09/2027 00:17	चंद्र 24/11/2027 18:23
शुक्र 22/06/2027 20:57	सूर्य 20/07/2027 22:38	चंद्र 30/09/2027 02:23	मंगल 28/11/2027 13:18
सूर्य 24/06/2027 21:39	चंद्र 23/07/2027 07:27	मंगल 04/10/2027 08:39	राहु 08/12/2027 07:03
गुरु - चंद्र - शनि	गुरु - चंद्र - बुध	गुरु - चंद्र - केतु	गुरु - चंद्र - शुक्र
08/12/2027 07:03	23/02/2028 09:39	02/05/2028 09:27	30/05/2028 19:15
23/02/2028 09:39	02/05/2028 09:27	30/05/2028 19:15	19/08/2028 23:15
शनि 20/12/2027 12:04	बुध 04/03/2028 04:14	केतु 04/05/2028 01:14	शुक्र 13/06/2028 07:55
बुध 31/12/2027 10:14	केतु 08/03/2028 04:49	शुक्र 08/05/2028 18:52	सूर्य 17/06/2028 09:19
केतु 04/01/2028 22:11	शुक्र 19/03/2028 16:47	सूर्य 10/05/2028 04:57	चंद्र 24/06/2028 03:39
शुक्र 17/01/2028 18:37	सूर्य 23/03/2028 03:34	चंद्र 12/05/2028 13:46	मंगल 28/06/2028 21:17
सूर्य 21/01/2028 15:09	चंद्र 28/03/2028 21:33	मंगल 14/05/2028 05:32	राहु 11/07/2028 01:29
चंद्र 28/01/2028 01:22	मंगल 01/04/2028 22:09	राहु 18/05/2028 11:49	गुरु 21/07/2028 21:13
मंगल 01/02/2028 13:19	राहु 12/04/2028 06:31	गुरु 22/05/2028 06:43	शनि 03/08/2028 17:39
राहु 13/02/2028 02:55	गुरु 21/04/2028 11:17	शनि 26/05/2028 18:40	बुध 15/08/2028 05:37
गुरु 23/02/2028 09:39	शनि 02/05/2028 09:27	बुध 30/05/2028 19:15	केतु 19/08/2028 23:15
गुरु - चंद्र - सूर्य	गुरु - मंगल - मंगल	गुरु - मंगल - राहु	गुरु - मंगल - गुरु
19/08/2028 23:15	13/09/2028 07:39	03/10/2028 04:55	23/11/2028 08:09
13/09/2028 07:39	03/10/2028 04:55	23/11/2028 08:09	07/01/2029 19:02
सूर्य 21/08/2028 04:29	मंगल 14/09/2028 11:30	राहु 10/10/2028 21:00	गुरु 29/11/2028 09:36
चंद्र 23/08/2028 05:11	राहु 17/09/2028 11:05	गुरु 17/10/2028 16:38	शनि 06/12/2028 14:20
मंगल 24/08/2028 15:16	गुरु 20/09/2028 02:43	शनि 25/10/2028 18:57	बुध 13/12/2028 00:52
राहु 28/08/2028 06:56	शनि 23/09/2028 06:17	बुध 02/11/2028 00:48	केतु 15/12/2028 16:30
गुरु 31/08/2028 12:51	बुध 26/09/2028 01:54	केतु 05/11/2028 00:24	शुक्र 23/12/2028 06:19
शनि 04/09/2028 09:23	केतु 27/09/2028 05:44	शुक्र 13/11/2028 12:56	सूर्य 25/12/2028 12:52
बुध 07/09/2028 20:10	शुक्र 30/09/2028 13:17	सूर्य 16/11/2028 02:18	चंद्र 29/12/2028 07:46
केतु 09/09/2028 06:15	सूर्य 01/10/2028 13:09	चंद्र 20/11/2028 08:34	मंगल 31/12/2028 23:24
शुक्र 13/09/2028 07:39	चंद्र 03/10/2028 04:55	मंगल 23/11/2028 08:09	राहु 07/01/2029 19:02

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : पिंगला 1 वर्ष 4 मास 15 दिन

पिंगला 2 वर्ष	धान्या 3 वर्ष	भामरी 4 वर्ष	भद्रिका 5 वर्ष	उल्का 6 वर्ष
20/03/1993	04/08/1994	04/08/1997	04/08/2001	04/08/2006
04/08/1994	04/08/1997	04/08/2001	04/08/2006	04/08/2012
00/00/0000	धांय 04/11/1994	भाम 14/01/1998	भद्रि 15/04/2002	उल्क 05/08/2007
00/00/0000	भाम 06/03/1995	भद्रि 04/08/1998	उल्क 13/02/2003	सिद्ध 04/10/2008
20/03/1993	भद्रि 05/08/1995	उल्क 05/04/1999	सिद्ध 03/02/2004	संक 03/02/2010
भद्रि 15/05/1993	उल्क 03/02/1996	सिद्ध 14/01/2000	संक 15/03/2005	मंग 05/04/2010
उल्क 14/09/1993	सिद्ध 03/09/1996	संक 04/12/2000	मंग 05/05/2005	पिंग 04/08/2010
सिद्ध 03/02/1994	संक 05/05/1997	मंग 13/01/2001	पिंग 14/08/2005	धांय 03/02/2011
संक 15/07/1994	मंग 04/06/1997	पिंग 04/04/2001	धांय 14/01/2006	भाम 05/10/2011
मंग 04/08/1994	पिंग 04/08/1997	धांय 04/08/2001	भाम 04/08/2006	भद्रि 04/08/2012

सिद्धा 7 वर्ष	संकटा 8 वर्ष	मंगला 1 वर्ष	पिंगला 2 वर्ष	धान्या 3 वर्ष
04/08/2012	05/08/2019	05/08/2027	04/08/2028	04/08/2030
05/08/2019	05/08/2027	04/08/2028	04/08/2030	04/08/2033
सिद्ध 14/12/2013	संक 15/05/2021	मंग 15/08/2027	पिंग 14/09/2028	धांय 04/11/2030
संक 05/07/2015	मंग 04/08/2021	पिंग 04/09/2027	धांय 13/11/2028	भाम 06/03/2031
मंग 14/09/2015	पिंग 14/01/2022	धांय 05/10/2027	भाम 03/02/2029	भद्रि 05/08/2031
पिंग 03/02/2016	धांय 14/09/2022	भाम 14/11/2027	भद्रि 15/05/2029	उल्क 03/02/2032
धांय 03/09/2016	भाम 05/08/2023	भद्रि 04/01/2028	उल्क 14/09/2029	सिद्ध 03/09/2032
भाम 14/06/2017	भद्रि 14/09/2024	उल्क 05/03/2028	सिद्ध 03/02/2030	संक 05/05/2033
भद्रि 05/06/2018	उल्क 14/01/2026	सिद्ध 15/05/2028	संक 15/07/2030	मंग 04/06/2033
उल्क 05/08/2019	सिद्ध 05/08/2027	संक 04/08/2028	मंग 04/08/2030	पिंग 04/08/2033

नोट :- योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :-

मंगला	: चन्द्र	पिंगला	: सूर्य	धान्या	: गुरु	भामरी	: मंगल
भद्रिका	: बुध	उल्का	: शनि	सिद्धा	: शुक्र	संकटा	: राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

योगिनी दशा

भ्रामरी 4 वर्ष 04/08/2033 04/08/2037	भद्रिका 5 वर्ष 04/08/2037 04/08/2042	उल्का 6 वर्ष 04/08/2042 04/08/2048	सिद्धा 7 वर्ष 04/08/2048 05/08/2055	संकटा 8 वर्ष 05/08/2055 05/08/2063
भ्राम 14/01/2034 भद्रि 04/08/2034 उल्क 05/04/2035 सिद्ध 14/01/2036 संक 04/12/2036 मंग 13/01/2037 पिंग 04/04/2037 धांय 04/08/2037	भद्रि 15/04/2038 उल्क 13/02/2039 सिद्ध 03/02/2040 संक 15/03/2041 मंग 05/05/2041 पिंग 14/08/2041 धांय 14/01/2042 भ्राम 04/08/2042	उल्क 05/08/2043 सिद्ध 04/10/2044 संक 03/02/2046 मंग 05/04/2046 पिंग 04/08/2046 धांय 03/02/2047 भ्राम 05/10/2047 भद्रि 04/08/2048	सिद्ध 14/12/2049 संक 05/07/2051 मंग 14/09/2051 पिंग 03/02/2052 धांय 03/09/2052 भ्राम 14/06/2053 भद्रि 05/06/2054 उल्क 05/08/2055	संक 15/05/2057 मंग 04/08/2057 पिंग 14/01/2058 धांय 14/09/2058 भ्राम 05/08/2059 भद्रि 14/09/2060 उल्क 14/01/2062 सिद्ध 05/08/2063
मंगला 1 वर्ष 05/08/2063 04/08/2064	पिंगला 2 वर्ष 04/08/2064 04/08/2066	धान्या 3 वर्ष 04/08/2066 04/08/2069	भ्रामरी 4 वर्ष 04/08/2069 04/08/2073	भद्रिका 5 वर्ष 04/08/2073 04/08/2078
मंग 15/08/2063 पिंग 04/09/2063 धांय 05/10/2063 भ्राम 14/11/2063 भद्रि 04/01/2064 उल्क 05/03/2064 सिद्ध 15/05/2064 संक 04/08/2064	पिंग 14/09/2064 धांय 13/11/2064 भ्राम 03/02/2065 भद्रि 15/05/2065 उल्क 14/09/2065 सिद्ध 03/02/2066 संक 15/07/2066 मंग 04/08/2066	धांय 04/11/2066 भ्राम 06/03/2067 भद्रि 05/08/2067 उल्क 03/02/2068 सिद्ध 03/09/2068 संक 05/05/2069 मंग 04/06/2069 पिंग 04/08/2069	भ्राम 14/01/2070 भद्रि 04/08/2070 उल्क 05/04/2071 सिद्ध 14/01/2072 संक 04/12/2072 मंग 13/01/2073 पिंग 04/04/2073 धांय 04/08/2073	भद्रि 15/04/2074 उल्क 13/02/2075 सिद्ध 03/02/2076 संक 15/03/2077 मंग 05/05/2077 पिंग 14/08/2077 धांय 14/01/2078 भ्राम 04/08/2078
उल्का 6 वर्ष 04/08/2078 04/08/2084	सिद्धा 7 वर्ष 04/08/2084 05/08/2091	संकटा 8 वर्ष 05/08/2091 05/08/2099	मंगला 1 वर्ष 05/08/2099 05/08/2100	पिंगला 2 वर्ष 05/08/2100 00/00/0000
उल्क 05/08/2079 सिद्ध 04/10/2080 संक 03/02/2082 मंग 05/04/2082 पिंग 04/08/2082 धांय 03/02/2083 भ्राम 05/10/2083 भद्रि 04/08/2084	सिद्ध 14/12/2085 संक 05/07/2087 मंग 14/09/2087 पिंग 03/02/2088 धांय 03/09/2088 भ्राम 14/06/2089 भद्रि 05/06/2090 उल्क 05/08/2091	संक 15/05/2093 मंग 04/08/2093 पिंग 14/01/2094 धांय 14/09/2094 भ्राम 05/08/2095 भद्रि 14/09/2096 उल्क 14/01/2098 सिद्ध 05/08/2099	मंग 15/08/2099 पिंग 04/09/2099 धांय 05/10/2099 भ्राम 14/11/2099 भद्रि 04/01/2100 उल्क 06/03/2100 सिद्ध 16/05/2100 संक 05/08/2100	पिंग 15/09/2100 धांय 14/11/2100 भ्राम 04/02/2101 भद्रि 21/03/2101 00/00/0000 00/00/0000 00/00/0000 00/00/0000

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	2
भाग्यांक	9
मित्र अंक	2, 7, 8, 9
शत्रु अंक	4, 5, 6
शुभ वर्ष	20, 29, 38, 47, 56
शुभ दिन	रवि, गुरु, मंगल
शुभ ग्रह	सूर्य, गुरु, मंगल
मित्र राशि	कन्या, तुला
मित्र लग्न	मीन, सिंह, तुला
अनुकूल देवता	नृसिंह
शुभ रत्न	पुखराज
शुभ उपरत्न	सुनहला, पीला हकीक
भाग्य रत्न	माणिक्य
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	पीत
शुभ दिशा	पूर्वोत्तर
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	हल्दी, पुस्तक, पीत पुष्प
दान अन्न	दाल चना
दान द्रव्य	घी

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

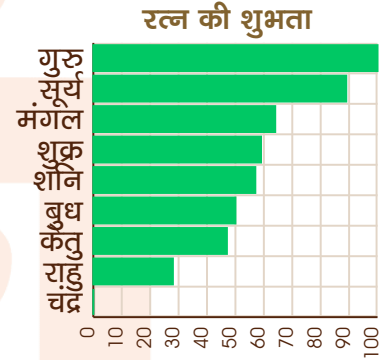
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पुखराज	गुरु	100%	व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य, सुख
माणिक्य	सूर्य	89%	सुख, भाग्योदय
मूंगा	मंगल	64%	दम्पति, सन्तति सुख, कम खर्च
हीरा	शुक्र	59%	सुख, शत्रु व रोग मुक्ति, धनार्जन
नीलम	शनि	57%	पराक्रम, धन
पन्ना	बुध	50%	पराक्रम, दम्पति, व्यावसायिक उन्नति
लहसुनिया	केतु	47%	शत्रु व रोग, ग्रह कलेश
गोमेद	राहु	28%	व्यय, दाम्पत्य कष्ट
मोती	चंद्र	0%	धन हानि, दुर्घटना



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
मंगल	13/01/1998	95%	12%	77%	25%	100%	59%	57%	3%	55%
राहु	13/01/2016	77%	0%	52%	50%	100%	66%	63%	52%	22%
गुरु	13/01/2032	95%	12%	70%	25%	100%	44%	57%	28%	47%
शनि	13/01/2051	77%	0%	52%	56%	100%	66%	69%	41%	22%
बुध	13/01/2068	95%	0%	64%	62%	100%	66%	57%	28%	47%
केतु	13/01/2075	77%	0%	70%	50%	100%	66%	38%	3%	61%
शुक्र	13/01/2095	77%	0%	64%	56%	100%	72%	63%	41%	55%
सूर्य	14/01/2101	100%	12%	70%	50%	100%	44%	38%	3%	22%
चंद्र	14/01/2111	95%	25%	64%	56%	100%	59%	57%	3%	22%

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत् ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते हैं। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते हैं। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ हैं तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते हैं अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते हैं।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते हैं। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुंडली और रत्न

आपके लिए पुखराज व माणिक्य रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

पुखराज आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

माणिक्य आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण करने से आपके भाग्य की वृद्धि होगी। रुके हुए कार्य सुगमता पूर्वक बनेंगे। मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभ यात्राएं होंगी। मानसिक विकार दूर होंगे। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए मूंगा, हीरा, नीलम एवं पन्ना रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

लहसुनिया व गोमेद रत्न आपके लिए नेष्ट हैं। अतः इन्हें न पहनना ही बेहतर है। यदि आप इन रत्नों को धारण करते हैं तो इनकी अनुकूलता का परिक्षण अवश्य कर लें। अनुकूलता होने पर ही इन्हें धारण करें, अन्यथा शीघ्र अति शीघ्र उतार दें। इन रत्नों के धारण करने से आपको मानसिक परेशानी, स्वास्थ्य में कमी या धन हानि हो सकती है।

मोती पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। इस रत्न का आप सर्वदा त्याग ही करें, क्योंकि किसी भी दशा या गोचर में इससे शुभ फल प्राप्त होने की आशा कम ही है। इस रत्न को धारण करने से सामाजिक, आर्थिक व स्वास्थ्य पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

विवरण निम्न प्रकार से है :-

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु दशम भाव में स्थित है। आपके लिए गुरु रत्न पुखराज धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करना आपके लिए शुभदायक रहेगा। यह रत्न आपको चरित्रवान और स्वतंत्र विचारक बनाएगा। इसके अतिरिक्त यह रत्न आपको विवेकी, न्यायी और सत्यवादी भी बनाएगा। पुखराज रत्न की शुभता आपको शास्त्रों का विधिवत ज्ञान होगा। पुखराज रत्न आपको उत्तम वाहनों का सुख देगा। भूमि सुख और भूमि के माध्यम से खूब लाभ देगा। रत्न प्रभाव से आप अपने माता-पिता का अत्यधिक आदर करने वाले बनेंगे। आप खूब धन कमाकर, ऐश्वर्यवान, सुखी और समृद्ध बनेंगे। आप सुंदर वस्त्र और आभूषणों से युक्त होंगे।

आपकी धनु लग्न की कुंडली में गुरु लग्नेश एवं चतुर्थेश है। गुरु आपके लिए विशेष शुभ ग्रह है अतः आप गुरु रत्न पुखराज धारण कर गुरु की पूर्ण शुभता प्राप्त कर सकते हैं। पुखराज रत्न धारण से आपको स्वास्थ्य बेहतर होगा। आपके रोगग्रस्त होने की संभावनाएं कम हो सकती हैं। पुखराज रत्न आपको प्रसन्नचित्त, विवेकी, विनम्र और सौम्य स्वभाव का स्वामी बनाएगा। रत्न प्रभाव से आप धर्म, दया, सेवा विषयों से जुड़ेंगे। पुखराज रत्न चतुर्थेश का रत्न होने के कारण आपको माता सुख, भूमि-भवन का सुख, संतान से पूर्ण सुख, विद्वान, गुणी, मनोवांछित जीवनसाथी, धर्मपरायण, धनी एवं यशस्वी बना सकता है।

इस रत्न को स्वर्ण धातु में जड़ाकर, गुरुवार के दिन प्रातःकाल में सभी प्रकार से शुद्ध होने के बाद रत्न को धूप, दीप दिखाकर तर्जनी अंगूली में धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करने के बाद ॐ वृं बृहस्पतये नमः का एक माला जाप ५ मुखी रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। जप पूर्ण करने के बाद किसी जरूरतमंद को गुरु ग्रह से संबंधित पदार्थों का दान अपने सामर्थ्यशक्ति के अनुसार करना चाहिए। गुरु ग्रह की वस्तुएं इस प्रकार हैं- चने की दाल, हल्दी, पीला वस्त्र। यह रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती का धारण किया जा सकता है।

पुखराज रत्न के साथ हीरा और गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल फलदायक नहीं रहता है। विशेष आवश्यकता होने पर आप इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। किसी कारणवश यदि पुखराज रत्न आप धारण न कर पाएं तो आप इसके उपरत्न सुनहला, पीला हकीक, पीताम्बरी रत्न एवं ५ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य चतुर्थ भाव में स्थित है। आपको सूर्य रत्न माणिक्य धारण करना चाहिए। माणिक्य रत्न आपकी सुख-समृद्धि को बढ़ायेगा। इस रत्न को धारण कर आप धन दौलत से परिपूर्ण होंगे। यह रत्न आपको शीघ्र ही लोकप्रियता देगा। पिता से संबंध मजबूत करेगा। भाईयों व बंधुओं के स्नेह का पात्र बनेंगे। प्रवास में अधिक रहना पड़ सकता है। मित्रवर्ग में सूर्य रत्न माणिक्य आपको विशेष अधिकार दिला सकता है। सूर्य रत्न आपको माणिक्य ऊंच पदवी, सामाजिक प्रतिष्ठा एवं सम्मानजनक स्थिति देगा।

आपकी धनु लग्न की कुंडली में सूर्य दशम भाव के स्वामी है। सूर्य के बेहतर फल

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

प्राप्त करने के लिए आप सूर्य रत्न माणिक्य धारण कर सकते हैं। माणिक्य रत्न आपका भाग्य रत्न है। यह रत्न आपको भाग्य का अनुकूल सहयोग देगा। माणिक्य रत्न धारण कर आप आत्मिक रूप से बली हो सकते हैं। यह रत्न आपको शक्तिशाली कर सकता है। आप धर्मपरायण की ओर उन्मुख होंगे। आपकी सुरुचि धार्मिक गतिविधियों की ओर हो सकती है। माणिक्य रत्न आपके वैवाहिक सुख के सुखों में वृद्धि करेगा। आपको व्यापार में उन्नति देगा।

यह रत्न अनामिका अंगूली, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में स्नानादि से निवृत्त होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ॐ घृणि सूर्याय नमः का कम से कम १ माला जाप करना चाहिए। तदपश्चात सूर्य वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रत्नी से लेकर ८ रत्नी तक का धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते हैं। आवश्यकता में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ हैं तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखरी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते हैं।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल सप्तम भाव में स्थित है। आपको मंगल रत्न मूंगा धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने से आपका वैवाहिक जीवन सुखमय बनाये रखने में सहयोग प्राप्त होगा। रत्न की शक्तियां आपकी मेहनत प्रवृत्ति का विस्तार करेंगी। क्रोध में कमी करने के लिए भी मूंगा रत्न धारण करना सही रहेगा। इस रत्न को धारण करने से आपकी वाणी की कठोरता में कमी होगी। व्यर्थ के व्यर्थों पर नियंत्रण होगा। आर्थिक पक्ष से मूंगा रत्न आपके लिए शुभ फलदायक सिद्ध होगा। आजीविका क्षेत्र में अपने नेतृत्व गुण का विकास करने के लिए आप मूंगा रत्न धारण करें।

आपकी धनु लग्न की कुंडली में मंगल पंचमेश एवं द्वादशेश है। मंगल रत्न मूंगा आपके लिए शुभ रत्न है। मूंगा रत्न धारण करने से नौकरी में बदलाव करना आपके लिए सहज हो सकता है। मूंगा रत्न आप सदाचारी, बुद्धिमान एवं विनम्र हो सकते हैं। रत्न आपको जीवनसाथी से लाभ, पिता की धार्मिक आस्था, पिता की विदेश यात्रा, कोर्ट-कचहरी के फैसलों में आपके अनुकूल फल प्राप्त करा सकता है। इस रत्न की शुभता आपको संतान से सुख, शयन सम्बन्धी परेशानियां एवं समझौते आपके पक्ष में हो सकते हैं।

मूंगा रत्न अनामिका अंगूली में, चांदी धातु में जड़वाकर मंगलवार को प्रातः काल में स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर इस रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर अपने ईष्ट देव का पूजन करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने के पश्चात मंगल मंत्र ॐ अं अंगारकाय नमः का १ माला जाप करना चाहिए। इसके पश्चात मंगल वस्तुएं जैसे - गेहूं, गुड़, तांबा, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मूंगा रत्न कम से कम ६ रत्नी

से लेकर अधिकतम ८ रत्नी तक का धारण करना शुभ रहता है।

मूंगा रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ हीरा, गोमेद एवं नीलम रत्न को धारण करना अनुकूल नहीं माना गया है। यदि आप इस रत्न को अंगूठी रूप में धारण न कर पाएं तो आप इसे लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते हैं। यह रत्न रजत धातु के अलावा स्वर्ण धातु में भी धारण किया जा सकता है। मूंगा रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में आप इस रत्न के उपरत्न लाल हकीक एवं ३ मुखी रुद्राक्ष भी आप धारण कर सकते हैं।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र चतुर्थ भाव में स्थित है। आपको शुक्र रत्न हीरा धारण करना चाहिए। रत्न आपको परोपकारी, व्यवहार कुशल, पराक्रमी और प्रसन्नचित्त रहने का स्वभाव देगा। हीरा रत्न प्रभाव से आप दूसरों का हित चाहने वाले, धार्मिक कार्यों में रुचि लेने वाले व्यक्ति बनेंगे। शुक्र रत्न हीरा आपको बुद्धि एवं विद्या दोनों से धनी करेगा। आप मातृ भक्त और मात सेवक बनेंगे। सभी प्रकार के भौतिक सुख साधनों से आप संपन्न रहेंगे। हीरे की शक्तियां अच्छा घर, वाहन, आभूषण, वस्त्र आदि सब प्राप्त करने में सहयोग करेंगी।

आपकी धनु लग्न की कुंडली में शुक्र एकादशेश एवं षष्ठेश है। शुक्र रत्न हीरा आपके आय क्षेत्रों को प्रशस्त करेगा। अपनी उच्चभिलाषाओं को प्राप्त करने के लिए भी आप यह हीरा रत्न धारण कर सकते हैं। हीरा रत्न आपके शत्रुओं में कमी कर सकता है। शत्रुओं को परास्त करने के लिए भी आप हीरा रत्न धारण कर सकते हैं। रत्न शुभता से आपके परिश्रम भाव में बढ़ोतरी हो सकती है। रत्न प्रभाव से आप रोग, ऋणों पर नियंत्रण रखने में सफल हो सकते हैं। शुक्र रत्न आपको प्रतियोगिताओं में सफलता दिला सकता है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ॐ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा १ रत्नी से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि तीसरे भाव में स्थित है। आपको शनि रत्न नीलम धारण करना चाहिए। नीलम रत्न आपके रोगों में कमी करेगा। आध्यात्म की ओर उन्मुख करेगा। यह रत्न आपको विद्वान, चतुर, विवेकी, शत्रुहंता बनायेगा। नीलम रत्न धारण करने से आप

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

बुद्धिमान, दयालु और न्यायकर्ता बनेंगे। शनि रत्न नीलम आपके भाग्य को प्रबल करेगा। सफलता के संघर्ष और कठोर परिश्रम में करेगा। भाईयों से संबंध मधुर करेगा। संतान सुख के योग बनायेगा।

आपकी धनु लग्न की कुंडली में शनि दूसरे भाव एवं तीसरे भाव के स्वामी है। शनि शुभता प्राप्ति के लिए आप शनि रत्न नीलम धारण कर सकते हैं। नीलम रत्न आपकी शरीर की अस्वस्थता को दूर करने का प्रयास कर सकता है। नीलम रत्न की शुभता से आपको धन व परिवार का सुख प्राप्त होता रहेगा। यह रत्न आपके पराक्रम भाव को बढ़ाएगा। मित्र बंधुओं का सहयोग पाने के लिए भी आप नीलम रत्न धारण कर सकते हैं। नीलम रत्न की शुभता से आपको कार्यक्षेत्र में अनुकूल परिणाम प्राप्त हो सकते हैं। यह रत्न सरकारी क्षेत्रों से जुड़े कार्यों के मध्य आने वाली बाधाओं में कमी कर सकता है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ॐ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती, अन्यथा 5-6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते हैं।

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध तीसरे भाव में स्थित है। आपको बुध रत्न पन्ना धारण करना चाहिए। पन्ना रत्न आपको व्यापारी सफलता देगा। व्यापारी वर्ग से मित्रवत संबंध स्थापित करेगा। व्यापारादि कार्यों रुचि आती है। आपको भाई-बंधुओं से लाभ प्राप्ति के संयोग बनेंगे। रत्न प्रभाव से शौर्य, पराक्रम और वीरता के स्थान पर बुद्धि बल का प्रयोग अधिक करेंगे। लेखन और कला के पक्ष से भी पन्ना रत्न अनुकूल फल देगा। यह रत्न आपको विचार एवं भाव अभिव्यक्ति की योग्यता देगा। स्मरणशक्ति बढ़ाने के लिये आप यह रत्न धारण कर सकते हैं।

आपकी धनु लग्न की कुंडली में बुध सप्तमेश एवं दशमेश है। आप बुध रत्न पन्ना धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न आपको बुद्धिमान और विनोदी प्रवृत्ति दे सकता है। यह रत्न आपको राज्य एवं आजीविका क्षेत्र में बौद्धिक योग्यता से सफलता प्राप्ति दे सकता है। कार्यक्षेत्र में उन्नति और लाभ देने के साथ साथ पन्ना रत्न आपको सहयोगियों से संबंध मधुर कर सकता है। पन्ना रत्न धारण कर आप ससुराल से धन प्राप्ति के योग बना सकता है। बुध रत्न पन्ने की शुभता आपको धन, यश भी दे सकती है।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत्त होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ॐ बुं बुधाय नमः का १ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न ३ रत्ती का कम से कम, अन्यथा ६ रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु छठे भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः केतु रत्न लहसुनिया पहनने पर आपके रोग ठीक होने में समय अधिक ले सकते हैं। माता से मतभेद की स्थिति यह रत्न बना सकता है। नैनिहाल पक्ष से आदर सम्मान की प्राप्ति कम हो सकती है। यह रत्न आपका स्वभाव झगडालू बना सकता है। रत्न प्रभाव से आप फिजूलखर्ची के आदी हो सकते हैं। आपको विवादों में सफलता पाने में कुछ अधिक समय लग सकता है। भूत-प्रेत जैसी बाधाओं से आपको कष्ट मिल सकते हैं। दांत का रोग अथवा होंठों से संबंधित कोई परेशानी हो सकती है। लहसुनिया रत्न रोगों को प्रभावी करेगा। ऋणों को बढ़ाएगा तथा शत्रुओं से कष्ट दे सकता है।

केतु वृष राशि में स्थित है व इसका स्वामी शुक्र चतुर्थ भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया धारण करने से आपकी माता को स्वास्थ्य संबंधी अनियमितताओं का सामना करना पड़ेगा। अत्यधिक भावुक प्रवृत्ति के कारण आपमें व्यवहार कुशलता की कमी होगी। यह रत्न आपको मानसिक चिन्ताओं से युक्त करेगा। आपके घर में अशांति का माहौल उत्पन्न हो सकता है। इस रत्न को धारण करने पर शिक्षा कार्यों में रुचि की कमी होगी। आपको अधिकतर समय घर से दूर रहना पड़ सकता है तथा यह रत्न आपके लिए प्रतिकूल रत्न होने के कारण आपकी भूमि एवं भवन योजनाएं मन्द गति से पूर्ण होंगी। धोखा देकर अपना कार्य निकालने का स्वभाव यह रत्न आपको देगा।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहू द्वादश भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः राहू रत्न गोमेद धारण करना आपके मन में भ्रम दे सकता है। रत्न प्रभाव से आपके सुख चैन में कमी हो सकती है। आपके दिमाग में अनेक भ्रान्तियां जन्म ले सकती हैं। उन्नतिशील होने के लिए आप अत्यधिक महत्वाकांक्षी हो सकते हैं। अनेक योजनाएं आपके मस्तिष्क में निर्मित हो सकती हैं। यह रत्न आपके दिमाग को अत्यधिक क्रियाशील बनाए रखेगा। गोमेद रत्न प्रभाव से आप बढ़ चढ़ कर बातें करने वाले हो सकते हैं। यह रत्न आपको अनिद्रा रोग दे सकता है। गोमेद रत्न आपको वैचारिक अस्थिरता दे सकता है। इस रत्न के प्रभाव से आपको पिता को सुख भी कम ही मिल पाएगा। कार्यों में अनिष्टता का

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

भाव प्रभावी हो सकता है।

राहु वृश्चिक राशि में स्थित है व इसका स्वामी मंगल सातवें भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न आपके वैवाहिक जीवन को कष्टमय बनाएगा। यह रत्न आपकी छवि व चरित्र को विवादास्पद बना सकता है। इस रत्न प्रतिकूलता से आपकी निष्ठा दांपत्य जीवन के प्रति कुछ कम होगी। रत्न प्रभाव से आपको उदर संबंधित रोग विशेषकर आंतों से जुड़े रोग हो सकते हैं। यह रत्न धारण करने पर आपके विवाह तय होने में भी विलम्ब की स्थितियां बन सकती हैं। यह रत्न आपको स्वतन्त्र व्यापार में हानि दिला सकता है तथा आपके लिए इस रत्न की शुभता के कारण प्रशासनिक एवं राजनैतिक जीवन में उतार-चढ़ाव के योग बन सकते हैं।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र द्वितीय भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः चंद्र का मोती रत्न आपको नवीन काम धंधों में प्रतिकूल फल दे सकता है। मोती रत्न प्रभाव से विषय वासना के प्रति आपकी रुचि अधिक हो सकती है। अपनी पसंद के अनुरूप स्वादिष्ट भोजन का अनुभव आपको करना पड़ सकता है। धन बचाना आपके लिए सरल नहीं हो पाएगा। रोजगार प्राप्ति और प्रारम्भिक शिक्षा में व्यवधान आ सकता है। रत्न की अनुकूलता प्राप्त न होने के कारण आपका आर्थिक पक्ष प्रभावित हो सकता है। पारिवारिक कुटुंब के संबंधों में उतार-चढ़ाव की स्थिति बन सकती है। वाणी दोष की स्थिति भी बन सकती है। वाणी में मधुरता की कमी भी आपको हो सकती है।

आपकी धनु लग्न की कुंडली में चंद्र अष्टम भाव के स्वामी है। अष्टमेश चंद्र का मोती रत्न धारण करना आपके लिए कष्टकारी हो सकता है। मोती रत्न आपके रोगों में वृद्धि एवं आयु में कमी दे सकता है। रत्न प्रभाव से आपको गहरे जल से कष्ट का भय हो सकता है। मोती रत्न आपको नकारात्मक विचारधारा के साथ मानसिक चिंताएं भी अधिक दे सकता है। इस रत्न को पहनने के बाद आप आर्थिक संकटों के कारण दरिद्रता की स्थिति में पहुंच सकते हैं। मोती रत्न की प्रतिकूलता आपको दुर्भाग्य और ससुराल पक्ष से संबंध खराब कर सकती है। यह रत्न आपके जीवन के सुखों में कमी कर दुःखों में वृद्धि कर सकता है। इस रत्न को धारण करने पर आपको जल के कारण होने वाले रोग हो सकते हैं।

दशानुसार रत्न विचार

गुरु

(13/01/2016 - 13/01/2032)

गुरु की दशा में आपका पुखराज व माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मूंगा व नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया, हीरा, गोमेद व पन्ना रत्न नेष्ट हैं और मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

हैं।

शनि
(13/01/2032 - 13/01/2051)

शनि की दशा में आपका पुखराज व माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम, हीरा, पन्ना व मूंगा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद रत्न नेष्ट हैं और लहसुनिया व मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

बुध
(13/01/2051 - 13/01/2068)

बुध की दशा में आपका पुखराज व माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा, मूंगा, पन्ना व नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया व गोमेद रत्न नेष्ट हैं और मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

केतु
(13/01/2068 - 13/01/2075)

केतु की दशा में आपका पुखराज व माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मूंगा, हीरा, लहसुनिया व पन्ना रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

नीलम रत्न नेष्ट हैं और गोमेद व मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

शुक्र
(13/01/2075 - 13/01/2095)

शुक्र की दशा में आपका पुखराज व माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा, मूंगा, नीलम, पन्ना व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद रत्न नेष्ट हैं और मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

सूर्य
(13/01/2095 - 14/01/2101)

सूर्य की दशा में आपका माणिक्य व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मूंगा व पन्ना रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

हीरा व नीलम रत्न नेष्ट हैं और लहसुनिया, मोती व गोमेद रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

चन्द्र
(14/01/2101 - 14/01/2111)

चन्द्र की दशा में आपका पुखराज व माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मूंगा, हीरा, नीलम व पन्ना रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती रत्न नेष्ट हैं और लहसुनिया व गोमेद रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - टोपाज

आपका जन्म धनु राशि के लग्न में हुआ है। इसका स्वामी गुरु होता है। गुरु सबसे अधिक महत्वपूर्ण ग्रह है क्योंकि यह ज्योतिष शास्त्र में सबसे शुभ ग्रह माना जाता है तथा गुरु को ज्योतिष में अमृत के समान माना जाता है। किसी भी जातक के लिये लग्न सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे जातक की आयुष्य, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, सुख, समृद्धि, स्वभाव, भौतिक संरचना तथा सुख का ज्ञान होता है। यदि किसी व्यक्ति का लग्न बलवान हो तो उस जातक को जीवन में सभी सुखों की प्राप्ति होते हुए अच्छी पद प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान की प्राप्ति होती है।

अतः धनु राशि के लग्न वाले जातकों को धनु राशि के स्वामी ग्रह गुरु को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। गुरु ग्रह के लिये टोपाज रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को उपर्युक्त सभी लाभ मिलेंगे अर्थात् जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे भी गुरु सलाहकार एवं धन का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को सभा में वाणीपटुता के कारण मार्गदर्शक के रूप में सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को घर के बुजुर्गों तथा गुरुओं का आशीर्वाद भी प्राप्त होता है। गुरु ग्रह ज्ञान एवं धन लाभ का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको लीवर या गुर्दे से संबंधित रोग हों तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा जिसको धन आगमन में व्यवधान हो रहे हों उनको यह रत्न अल्प प्रयास से धन प्राप्ति करवाता है।

टोपाज रत्न को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की तर्जनी अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि तर्जनी अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में गुरु की अंगुली मानी जाती है। टोपाज रत्न गुरु का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात् गुरुवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय प्रातःकाल गुरु की होरा में श्रेष्ठ होता है। गुरुवार के दिन सूर्योदय काल से एक घंटे तक का समय गुरु की होरा का होता है। टोपाज को यदि गुरुवार के साथ-साथ गुरु के नक्षत्र अर्थात् पुनर्वसु, विशाखा और पूर्वा भाद्रपद में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

टोपाज को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पट्टे पर पीले रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, गुरु के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की तर्जनी अंगुली में धारण करना चाहिए।

गुरु का मंत्र - ॐ वृं बृहस्पतये नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि गुरु से संबंधित पदार्थ जैसे चने की दाल, गुड़, सवा मीटर पीले कपड़े का दान करें तो टोपाज रत्न की अंगूठी धारण करना और भी अधिक

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन गुरु का 108 बार स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें और कैले की जड़ में जल दें तथा विष्णु सहस्रनाम का पाठ करें और उनकी उपासना करें तो यह टोपाज रत्न की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक गुरुवार को विष्णु जी की उपासना करें तथा विष्णु जी को गुड़ व चने की दाल का भोग लगायें तो यह और अधिक शुभकारी हो जाता है।

धनु लग्न वाले जातक यदि टोपाज रत्न की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन स्वस्थ जीवन का आनंद उठाते हुए पूर्ण मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त जीवन प्राप्त करते हैं।



SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते हैं। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते हैं, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहाँ आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापों का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरु ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यों में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुंडली और रुद्राक्ष

आपकी कुंडली धनु लग्न की हैं। आदर्शवादी होने के कारण आप उत्साही रहते हैं। छल-कपट की भावना आपमें नहीं होती और कभी इनके साथ ऐसा होने पर ये लोग काफी समय तक उस बारे में सोचते रहते हैं, तो इन्हें अपनी इस आदत का बदलने का प्रयास करना चाहिए। जीवन में आपके धन संयम/प्रबंधन (वर्तमान में वित्तीय प्रबंधक या सलाहकार) की कला से ओतप्रोत बने रह सकते हैं। आपमें दूरदर्शिता का गुण भी देखा जाता है जिस कारण इनके कार्यों में हानि की मात्रा में भी कमी आती है।

ईश्वरप्रिय होने के कारण गलत कार्यों से दूरी बनाये रखते हैं और कभी-कभी चिन्तित भी हो जाते हैं। आप हमेशा प्रसन्नचित्त अवस्था में रहने का प्रयास करते हैं। आप अपनी

बातों में गंभीरता लिये होते हैं। धनी, सम्मानित और समाज में प्रतिष्ठित होने की योग्यता रखते हैं। आप अच्छे सलाहकार साबित हो सकते हैं, परन्तु बिना मांगे किसी को सलाह देने से बचें अन्यथा आलोचना के पात्र बन सकते हैं। आपकी वित्त प्रबंधन / सलाह अच्छी होती है।

षष्ठ, अष्टम व द्वादश भाव दुष्ट व अशुभ स्थान हैं। अपनी कुंडली की शुभता में वृद्धि करने के लिए आपको छः, आठ व बारहवें भाव - भावेश को शुभता प्रदान करनी होगी। कुंडली के ये भाव आपको रोग, ऋण, शत्रु, बाधाएं, देने के साथ साथ दैहिक, सामाजिक, मानसिक, आर्थिक या पारिवारिक कष्ट दे सकते हैं। इन सभी विषयों के साथ साथ षष्ठ भाव प्रतियोगिता, संघर्ष तथा सौतेली माता का भी भाव है।

कुंडली में षष्ठ भाव का पीड़ित होना या इस भाव में अन्य ग्रहों का स्थित होना उपरोक्त सभी वस्तुओं में अशुभता लाता है। धन, मृत्यु का कारण व समय, अवनति तथा राज्यभंग लग्न से आठवां भाव अष्टम कहलाता है। इस भाव से आयु, बिना कमाया हुआ धन, मृत्यु का कारण व समय, अवनति तथा राज्यभंग की जानकारी प्राप्त होती है। अष्टम भाव की तरह द्वादश भाव में भी सभी ग्रह अनिष्ट करते हैं। द्वादश भाव भी त्रिक भाव है। यह भाव आपकी निद्रा, धन का निवेश, विवाह में विलम्ब, अधिकार का नाश, कैद, शरीर विकार तथा हानियों की जानकारी देता है।

6, 8, 12 भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता है। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं। व 6, 8, 12 भाव के स्वामी तथा इन भावों में स्थित ग्रह अपनी महादशा-अन्तर्दशा में अनिष्ट तथा अशुभ फल देते हैं।

आपके लग्न के लिए शुक्र षष्ठेश व एकादशेश है, आप की संतान विद्रोही हो सकती है, जीवन साथी से अनबन, मन में खिन्नता, व्यभिचारी तथा बन्धु विरोधी हो सकते हैं।

चन्द्र अष्टमेश हैं। आपके धनु लग्न में अष्टमेश चन्द्र है, चन्द्र की यह स्थिति आपको बचपन में कष्ट, पानी के दुष्प्रभाव से होने वाले रोगों के प्रभाव में शीघ्र आने की संभावना, यह योग धन व सम्मान की हानि का कारण बनता है।

मंगल द्वादशेश तथा पंचमेश होते हैं। व्यय अधिक, विद्या व बुद्धि से अल्प लाभ, संतान से न्यून सुख, भाई-बहनों से सामान्य सुख, सामान्य पराक्रमी, शत्रु से संघर्ष में सफल, जीवन साथी से कष्ट दे सकता है।

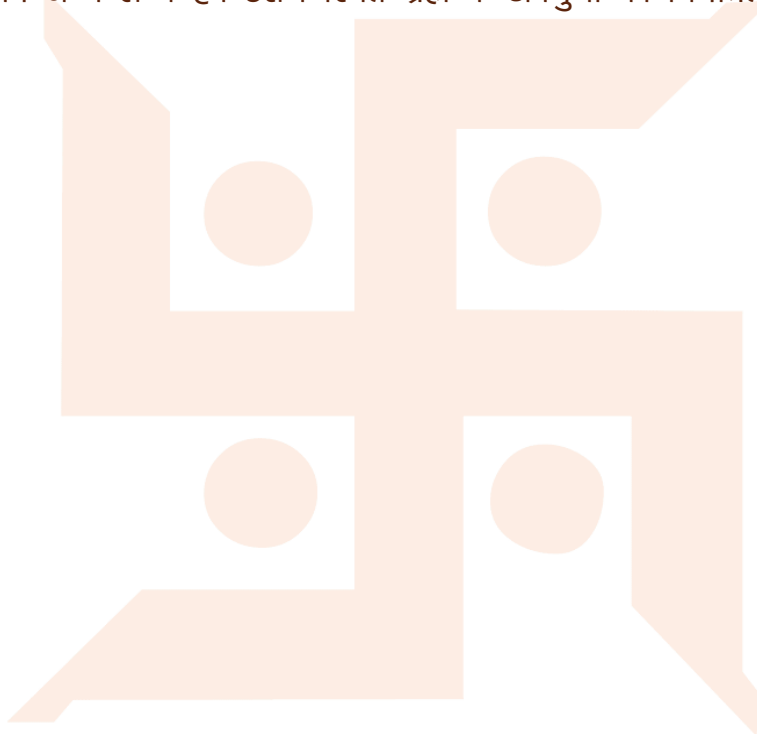
आपकी कुंडली के छठे भाव में केतु स्थित हैं, आप अपने शत्रुओं पर हावी रहेंगे, वात सम्बन्धी रोग शीघ्र अपने प्रभाव में ले सकते हैं, भूत-प्रेत बाधा से पीड़ित हो सकते हैं, अत्यधिक बोलने वाले, तथा ननिहाल पक्ष से अपमानित हो सकते हैं। आप अल्पकालीन रोगों से पीड़ित हो सकते हैं।

राहु आपके द्वादश भाव में स्थित है, राहु की यह स्थिति आपको अवनति का कारण बन सकती है, आप शत्रुहंता बनेंगे। आप नीच प्रवृत्तियुक्त, कपटी, कुटिल, नेत्ररोगी, असत्यभाषी,

दुराचारी, पत्नी की चिंता से ग्रस्त, दुष्ट संगती में धन का अपव्यय करने वाला हो सकते हैं। धानार्जन तथा व्यय दोनों ही अधिक होते हैं।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 2, 3, 6, 8, 9 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।



SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती तृतीय ढैया	20/03/1993-15/10/1993 10/11/1993-02/06/1995 10/08/1995-16/02/1996
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	17/04/1998-07/06/2000 -----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	01/11/2006-10/01/2007 16/07/2007-10/09/2009 -----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	26/01/2017-21/06/2017 26/10/2017-24/01/2020 -----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	24/01/2020-29/04/2022 12/07/2022-17/01/2023 -----

द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती तृतीय ढैया	29/04/2022-12/07/2022 17/01/2023-29/03/2025 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	03/06/2027-20/10/2027 23/02/2028-08/08/2029 05/10/2029-17/04/2030
अष्टम स्थानस्थ ढैया	27/08/2036-22/10/2038 05/04/2039-13/07/2039 -----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	08/12/2046-06/03/2049 10/07/2049-04/12/2049 -----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	06/03/2049-10/07/2049 04/12/2049-25/02/2052 -----

तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती तृतीय ढैया	25/02/2052-14/05/2054 02/09/2054-05/02/2055 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	07/04/2057-27/05/2059 -----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	13/10/2065-03/02/2066 03/07/2066-30/08/2068 -----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	16/01/2076-11/07/2076 11/10/2076-15/01/2079 -----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	15/01/2079-12/04/2081 03/08/2081-07/01/2082 -----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया
अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया

फल

शुभ
सम
सम
सम
शुभ

क्षेत्र

पराक्रम
सन्तति कष्ट
बदनामी
स्वास्थ्य
धन

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति सप्तम भाव में है। अतः आप एक मांगलिक कन्या हैं। चूंकि आपका मांगलिक दोष भंग नहीं हो रहा है अतः इसके प्रभाव से आपके पति का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा स्वभाव से ही उनमें उग्रता रहेगी जिससे यदा कदा परस्पर संबंधों में मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं लेकिन यह अल्प समय के लिए होंगे तथा दाम्पत्य जीवन पर इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। आप भी यदा कदा पित या गर्मी आदि से परेशानी की अनुभूति कर सकती हैं। मंगल के इस प्रभाव से आपके विवाह कार्य में विलम्ब होने की संभावना रहेगी तथा विवाह से पूर्व वार्ताओं में भी गतिरोध रहेगा लेकिन अन्त में आप को सफलता अवश्य प्राप्त होगी तथा सामान्य रूप से दाम्पत्य जीवन में प्रसन्नता बनी रहेगी।

सप्तम भावस्थ मंगल के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा पित जन्य दोषों से आपको परेशानी हो सकती है। दशम भाव पर मंगल की दृष्टि से कार्य क्षेत्र में आप परिश्रम एवं पराक्रम से इच्छित सफलता अर्जित करेंगी तथा समाज से भी न्यूनाधिक मान सम्मान की प्राप्ति होती रहेगी। लग्न पर दृष्टि के प्रभाव से स्वभाव में तेजस्विता का भाव रहेगा तथा यदा कदा मानसिक अशान्ति की भी अनुभूति हो सकती है। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि मध्यम रहेगी तथा यदा कदा पारिवारिक जनों के मध्य मतभेद उत्पन्न होंगे जिससे परिवार की शान्ति प्रभावित होगी लेकिन इसका दुष्प्रभाव अल्प मात्रा में ही रहेगा।

अतः अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखी एवं सम्पन्न बनाने के लिए आपको किसी ऐसे मांगलिक पुरुष से विवाह करना चाहिए जिससे आपका परस्पर मांगलिक दोष भंग हो सके। इसके लिए पुरुष की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि तथा राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। इससे आपके

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

सुख सौभाग्य एवं ऐश्वर्य में वृद्धि होगी तथा सुखी एवं प्रसन्नता पूर्वक आपका दाम्पत्य जीवन व्यतीत होगा। आपसी संबंधों में भी मधुरता तथा सहयोग का भाव विद्यमान रहेगा।



SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- नवम् भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में सूर्य के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें । रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है । संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों ।

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक 20 है। दो एवं शून्य का जोड़ दो आपका मूलांक होता है। मूलांक दो का स्वामी चन्द्र तथा शून्य शिव या ब्रह्म है। इनके संयुक्त प्रभाव से आप एक सौम्य, सुन्दर एवं कल्पनाशील महिला होंगी। कल्पना शक्ति आपकी श्रेष्ठ रहेगी। अधिकांश कार्य आप अपनी बुद्धि से करेंगी। शारीरिक कार्यों में आपकी रुचि कम होगी। चन्द्र प्रभाववश आप अपनी योजनाओं में काट-छांट करने की आदी रहेंगी। इससे आपका कार्य देर से पूर्ण होगा। आपकी कुछ योजनाएं अधर में ही लटक जायेंगी। जिनका आपको पछतावा होगा तथा मानसिक यातना भी होगी।

मन आपका चंचल होने से आप गतिशील रहना पसन्द करेंगी। इस स्वभाव से आप दूर-दूर की यात्राएं करेंगी तथा देश विदेश का भ्रमण करेंगी। एकाध यात्रा तो ऐसी होंगी जो आपका भाग्य बदल देंगी। आत्मविश्वास की आप में कमी रहेगी। इससे कई कार्य आपके समय पर पूर्ण नहीं होंगे। कभी-कभी आप निराशा में डूब जायेंगी और शून्य की भाँति आपको जीवन अंधकारमय लगेगा। लेकिन धैर्य एवं साहस से कुछ समय उपरान्त आप पुनः खोई हुई प्रतिष्ठा को प्राप्त कर लेंगी।

सामाजिक स्थिति आपकी अच्छी रहेगी। जनता के मध्य आप लोकप्रिय रहेंगी। इससे आपकी मानसिक स्थिति काफी संतुलित रहेगी। चन्द्र स्वभाव से आपको सर्दी-जुकाम, कफ इत्यादि के रोग यदा-कदा पीड़ित करेंगे। मानसिक ऊर्जा का आप अधिक प्रयोग करेंगी। इस कारण कभी-कभी सिर दर्द, मानसिक तनाव इत्यादि होंगे। वैसे मूलांक के प्रभाव से आप अपने जीवन में एक सफल, लोकप्रिय तथा हैसियत वाली महिला होंगी।

भाग्यांक नौ का स्वामी मंगल ग्रह को माना गया है। यह ग्रह मण्डल का सेनापति है। रक्त वर्ण का क्षत्रियोचित गुणों का है। इसके प्रभाव से आप स्वतंत्ररूप से रोजगार- व्यापार के क्षेत्र में तरक्की करेंगी। साहस भरे कार्यों से आपका भाग्योदय होगा। आप ऐसे क्षेत्र में अपना रोजगार प्राप्त करेंगी, जहाँ आपकी हुकूमत चलती रहे। मुखिया, नायक, अगुआ के रूप में कार्य करना आपको हमेशा अच्छा लगेगा।

रोजगार के क्षेत्र में आप अपनी स्वतंत्र विचारधारा के द्वारा महत्वपूर्ण उन्नति को प्राप्त करेंगी। यांत्रिक कार्यों में आपकी रुचि रहेगी। एकाधिकार पूर्ण कार्य क्षेत्र आपकी प्रथम पसन्द रहेंगे और आपकी कोशिश रहेगी कि आपने जो कार्यक्षेत्र अपने जीवन यापन हेतु चुना है उसमें किसी का भी हस्तक्षेप न हो। विरोध, बिना वजह का हस्तक्षेप आप बर्दास्त नहीं कर पायेंगी। यांत्रिकी कार्य, चिकित्सा, सेना, संगठन, सामाजिक क्रिया कलापों में आप गहरी रुचि प्रदर्शित करेंगी।

आपका मूलांक 2 है तथा आपका भाग्यांक 9 है। मूलांक 2 का स्वामी चंद्र तथा भाग्यांक 9 का स्वामी मंगल है तथा मूलांक 2 और भाग्यांक 9 के बीच सम संबंध है। चंद्र-मंगल के योग से आपको साहसिक कार्यों के द्वारा धन की प्राप्ति होगी। आप अपनी अच्छी कल्पना शक्ति एवं साहस के द्वारा अपना रोजगार-व्यापार चलाएंगी। आपको रोजगार के क्षेत्र में

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

काफी अच्छी सफलताएं प्राप्त होंगी। रोजगार में आप शीघ्र गति से उन्नति को प्राप्त करेंगी। जल एवं अग्नि क्षेत्र के रोजगार-व्यापार आपके अनुकूल रहेंगे। संघर्ष एवं प्रतिस्पर्धा आपके रोजगार-व्यापार में कम रहेगी, लेकिन खुशामदी एवं चापलूस व्यक्ति आपको कभी भी हानि पहुंचा सकते हैं। इनसे सावधान रहना आवश्यक है। आप ऐसा रोजगार पसंद करेंगी, जिसमें आपका एकाधिकार रहे। प्रतिस्पर्धा को आप सहन नहीं कर पाएंगी एवं आपकी निरंतर कोशिश रहेगी की आपके कार्यक्षेत्र में आपका प्रभुत्व बना रहे। जिन क्षेत्रों में अधिक साहस की आवश्यकता होगी, वे आपके अनुकूल रहेंगे।

आपका भाग्योदय 27 वर्ष की अवस्था से प्रारंभ हो कर 36 वर्ष की अवस्था पर विशेष उन्नति प्राप्त करेगा तथा 45 वर्ष की अवस्था पर आपका पूर्ण भाग्योदय होगा।

आपके मूलांक 2 की मित्रता 7 एवं 9 से है तथा भाग्यांक 9 की मित्रता 3 एवं 6 से है। अतः आपके जीवन में 2, 3, 6, 7, 9 के अंक विशेष महत्वपूर्ण रहेंगे। इनसे आपके जीवन में कुछ विशेष घटनाएं घटित होंगी।

आपके मूलांक की आपके भाग्यांक से मित्रता होने से मूलांक-भाग्यांक के फल आपके अनुरूप जाएंगे। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं इन्हीं अंकों की तारीखों, मास, ईस्वी सन् या आयु के वर्षों में घटित होंगी। जब कभी इन्हीं अंकों की तारीख, मास, या उपर्युक्त वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभ वार का भी मेल होता हो, तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगी, तो पाएंगी कि काफी घटनाएं इन्हीं अंकों के मास, वर्ष या दिन को घटित हुई होंगी।

अपने विगत जीवन में उपर्युक्त सभी अंकों का विश्लेषण करने के बाद जो अंक आपके अधिक अनुकूल जा रहे हों, उन्हीं अंकों के आधार पर भावी योजनाएं बनाना आपके लिए अधिक लाभप्रद रहेगा।

आपके लिए फरवरी, मार्च, जून, जुलाई, सितंबर के माह विशेष घटनाक्रम वाले होंगे तथा आप कोई भी नया कार्य ऐसे ही दिन प्रारंभ करें जब दिन, तारीख, मास तथा वर्ष आपके मूलांक तथा भाग्यांक से भी मेल स्थापित करें तथा एक ही समय पर सभी शुभ रहें।

इसी प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे वर्ष, जिनका योग 2, 3, 6, 7, 9 होता है, आपके लिए शुभ फलदायक रहेंगे।

2 . 11, 20, 29, 38, 47, 56, 65, 74

3 . 12, 21, 30, 39, 48, 57, 66, 75

6 . 15, 24, 33, 42, 51, 60, 69

7 . 16, 25, 34, 43, 52, 61, 70

9 . 18, 27, 36, 45, 54, 63, 72

उपर्युक्त वर्ष आपके जीवन में परिवर्तनकारी रहेंगे। इन वर्षों में कुछ प्रमुख घटनाएं

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

घटित होंगी, जो आपके जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार साबित होंगी।



SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

ग्रह फल

सूर्य

चतुर्थभाव में सूर्य हो तो जातक परमसुन्दर, कठोर, पितृधननाशक, चिन्तास्त, भाईयों से वैर करने वाला, गुप्तविद्या प्रिय एवं वाहन सुखहीन होता है।

मीन राशि में रवि हो तो जातक बुद्धिमान्, यशस्वी, व्यापारी, विवेकी ज्ञानी, योगी, प्रेमी, गुप्त विद्याओं में रुचि रखने वाला और स्वसुर से लाभन्वित होता है।

आपके जन्मकाल में सूर्य की स्थिति चतुर्थ भाव में है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य सामान्य रहेगा एवं समय समय पर वे शारीरिक व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव विद्यमान रहेगा। धन वैभव से वे प्रायः युक्त रहेंगे एवं जीवन में सर्वप्रकार से आपको सहयोग प्रदान करने के लिए यत्नशील रहेंगे। आप उनसे सामान्यतया धन सम्मान एवं वाहनादि भी प्राप्त करेंगी। इसके साथ ही वे व्यापार तथा अजीविका सम्बन्धी कार्यों में भी आपकी सहायता करेंगे।

आपके मन में उनके प्रति सामान्य श्रद्धा का भाव विद्यमान रहेगा एवं इच्छानुसार यदाकदा उनकी आज्ञा का अनुपालन भी करती रहेंगी। परन्तु आपके आपसी सम्बन्ध मधुर नहीं रहेंगे एवं परस्पर कई प्रकार के मतभेद विद्यमान रहेंगे फिर भी आप अपनी ओर से उन्हें कम से कम कष्टानुभूति के लिये सतत् प्रयत्नशील रहेंगी एवं अवसरानुकूल उनकी सहायता करने के लिए भी तत्पर रहेंगी।

चन्द्र

द्वितीयभाव में चन्द्रमा हो तो जातक परदेशवासी, भोगी, सुन्दर मधुरभाषी, भाग्यवान्, सहनशील एवं शान्तिप्रिय होता है।

मकर राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सदाचारी, पत्नी और सन्तान से प्रेम करने वाला, कवि, कोधी, लोभी, संगीतज्ञ, बात को शीघ्र समझने वाला एवं स्वार्थी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा द्वितीय भाव में स्थित है। अतः आपके शुभ प्रभाव से उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आपके प्रति उनकी पूर्ण वात्सल्य भावना रहेगी तथा जीवन में विद्या अध्ययन या धन संबंधी कार्यों में आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही उनसे आप अवसरानुकूल महत्वपूर्ण नैतिक शिक्षा भी ग्रहण करेंगी। इसके साथ ही वे आपको हार्दिक सहयोग देंगी। इस प्रकार आपके परस्पर संबंध भी अच्छे रहेंगे।

आप भी उनसे पूर्ण प्रभावित रहेंगी तथा उनके कथनानुसार ही अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करेंगी। साथ ही जीवन में उनकी सेवा तथा वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से आप उनकी सहायता करती रहेंगी। अतः परस्पर मधुर संबंध एवं विश्वास होने के कारण आप आनन्दपूर्वक जीवन में उनका स्नेह प्राप्त करती रहेंगी।

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

मंगल

सातवें भाव में मंगल हो तो जातक वातरोगी, राजभीरु, शीघ्रकोपी, कटुभाषी, स्त्रीदुःखी, धूर्त, मूर्ख, निर्धन, घातकी, धननाशक एवं ईर्ष्यालु होता है।

मिथुन राशि में मंगल हो तो जातक शिल्पकार, परदेशवासी, कार्यदक्ष, सुखी, जनहितैषी, विद्वान, बलवान शरीर, कवि, संगीतकार, नीतिज्ञ, कुशाबुद्धिवाला एवं चतुर होता है।

आपके जन्म समय में मंगल सप्तम भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा वे शारीरिक रूप से कष्टानुभूति भी प्राप्त करेंगे। आप उनकी प्रिय रहेंगी तथा आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे तथा जीवन में उनसे आप पूर्ण रूपेण सहयोग प्राप्त करेंगी एवं आपकी विवाह सम्पन्न कराने में भी उनका मुख्य योगदान रहेगा। साथ ही व्यापार संबंधी कार्यो एवं सुख दुःख में वे आपको अपनी ओर से पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करते रहेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह एवं विश्वास रहेगा एवं उनके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में आपका सहयोग रहेगा। साथ ही विषम परिस्थितियों में भी आप उनको आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इसमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अस्थायी होगी तथा शीघ्र संबंध सामान्य हो जाएंगे।

बुध

तृतीयभाव में बुध हो तो जातक सद्गुणी, कार्यदक्ष, परिश्रमी, मित्रप्रेमी, भीरु, धर्मात्मा, यात्राशील, व्यवसायी, चंचल, अल्पभ्रातृवान्, विलासी, सन्ततिवान्, कवि, सम्पादक, सामुद्रिकशास्त्र का ज्ञाता एवं लेखक होता है।

कुम्भ राशि में बुध हो तो जातक कुटुम्बहीन, दुःखी, अल्पधनी, झगड़ालू, प्रसिद्ध निर्बल स्वास्थ्य एवं प्रगति करने वाला होता है।

गुरु

दशमभाव में गुरु हो तो जातक सुकर्म करने वाला, प्रसिद्ध और सम्मानित प्रतिष्ठित पद पर आसीन, सदाचारी, पुण्यात्मा, ऐश्वर्यवान्, साधु, चतुर, न्यायी, प्रसन्न, ज्योतिषी, सत्यवादी, शत्रुहन्ता, राजमान्य, स्वतन्त्र विचारक, मातृपितृ भक्त, लाभवान्, धनी एवं भाग्यवान् होता है।

कन्या राशि में गुरु हो तो जातक सुखी, भोगी, विलासी, चित्रकला, निपुण, चंचल, उच्चाकांक्षी, स्वार्थी, भाग्यवान्, विद्वान एवं सन्तोषी होता है।

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

शुक्र

चतुर्थ भाव में शुक्र हो तो जातक बलवान्, परोपकारी, सुन्दर, व्यवहार कुशल, विलासी, दीर्घायु, पुत्रवान्, भाग्यवान्, सुखी, दानी, वाहनों का स्वामी एवं आस्तिक होता है।

मीन राशि में शुक्र हो तो जातक जौहरी, शिल्पज्ञ, जमीन्दार, अच्छा और हास परिहास का स्वभाव, विद्वान्, लोकप्रिय, शान्त, धनी, कार्यदक्ष, कृषिकर्म का मर्मज्ञ, शिष्ट और सभ्य सम्मानित एवं आराम तलब होता है।

शनि

तृतीय भाव में शनि हो तो जातक नीरोगी, विद्वान् योगी, मल्ल, शीघ्रकार्यकर्ता, सभाचतुर, चंचल, भाग्यवान्, शत्रुहन्ता, एवं विवेकी होता है।

कुम्भ राशि में शनि हो तो जातक नीतिदक्ष, कुशा बुद्धि, शक्तिशाली शत्रु, योग्य, सुखी, व्यसनी, नास्तिक एवं परिश्रमी होता है।

राहु

बारहवें भाव में राहु हो तो जातक विवेकहीन, कामी, चिन्ताशील, अतिव्ययी, सेवक, परिश्रमी, मूर्ख एवं मतिमन्द होता है।

वृश्चिक राशि में राहु हो तो जातक धूर्त, निर्धन, रोगी, धननाशक, अनैतिक चरित्र एवं धोखेबाज होता है।

केतु

षष्ठभावे में केतु हो तो जातक वात विकारी, झगड़ालू, अरिष्टनिवारक, सुखी, मितव्ययी, भूत प्रेतजनित रोगों से रोगी, दुर्घटना, दीर्घायु एवं धनी होता है।

वृष राशि में केतु हो तो जातक दुःखी, निरुद्यमी, आलसी, वाचाल एवं कामुक होता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में धनुराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। सामान्यतया धनु लग्न में उत्पन्न जातक स्वस्थ, बलवान एवं शांत स्वभाव के व्यक्ति होते हैं परन्तु यदाकदा ये अभिमान के भाव का प्रदर्शन करते हैं। धार्मिकता की भावना इनमें विद्यमान रहती है तथा अत्यंत ही बुद्धिमता से सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करते हैं तथा उनमें सफलता भी प्राप्त करते हैं फलतः जीवन में धनैश्वर्य एवं सुख संसाधनों को अर्जित करने में ये समर्थ रहते हैं। आदर्शवाद एवं अध्यात्मवाद के मध्य प्रवृत्त रहकर ये भौतिक सुखों का भी उपभोग करते हैं। अन्य जनों के ये विश्वास पात्र होते हैं परन्तु स्वयं दूसरों पर विश्वास कम ही करते हैं। दानशीलता की भी इनकी प्रवृत्ति होती है तथा सामाजिक मान प्रतिष्ठा तथा यश की प्राप्ति होती रहती है। धर्म, राजनीति, कानून तथा गणित या ज्योतिष आदि में इनकी रुचि रहती है तथा परिश्रमपूर्वक इन क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करते हैं। भौतिक प्रलोभनों की अपेक्षा इन्हें प्रेम से आसानी से वश में किया जा सकता है।

अतः इसके प्रभाव से आप स्वस्थ एवं बलशाली महिला होंगी तथा परिश्रम एवं बुद्धिमतापूर्वक अपने महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करके उनमें सफलता प्राप्त करेंगी। आप एक अध्ययनशील महिला होंगी अतः विभिन्न विषयों का आपको अच्छा ज्ञान होगा। कला के प्रति भी आपके रुचि रहेगी तथा जीवन में निहित उद्देश्य की प्राप्ति के लिए संघर्ष करेंगी। साथ ही अन्य जनों से कभी भी द्वेष या ईर्ष्या का भाव नहीं रहेंगी। शत्रु एवं प्रतिद्वन्द्वियों से भी आपका उदारतापूर्वक व्यवहार रहेगा। इसके अतिरिक्त अपनी व्यवहार कुशलता, बुद्धिमता तथा धैर्य से कार्यक्षेत्र में उन्नति करेंगी तथा सुखपूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगी। यदि आप नौकरी या कोई कार्य नहीं करती है तो उपरोक्त योग आपके पति पर घटित होंगे।

लग्न में लग्नेश बृहस्पति की राशि के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक रूप से भी प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगी। आपका व्यक्तित्व आकर्षक रहेगा तथा अन्य लोग आपसे प्रभावित रहेंगी। आप एक विदुषी महिला होंगी तथा वैदिक धार्मिक या ज्योतिष सम्बन्धी विषयों का अध्ययन करेंगी तथा इस क्षेत्र में आप परिश्रमपूर्वक कोई विशिष्ट उपलब्धि तथा यश अर्जित करेंगी। आर्थिक दृष्टि से भी आपके स्थिति सुदृढ़ रहेगी तथा सुखैश्वर्य वैभव एवं सुख संसाधनों को अर्जित करके उनका उपभोग करने में समर्थ होंगी। पुत्र संतति से आप युक्त होंगी तथा इनसे आपको इच्छित सुख एवं सहयोग मिलेगा। साथ ही पिता के प्रति भी आपके मन में पूर्ण श्रद्धा तथा सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी सेवा करने में तत्पर रहेंगी। इससे आपको आत्मसन्तुष्टि की अनुभूति होगी। परिवार की उन्नति एवं समृद्धि में आपका प्रमुख सहयोग रहेगा तथा समाजिक जनों के मध्य प्रतिष्ठा बनी रहेगी।

आप आस्तिक विचारों की महिला होंगी तथा धर्म के प्रति आपके मन में निष्ठा रहेगी। साथ ही तीर्थयात्रा आदि के भी योग बनेंगे। मित्र एवं बन्धुवर्ग के मध्य आपकी लोकप्रियता रहेगी तथा उनसे पूर्ण सम्मान सहयोग तथा लाभ मिलता रहेगा। इस प्रकार आप स्वस्थ बुद्धिमान विदुषी पराक्रमी तथा धार्मिक प्रवृत्ति के महिला होंगी तथा सर्व भौतिक सुखों को अर्जित करके सुखपूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगी।

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप अन्य जनों से अपना वायदा पूरा नहीं करेंगी तथा अपने अधिकांश समय को अनावश्यक वार्तालाप में व्यतीत करेंगी। आप इतनी बातूनी महिला होंगी कि अन्य लोग आप पर आसानी से नियंत्रण नहीं कर सकते हैं। आप आधुनिक विचारों से युक्त रहेगी तथा स्वभाव में विनम्रता का भाव भी विद्यमान रहेगा। इसके साथ ही आसानी से किसी को अपना मित्र नहीं बनाएंगी तथा खूब सोच समझकर जब किसी से पूर्ण सन्तुष्ट हो जाएंगी तभी उसे अपना मित्र बनाएंगी।

आपका पारिवारिक जीवन सामान्यतया सुख एवं शान्ति से युक्त रहेगा। लेकिन आंतरिक मन से परिवार के विषय में पूर्ण चिन्तित रहेंगी परन्तु प्रयत्न में उपेक्षा का भाव प्रदर्शित करेंगी। इससे कई बार पारिवारिक जनों के मध्य मतभेद उत्पन्न हो सकता है अतः ऐसी स्थिति में आपको सावधान रहना चाहिए फिर भी पारिवारिक जनों से आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होता रहेगा तथा उनकी प्रसन्नता तथा खुशहाली के लिए सर्वदा यत्नशील रहेंगी। आप विभिन्न प्रकार के स्वादों की प्रिय रहेंगी तथा समय समय पर इनका आस्वादन करती रहेंगी लेकिन यदा कदा आपको नेत्र संबंधी रोग से परेशानी हो सकती है। इसके अतिरिक्त नौकरी या अन्य साधनों से आप धनार्जन करेंगी साथ ही विदेश में भ्रमण आदि से भी लाभान्वित हो सकती हैं। इस प्रकार आप वैभव शाली जीवन व्यतीत करने में समर्थ रहेंगी।

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आपकी स्मरण शक्ति अच्छी रहेगी तथा किसी वस्तु या विषय को आसानी से नहीं भूल पाएंगी। भाई बहिनों से आप युक्त रहेंगी तथा इनसे आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा साथ ही वे आदर्श बुद्धिमान तथा आज्ञाकारी होंगे। उनकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी तथा आपको वे यथोचित सहयोग तथा सुख प्रदान करने में तत्पर रहेंगे। आप परस्पर एक दूसरे की कमियों तथा गलतियों की उपेक्षा करेंगे जिससे पारिवारिक शान्ति बनी रहेगी। मित्र एवं संबंधियों से भी सामान्यतया आपके संबंध मधुर रहेंगे तथा उनसे अवसरानुकूल इच्छित सहयोग मिलता रहेगा।

आप एक साहसी तथा पराक्रमी महिला होंगी तथा स्वपरिश्रम एवं विद्वता से उपलब्धियां अर्जित करेंगी। साथ ही यदि कोई परेशानी या समस्या हो तो आप दृढ़ता पूर्वक उसका सामना तथा समाधान करेंगी आप जो कहेंगी वहीं करेंगी भी यह आपके व्यक्तित्व की विशेषता रहेगी। साथ ही स्पष्टवादिता का भाव भी विद्यमान रहेगा। आप सिद्धान्त वादी महिला होंगी तथा अपने सिद्धांतों पर हमेशा दृढ़ रहेंगी। आधुनिक संचार साधनों यथा फोन टेलीविजन तथा वाहन आदि से भी आप युक्त रहेंगी एवं प्रसन्नता पूर्वक इसका उपभोग करेंगी। नृत्य एवं संगीत के प्रति आपकी रुचि रहेगी तथा रिक्त समय में आप इनसे अपना मनोरंजन करेंगी। आपकी दूर समीप की यात्राएं होती रहेगी तथा इनसे आप इच्छित लाभ एवं ख्याति भी प्राप्त होगी। साथ ही अध्ययन एवं सूचना संबंधी लेखों के प्रति आपका आकर्षण रहेगा। इसके अतिरिक्त आपकी मित्रता कीर्तिवान, क्षमाशील, सत्यवक्ता तथा उत्तमशील स्वभाव के व्यक्तियों से होगी तथा समस्त सुखों का उपभोग करते हुए भाग्यशाली महिला होंगी।

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है तथा नवमेश सूर्य भी चतुर्थ भाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आप समस्त सांसारिक सुखों को प्राप्त करेंगी तथा प्रसन्नता पूर्वक इनका उपभोग करेंगी। आप एक वैभवशाली महिला होंगी। फलतः समाज में यथोचित स्तर बना रहेगा तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे एवं यथोचित सम्मान देंगे। इस प्रकार अपने रहन-सहन एवं स्तर से आप सामान्यतया सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगी।

आप एक सौभाग्यशाली महिला होंगी तथा चल एवं अचल सम्पत्ति से युक्त रहेंगी। पिता से आपको भी प्रचुर मात्रा में प्रचुर मात्रा में चल एवं अचल संपत्ति की प्राप्ति होगी जिससे आपकी समृद्धि में वृद्धि होगी। अपनी योग्यता बुद्धिमता एवं परिश्रम से भी आप वांछित मात्रा में धन-सम्पत्ति अर्जित करने में तत्पर रहेंगी। आपको चल एवं अचल दोनों प्रकार की सम्पत्ति से लाभ के योग बनते हैं। अतः आपको दोनों पर समयानुसार निवेश करते रहना चाहिए।

जीवन में आपको उत्तम घर की प्राप्ति होगी तथा आधुनिक सुख-सुविधाओं एवं भौतिक उपकरणों से आपका घर सुसज्जित होगा। इसकी स्वच्छता पर आप विशेष ध्यान देंगी। आपका घर किसी समृद्ध कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे। आपके आपसी संबंधों में भी अनुकूलता होगी। इसके अतिरिक्त वाहन सुख भी उत्तम होगा तथा अच्छी श्रेणी के वाहन का आप प्रन्नतापूर्वक उपभोग करेंगी।

आपकी माता जी तेजस्वी, बुद्धिमान, शिक्षित एवं व्यावहारिक महिला होंगी तथा अपने उत्तम कार्य कलापों एवं कर्तव्य परायणता से अन्य जनों को प्रसन्न तथा प्रभावित करने में सफल होंगी। परिवार के सभी सदस्य उन्हें वांछित सहयोग एवं सम्मान देंगे। आपके प्रति उनके मन में विशिष्ट वात्सल्य का भाव होगा तथा अवसरानुकूल वे आपको आर्थिक तथा नैतिक सहयोग प्रदान करती रहेंगी। आपकी उन्नति में उनका मुख्य योगदान होगा। आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं आज्ञाकारिता का भाव रखेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगी। इसके अतिरिक्त आपसी संबंधों में मधुरता रहेगी।

विद्याध्ययन में प्रारंभ से ही आपकी रुचि होगी तथा छोटी कक्षाओं से ही परीक्षा में अच्छी सफलता अर्जित करेंगी। आप स्नातक परीक्षा भी अच्छे अंको में उत्तीर्ण करके अपने भविष्य को उज्ज्वलता की ओर अग्रसर करेंगी। इससे आपके मन में आत्मविश्वास के भाव की वृद्धि होगी तथा स्वजनों एवं सामाजिक जनों से सम्मान, स्नेह एवं प्रोत्साहन मिलेगा। इसके अतिरिक्त आप किसी अन्य तकनीकी या व्यावसायिक पाठ्यक्रम में भी डिग्री प्राप्त कर सकती हैं।

नैसर्गिक तेजस्वी ग्रह सूर्य की चतुर्थ भाव में स्थिति के प्रभाव से वृद्धावस्था में आप अल्प मात्रा में रक्तचाप संबंधी परेशानी की अनुभूति कर सकती हैं। लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा तथा खान-पान का उचित ध्यान रखकर आप इससे मुक्त रहेंगी जिससे आपका समय प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचमभाव में मेषराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है अतः इसके प्रभाव से आप तीव्र बुद्धि के स्वामिनी होंगी तथा अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को बुद्धिमता से सम्पन्न करेंगी। आप में शीघ्र एवं अनुकूल निर्णय लेने की शक्ति भी विद्यमान होगी जिससे अवसरानुकूल आप इच्छित लाभ एवं सफलता अर्जित कर सकती हैं। आप कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान भी शीघ्र एवं आसानी से करने में समर्थ होंगी। इसके अतिरिक्त वैदिक साहित्य धर्म एवं दर्शन के प्रति भी आपकी श्रद्धा एवं रुचि होगी तथा यत्नपूर्वक इनके ज्ञानार्जन में रुचिशील होंगी। आधुनिक विज्ञान, भौतिक विज्ञान गणित या ज्योतिष में भी आपकी प्रबल रुचि होगी एवं परिश्रम पूर्वक इनका ज्ञानार्जन करेंगी। इस क्षेत्र में आप कुछ नवीन कार्य या सिद्धान्तों का भी प्रतिपादन कर सकती हैं जिससे आपके प्रभाव एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा लोग एक विदुषी के रूप में आपको सम्मान प्रदान करेंगे।

पंचमभाव में मेष राशि की स्थिति के प्रभाव से प्रेम-प्रसंग में आप भावनात्मक आकर्षण तथा सम्मान का भाव रखेंगी। आपके प्रेम में मर्यादा नैतिकता एवं यथार्थवादी दृष्टिकोण होगा तथा मनोरंजन के लिए ऐसे संबंध स्थापित नहीं करेंगी। अतः आपके प्रेम की परिणिति विवाह के रूप में भी हो सकती है।

जीवन में आपको यथोचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा पुत्र संतति अवश्य होगी। आपकी संतति बुद्धिमान प्रतिभाशाली एवं पराक्रमी होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से वे जीवन में लाभ एवं उन्नति के मार्ग प्रशस्त करेंगे। माता-पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण आदर एवं सम्मान का भाव होगा तथा उनकी आज्ञापालन में भी सर्वदा तत्पर होंगे। वे समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में माता-पिता का सहयोग एवं सलाह अवश्य लेंगे। इससे संबंधों में मधुरता तथा सदभावना बनी रहेगी। माता की अपेक्षा पिता के प्रति उनके मन में विशेष लगाव होगा तथा अपनी व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान वे पिता के माध्यम से ही करना सुविधाजनक समझेंगे परन्तु आदर दोनों का समान होगा। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में वे आपकी तन-मन-धन से सेवा करेंगे एवं अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। इस प्रकार बच्चों के संदर्भ में आप एक भाग्यशाली महिला मानी जायेंगी।

शिक्षा के क्षेत्र में आपकी संतति अत्यधिक योग्य एवं प्रतिभाशाली सिद्ध होगी तथा प्रारम्भ से ही इच्छित उन्नति का प्रदर्शन करेगी जिससे उनका भविष्य उज्ज्वल होगा। आप भी उनकी शिक्षा के लिए किसी भी प्रकार की कमी नहीं करेंगी तथा अच्छी से अच्छी एवं आधुनिक संस्था में उन्हें शिक्षा प्रदान करायेंगी। इसके अतिरिक्त वे सुन्दर, स्वस्थ, विनम्र स्वभाव सक्रिय एवं निपुण होंगे तथा अपने उत्तम कार्य कलापों से अन्य सामाजिक जनों को प्रभावित तथा प्रसन्न करने में समर्थ होंगे तथा वे भी बच्चों को वांछित स्नेह एवं प्रोत्साहन देंगे। इससे आपकी भी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी फलतः बच्चों से आप सन्तुष्ट एवं प्रसन्न रहेंगी।

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप का शत्रु या विरोधी पक्ष प्रबल रहेगा इसका मुख्य कारण यह होगा कि आप अपनी ही इच्छा से कार्यो को सम्पन्न करेंगी तथा अन्य जनों की इच्छा या सलाह को कोई महत्व प्रदान नहीं करेंगी। आपका उच्च स्तर, कार्यप्रणाली तथा अन्य प्रकार से खुशहाली शत्रु वर्ग के लिए ईर्ष्या का कारण होगा। साथ ही आपको अपने सम्बन्धियों तथा सहयोगियों से भी कई बार विरोध का सामना करना पड़ेगा। आप सामान्यतया दीवानी तथा फौजदारी मुकद्दमों में लिप्त रहेंगी तथा इनमें मुक्त भाव से व्यय करेंगी जिससे आपको उचित सफलता प्राप्त हो सकें। आप एक चतुर चालाक तथा बुद्धिमती महिला होंगी तथा साम, दाम, दण्ड, भेद से किस प्रकार से कार्य सिद्ध किया जाता है अच्छी तरह जानती है। अतः अपनी इस कार्य प्रणाली से शत्रु, विरोधी तथा मुकद्दमे आदि में विजय प्राप्त करने में समर्थ रहेंगी।

आपको नौकर चाकरों की सामान्यतया अत्यधिक आवश्यकता रहेगी क्योंकि आप एक व्यस्त महिला होगी तथा अपने दैनिक कार्यो को स्वयं सम्पन्न करने में असमर्थ रहेंगी अतः नौकरों की नियुक्ति आपके लिए आवश्यक रहेगी लेकिन यदा कदा सेवक वर्ग आपके गुप्त रहस्यों को अन्य जनों के समक्ष उजागर करेंगे अतः इससे आपके सामाजिक सम्मान में न्यूनता आएगी। साथ ही वे चोरी आदि से भी हानि प्रदान कर सकते हैं अतः सेवकों के चुनाव में सावधानी रखें।

आपके पास आराम दायक जीवन बिताने के लिए प्रचुर मात्रा में धन होगा लेकिन अपनी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए आप उन्मुक्त भाव से व्यय करेंगी। जिससे ऋण आदि लेने की स्थिति बनेगी। आपके मामा मामियों का स्तर भी उच्च रहेगा। यद्यपि वे आपको पसन्द करेंगे परन्तु आपको इच्छित सुख एवं सहयोग अल्प ही प्रदान करेंगे तथा आपकी कार्य प्रणाली से भी असन्तुष्ट रहेंगे। लेकिन अत्यवश्यक समय पर वे आपको अपना सहयोग प्रदान कर सकते हैं। साथ ही उत्तम स्वास्थ्य के लिए आपको खान पान का ध्यान रखना चाहिए तथा अनावश्यक अनियमिताएं नहीं होनी चाहिए अन्यथा प्रौढ़ावस्था में आप शारीरिक अस्वस्थता से परेशानी की अनुभूति कर सकती हैं।

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है तथा सप्तम भाव को मंगल भी प्रभावित कर रहा है। सामान्यतया सप्तम भाव में मिथुन राशि की स्थिति से जातक का सहयोगी सुशील विनम्र कला प्रेमी तथा हास्य प्रवृत्ति का व्यक्ति होता है लेकिन मंगल के प्रभाव से वह तेजस्वी स्वाभिमानी पराक्रमी धनाढ्य एवं कार्यों को सम्पन्न करने में चतुर होता है।

अतः इसके प्रभाव से आपके पति सुशील एवं विनम्र स्वभाव के व्यक्ति होंगे परन्तु उनमें तेजस्विता का भाव भी विद्यमान होगा। अपने कार्यों को सम्पन्न करने में वह चतुर होंगे तथा अपने साहसी एवं पराक्रमी कार्यों से अन्य जनों को भी प्रभावित करेंगे। उनकी प्रवृत्ति हास्य प्रिय भी होगी तथा अन्य जन भी उनकी हास्य प्रियता से प्रसन्न रहेंगे। सांसारिक कार्यों में भी वह दक्ष होंगे तथा कर्तव्य परायणता का भाव भी उनमें विद्यमान होगा।

आपके पति लालिमा लिए गौरवर्ण की सुंदर एवं आकर्षक व्यक्ति होंगे तथा उनका कद भी उन्नत होगा। शारीरिक संरचना उनकी पुष्ट रहेगी जिससे उनके सौन्दर्य एवं आकर्षण में वृद्धि होगी शरीर में चुस्ती रखने के लिए वह व्यायाम या यौगिक क्रियाएं भी सम्पन्न करेंगे। मिथुन राशि के प्रभाव से कला एवं संगीत के प्रति उनका आकर्षण रहेगा तथा कलात्मक वस्तुओं के संग्रह में प्रवृत्त होंगे।

सप्तम भाव में मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में विलम्ब होगा। आपका विवाह किसी बंधु या संबन्धियों के सहयोग से सम्पन्न होगा। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा तथा एक दूसरे के प्रति प्रेम एवं समर्पण की भावना होगी। अपने महत्वपूर्ण कार्य एवं योजनाओं को एक दूसरे की सलाह तथा सहमति से करेंगे इससे समानता एवं विश्वसनीयता बनी रहेगी।

आपका विवाह किसी समृद्ध एवं प्रतिष्ठित परिवार में होगा तथा विवाह में आपको मायके से दहेज के रूप में पर्याप्त मात्रा में धन सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। विवाह के बाद सास ससुर से आपके संबंधों में मधुरता कम औपचारिकता अधिक होगी तथापि उनसे आपको नैतिक सहयोग मिलता रहेगा। आप भी अपनी ओर से उनसे सामान्य संबंध रखने के लिए यत्नशील रहेंगी।

सास ससुर के प्रति आपके पति की सेवा की भावना कम ही होगी एवं सुख दुख में उनका यथोचित ध्यान नहीं रखेंगे तथा उनके तेजस्वी व्यवहार से भी वे अप्रसन्न होंगे। साले एवं सालियां भी उनके व्यवहार से अप्रसन्न रहेंगे तथा उन्हें कम ही सहयोग तथा सम्मान प्रदान करेंगे।

व्यापार या अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में साझेदारी के लिए स्थिति अच्छी नहीं होगी एवं इससे लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। अतः साझेदारी की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है। अतः इसके प्रभाव से आपमें आध्यात्म संबन्धी शक्ति जन्म से ही विद्यमान रहेगी तथा ज्यौतिष एवं तंत्र मंत्र आदि के प्रति भी आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा परिश्रम पूर्वक इनका ज्ञान अर्जित करने में सफलता प्राप्त करेंगी। साथ ही आपमें अन्तर्प्रज्ञा शक्ति की भी प्रबलता रहेगी फलतः आपके पूर्वाभास एवं भविष्य वाणियां प्रायः सत्य ही सिद्ध होगी। यदि आपको कोई मानसिक या अन्य परेशानी उत्पन्न होगी तो आप सामान्यतया इन्हीं विद्याओं के द्वारा उसके निराकरण के लिए प्रयत्नशील रहेंगी।

आपको निश्चित रूप से पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति होगी तथा धनऐश्वर्य से युक्त होकर आपका जीवन आनन्द पूर्वक व्यतीत होगा। साथ ही प्रौढ़ावस्था में आप की चल एवं अचल सम्पत्ति में वृद्धि भी हो सकती है तथा मित्र एवं बन्धुवर्ग से लाभ की पूर्ण संभावना रहेगी। आपका विवाह एक कुलीन परिवार में होगा तथा वे धनऐश्वर्य एवं वैभव से युक्त रहेंगे जिससे आपके दाम्पत्य जीवन में मधुरता बनी रहेगी। किसी भी मूल्यवान वस्तु या स्वयं का बीमा कराने में आप शीघ्रता का परिचय देंगी क्योंकि आप किसी भी वस्तु की सर्वप्रथम सुरक्षा का उपाय ढूंढती है तथा अनावश्यक हानि की संभावना को पहले ही समाप्त करना चाहती हैं। जीवन में चोरी डकैती या दुर्घटनाओं आदि की न्यूनता रहेगी तथापि यदि कोई ऐसी घटना घटित भी होती है तो इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। आपकी आयु उत्तम रहेगी तथा समस्त सांसारिक सुखों का उपभोग करके आप अपना सामान्य जीवन व्यतीत करेंगी।

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। अतः इसके प्रभाव से आपकी ईश्वर के प्रति पूर्ण आस्था रहेगी तथा अपने धर्म का श्रद्धा पूर्वक अनुपालन करेंगी। साथ ही पारिवारिक परम्परानुसार धर्म का आचरण करेंगी। आप तीव्र बुद्धि की स्वामिनी होंगी तथा नेतृत्व के गुणों से सुसम्पन्न रहेंगी। आप स्वच्छन्द प्रवृत्ति की महिला होंगी तथा धार्मिक गुरुओं या श्रेष्ठ जनों का मन से आदर करेंगी। साथ ही उनके अनुसरण करने के लिए उद्यत हो सकती हैं। आध्यात्मिक क्षेत्र में आपका प्रचुर मात्रा में ज्ञान रहेगा तथा प्रसिद्ध तीर्थ स्थानों की समय समय पर यात्रा करेंगी लेकिन मुख्य रूप से अपने धर्म के तीर्थ स्थानों पर जाना ही विशेष पसन्द करेंगी। आपकी ज्योतिष या तंत्र मंत्र आदि के प्रति भी श्रद्धा रहेगी एवं इनका न्यूनाधिक ज्ञान भी हो सकता है। ध्यान एवं योग संबंधी क्रियाओं को भी आप समय समय पर करती रहेंगी। आध्यात्म के द्वारा आपकी अर्न्तप्रज्ञा शक्ति की वृद्धि होगी फलतः आपके पूर्वाभास तथा भविष्य वाणियां भी सत्य सिद्ध हो सकती हैं।

आप एक सामाजिक प्राणी होंगी तथा स्वच्छन्दता पूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करना रुचिकर लगेगा। साथ ही किसी के नियंत्रण में कार्य करना पसन्द नहीं करेंगी। धार्मिक एवं व्यवसाय संबंधी आपकी लम्बी दूरी की यात्राएं हो सकती हैं इनमें आपको लाभ, ज्ञान एवं सम्मान प्राप्ति की संभावना रहेगी। साथ ही सामाजिक जनों की सेवा करने के लिए भी तत्पर रहेंगी। पौत्रों से आपको इच्छित सहयोग प्राप्त होगा तथा वे आपकी पूर्ण सेवा करेंगे। वास्तव में आप वर्तमान समय में जो भी सुख ऐश्वर्य एवं वैभव का उपभोग कर रहीं हैं यह सब आपके पूर्व जन्मों का फल है अतः सामान्यतया प्रसन्नता पूर्वक ही जीवन व्यतीत करेंगी।

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशमभाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। साथ ही बृहस्पति भी लग्नेश होकर दशमभाव में ही स्थित है। कन्या राशि पृथ्वीतत्व एवं बृहस्पति वायुतत्व युक्त ग्रह है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया के साथ साथ श्रमसाध्य भी होगा तथा इसमें स्वपरिश्रम एवं योग्यता से उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगी। साथ ही सामयिक परिवर्तनों से भी आप लाभ एवं उन्नति के मार्ग प्रशस्त करेंगी।

बृहस्पति की दशमभाव में कन्या राशि में स्थिति के प्रभाव से आपके लिए आजीविका संबंधी क्षेत्र शिक्षक, व्याख्याता, अनुष्ठान कर्ता, धर्मोपदेशक, प्रोफेसर, वकील, न्यायाधीश, बैंक अधिकारी, शेयर ब्रोकर, सरकारी विभागों में सचिव, सलाहकार, प्रशासनिक क्षेत्र, ज्योतिषी एवं राजनीति उत्तम एवं अनुकूल रहेगी। इन क्षेत्रों में आजीविका प्रारंभ करने से आप वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगी तथा इनमें अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः आपको यत्नपूर्वक उपरोक्त क्षेत्रों में कार्य को प्रारंभ करना चाहिए। व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए सुवर्ण आदि धातुकार्य, शेयर क्रय विक्रय, वित्तीय संस्था का स्वामित्व, ब्याज द्वारा, स्वतंत्र कार्य यथा ज्योतिष, वकालत आदि से वांछित उन्नति एवं लाभ अर्जित करेंगी। साथ ही प्राइवेट कम्पनी के व्यवस्थापक के रूप में भी आपको उन्नति एवं सफलता प्राप्त होगी। अतः व्यापार के लिए उपरोक्त क्षेत्रों एवं कार्यों को ही सम्पन्न करें।

दशमभावस्थ बृहस्पति के शुभ प्रभाव से जीवन में आपको वांछित सम्मान एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी तथा किसी सम्मानित एवं उच्चाधिकार प्राप्त पद को अर्जित करने में भी समर्थ होंगी। साथ ही समाज में आप एक प्रभावशाली महिला होंगी एवं सामाजिक जनों से आपको यथोचित सम्मान की प्राप्ति होगी एवं यश तथा प्रतिष्ठा भी दूर दूर तक व्याप्त होगी। साथ ही आप किसी समाजिक शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक संस्था के भी सम्मानित पदाधिकारी या सदस्य होंगी जिससे आपको अतिरिक्त मान प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। अतः अपनी अर्जित उपलब्धियों से आप प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगी।

आपके पिता शिक्षित बुद्धिमान एवं आदर्श व्यक्ति होंगे तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा। समाज में वे एक प्रभावशाली व्यक्ति माने जाएंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य का भाव होगा तथा उच्चशिक्षा का यथोचित प्रबंध करके आपको एक योग्य नागरिक के रूप में देखना चाहेंगे साथ ही आपके कार्यक्षेत्र की उन्नति एवं सफलता में भी उनका मुख्य योगदान होगा जिससे आप सुगमता पूर्वक उन्नति करने में समर्थ होंगी। आप भी अपने परिश्रम एवं योग्यता से पिता की प्रतिष्ठा में वृद्धि करेंगी। आपके परस्पर संबंधों में भी मधुरता होगी तथा वैचारिक एवं सैद्धान्तिक समानता बनी रहेगी। इसके अतिरिक्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को एक दूसरे की सलाह एवं सहयोग से सम्पन्न करेंगे।

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपके जन्म समय में एकादश भाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक है। अतः इसके प्रभाव से आप एक दूरदर्शी व्यावहारिक तथा न्याय प्रिय महिला होंगी तथा अपने इन्हीं गुणों के साथ साथ पराक्रम एवं योग्यता से जीवन में अपनी महत्वाकांक्षाओं, इच्छाओं तथा संकल्पों को पूरा करेंगी। धन वैभव एवं सुख साधनों से आप हमेशा युक्त रहेंगी तथा जीवन में माता सास या अन्य सहेली के सहयोग से इच्छित लाभ एवं धन अर्जित करने में समर्थ रहेंगी। इसके साथ ही विलासमय आभूषणों के विक्रय, इलक्ट्रॉनिक्स के उपकरण तथा कम्प्यूटर आदि के क्षेत्र में भी आपका धनार्जन हो सकता है। यदि आप स्वयं कार्यरत नहीं हैं तो आपके पति उपरोक्त विभागों या कार्य से धन अर्जित करेंगे। इस प्रकार आय स्रोतों में वृद्धि करके आजीवन आर्थिक सुदृढ़ता को प्राप्त करेंगी।

आपको जीवन में बड़ी बहिनों से सुख सहयोग एवं स्नेह की प्राप्ति होगी तथा प्रत्येक क्षेत्र में वे स्नेह तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करेंगी एवं मार्गदर्शन भी करेंगी। साथ ही आप भी उनका पूर्ण सम्मान करेंगी। आप मित्रता प्रिय महिला होंगी तथा मित्रता का क्षेत्र विस्तृत रहेगा। इनके मध्य आप आदरणीया रहेंगी तथा सभी आपसे प्रभावित रहेंगे। आपको एकान्त अच्छा नहीं लगेगा तथा कोई न कोई हमेशा साथ में रहेगा। समाज से आपको इच्छित सम्मान प्राप्त होगा एवं अपने क्षेत्र में प्रतिष्ठा तथा ख्याति प्राप्त करेंगी। इसके अतिरिक्त सामाजिक जनों की सेवा तथा भलाई करना भी अपना कर्तव्य समझेंगी जिससे जीवन में सामाजिक रूप से विशिष्ट सम्मान की प्राप्ति की संभावना रहेगी। इस प्रकार आप सुखैश्वर्य से सुसम्पन्न होकर अपना पारिवारिक जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करेंगी।

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है अतः इसके प्रभाव से आप एक भौतिक वादी महिला होंगी तथा धनार्जन के लिए नित्य यत्नशील रहेंगी। आप अन्य जनों की भलाई के कार्यों को तन मन धन से करने के लिए भी तत्पर रहेंगी अतः समय समय पर आपको अधिक धन की आवश्यकता पड़ेगी लेकिन अपनी योग्यता तथा पराक्रम से प्रचुर मात्रा में धन अर्जित करने में समर्थ रहेंगी। आपकी इच्छा धनऐश्वर्य से युक्त होने की हमेशा रहेगी साथ ही आर्थिक सुरक्षा के प्रति भी सतर्क रहेंगी तथा इस कार्य में आपको अवश्य सफलता प्राप्त होगी।

आपका व्यय मुख्य रूप से दया, दान, मित्रों तथा बन्धुवर्ग पर होगा। जब भी आपको इसका अवसर मिलेगा आप अवश्य कुछ न कुछ इन पर व्यय करेंगी। साथ ही भौतिक एवं विलासमय आधुनिक उपकरणों पर भी समय समय पर व्यय करती रहेंगी लेकिन कभी कभी आपको ऐसे मामलों में सावधानी रखनी चाहिए क्योंकि आपकी प्रवृत्ति को देखते हुए लोग अकारण ही आपसे धन की मांग कर सकते हैं।

आपको दूर समीप की यात्राएं प्रिय कर लेंगी। साथ ही युवावस्था में आप साहसिक कार्यों को भी सम्पन्न करेंगी तथा किसी नवीन सिद्धान्त का भी प्रतिपादन कर सकती है। देश की यात्राओं के साथ साथ आपकी विदेश संबंधी यात्राएं भी सम्पन्न होगी जिनसे आपको लाभ एवं सम्मान की प्राप्ति होगी। इसके अतिरिक्त बाईं आंख में किसी प्रकार की कष्टानुभूति कर सकती है लेकिन सामान्य जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

वार्षिक फलादेश - 2025

वर्ष के प्रारम्भ में कुम्भस्थ शनि तृतीय भाव में रहेंगे व मीनस्थ राहु चतुर्थ भाव में रहेंगे और 29 मार्च को शनि मीन राशि चतुर्थ भाव में और 30 मई को राहु कुम्भ राशि तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के शुरुआत में वृष राशि के गुरु छठे भाव में रहेंगे और 14 मई को मिथुन राशि सप्तम भाव में प्रवेश करेगी और अतिचारी हो कर 18 अक्टूबर को कर्क राशि अष्टम भाव में गोचर करेगी और वक्री होकर फिर से 5 दिसम्बर को मिथुन राशि सप्तम भाव में आ जाएगी।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। आपके कार्य क्षेत्र में उतार चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। गुरुग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाई का अनुभव करेंगे। इसलिए आप अपनी शक्ति व सामर्थ्य के अनुसार कार्य करते रहें। नौकरी करने वाले जातकों का स्थानान्तरण घर से दूर हो सकता है।

14 मई के बाद गुरु ग्रह का गोचर सप्तम स्थान में होगा। उस समय आप अपने व्यवसाय में अच्छा विस्तार करेंगे। आमदनी के नये स्रोत मिलेंगे। इस अवधि में कोई नया कार्य प्रारम्भ करें, तो उसमें सफलता मिलने की उम्मीद अधिक है। आपको अनुभवी लोगों का सहयोग मिलेगा व साझेदारी में लाभ प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

वर्षारम्भ में व्यापारिक अनुकूलता नहीं होने के कारण आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी नहीं रहेगी। 14 मई के बाद एकादश स्थान पर गुरुग्रह के दृष्टि प्रभाव से धनागम में वृद्धि होगी। आप बचत कर आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने में सफल रहेंगे।

आपको मित्र या पत्नी के माध्यम से धन लाभ हो सकता है। परिवार में मांगलिक कार्य में भी आपका धन व्यय हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल नहीं है। चतुर्थ स्थान के राहु आपके परिवार में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न कर सकते हैं, जिससे आपका पारिवारिक माहौल खराब हो सकता है। माता के साथ आपके वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं। अतः उस समय आपको अपने विवेक से काम लेना होगा।

14 मई के बाद आपकी पत्नी के साथ आपके सम्बन्ध मधुर होंगे। यदि आप अविवाहित हैं तो विवाह हो जाएगा। राहु के गोचर के बाद सामाजिक पद प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी।

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

संतान

संतान के लिए वर्षारम्भ में गुरुग्रह का गोचर अनुकूल नहीं है। उसका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। शिक्षा भी प्रभावित हो सकती है, परन्तु मई के बाद आपके बच्चे के लिए समय काफी अनुकूल हो रहा है।

उस समय उनको अपने कार्य क्षेत्र सफलता प्राप्त होगी। शिक्षा में सुधार होगा। यदि आपका दूसरा बच्चा विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम नहीं रहेगा। छोटे स्थान का गुरुछोटी-मोटी बीमारियों से स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरूरी होगा। यदि पहले से कोई लम्बी बीमारी से ग्रसित हैं तो परहेज की आवश्यकता है।

14 मई के बाद गुरुग्रह का गोचर शुभ हो रहा है। उस समय आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगा, जिससे आप स्वस्थ बने रहेंगे। मन में अच्छे विचार आएंगे। प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी अनुशासित होगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य फलदायक रहेगा। करियर में सफलता प्राप्त के लिए आप को अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है। जो विद्यार्थी विदेश या घर से दूर जाकर पढ़ाई करना चाहते हैं उनके लिए समय अनुकूल है।

14 मई के बाद समय बहुत अनुकूल हो रहा है। उस समय के अंतराल में यदि प्रतियोगिता परीक्षा में भाग लेना चाह रहे हैं तो समय शुभ है। व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं तो उसमें सफलता प्राप्त होगी।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में द्वादश स्थान पर गुरुएवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं।

तृतीयस्थ शनि आपके छोटी-मोटी यात्रा के साथ-साथ लम्बी यात्रा भी कराते रहेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में मानसिक द्वंदता के कारण आपका मन पूजा पाठ में नहीं लगेगा। 14 मई से गुरुग्रह का गोचर अच्छा हो रहा है। उस समय आप अपनी पत्नी के साथ पारिवारिक कल्याण के लिए कोई विशेष पूजा संपन्न करेंगे, जिससे आपको परिवार में सुख, समृद्धि एवं मानसिक शान्ति का अनुभव होगा।

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- शनिवार को लोहे का तवा दान करें।



SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि चतुर्थ भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु तृतीय भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशि में द्वितीय भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि के गुरु सप्तम भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशि में अष्टम भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशि एवं नवम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्यतः अनुकूल रहेगा। सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से आप अपने व्यापार में कुछ अच्छा करेंगे। आपको कार्य क्षेत्र में मित्र, सहयोगी व जीवनसाथी का भी सहयोग प्राप्त होगा। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे।

02 जून के बाद समय प्रतिकूल हो रहा है। उस समय के अंतराल में आपके कार्य व्यवसाय में उतार चढ़ाव की स्थिति बन सकती है। अतः कोई नया काम प्रारम्भ न करें पुराने चले आ रहे कार्य को और अच्छे ढंग से चलाएं। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से आपके कार्य क्षेत्र में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती है। भूमि भवन से संबंधित काम करने वाले व्यक्तियों को नुकसान भी हो सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। एकादश स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके धनागम में निरन्तरता बना रहेगी। आप निष्ठा के साथ धनार्जन में लगे रहेंगे और आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने में जीवनसाथी एवं भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा।

गुरु के गोचर के बाद समय अच्छा नहीं रहेगा। गुरु एवं शनि दोनों ग्रहों का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपके आय के मार्ग प्रभावित हो सकते हैं। इस समय के अंतराल में आपको किसी को उधार पैसा नहीं देना चाहिए नहीं तो आपका पैसा डूब सकता है। निवेश के लिए ये समय उपयुक्त नहीं है। अतः इस वर्ष आप कोई निवेश न करें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से आपके जीवनसाथी के साथ समन्ध मधुर होंगे। यदि आप अविवाहित हैं तो आपका विवाह हो सकता है। आपकी सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी।

02 जून के बाद समय अनुकूल नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान का शनि आपकी पारिवारिक अनुकूलता को भंग कर सकता है। परिवार में एक-दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव में कमी होगी। आपके माता पिता का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है।

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा रहेगा। आप के बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। वह अपने भाग्य के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय काफी अच्छा है। यदि आपकी दूसरा संतान विवाह के योग्य है तो उसका विवाह भी हो सकता है।

02 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं रहेगा। आपके बच्चों का स्वास्थ्य अनुकूल नहीं होने के कारण उनकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है। उनको सफलता प्राप्ति के लिए लगातार कठिन परिश्रम करने की आवश्यकता है परन्तु 31 अक्टूबर के बाद समय काफी अच्छा हो जाएगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। आपके मन में सकारात्मक विचार आएं। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी अच्छी रहेगी। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह का प्रभाव होने से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे जिससे आप का स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा।

02 जून के बाद स्वास्थ्य के लिए समय अच्छा नहीं रहेगा। मौसमजनित बीमारियों से प्रभावित हो सकते हैं। अष्टमस्थ गुरुजल तत्व राशि में होने कारण कफ, पाचनतन्त्र व पेट संबंधित बीमारियों से परेशान कर सकते हैं परन्तु 31 अक्टूबर के बाद आप के स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। सफलता प्राप्ति के लिए लगातार परिश्रम करने की आवश्यकता है। विद्यार्थियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। व्यवसायिक शिक्षा व तकनीकी शिक्षा के लिए समय अच्छा है।

02 जून के बाद समय बहुत अच्छा नहीं रहेगा। उस समय आपकी उच्च शिक्षा में भी रुकावटें आ सकती हैं। बेरोजगार जातकों को अभी कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। तृतीय स्थान के राहु छोटी-मोटी यात्राओं के साथ साथ लम्बी यात्रा भी कराते रहेंगे।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अपने स्थान से दूर स्थानान्तरण हो सकता है। यह स्थानान्तरण मनोनुकूल स्थान पर नहीं होगा। 02 जून के बाद द्वादश स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आप विदेश यात्रा करेंगे।

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। आप अपने जीवनसाथी के साथ मिलकर हवनादि कार्य संपन्न करेंगे। तीर्थ यात्रा कर पुण्यार्जन भी करेंगे। 02जूनके बाद अधिक व्यस्तता के कारण आप पूजा-पाठ व धार्मिक कार्य कम ही कर पाएँगे।

- सूर्य नमस्कार करें एवं सूर्य को जल चढ़ाएं।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें अथवा लोहे का तवा दान करें।
- गुरुवार के दिन केला या बेसन के लड्डू गरीबों में बांटे और वीरवार का व्रत करें।



SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि चतुर्थ भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं चतुर्थ भाव में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष द्वितीय भाव में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं नवम भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं दशम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं नवम भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। अष्टम स्थान के गुरु आपके व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे। किसी पर अधिक विश्वास करना आप के लिए लाभ प्रद नहीं रहेगा। आपके कार्य क्षेत्र में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं इसलिए बिना किसी पर विश्वास किये आप अपनी बौद्धिक शक्ति के अनुसार कार्य करते रहें।

जून के बाद शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर एक साथ अनुकूल हो रहा है। जिसके प्रभाव से आपको कार्य व्यवसाय में उन्नति मिलना शुरू हो जाएगी। इस समय आप कोई नया कार्य भी प्रारम्भ कर सकते हैं, जिसमें आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। आप भाग्य की अनुकूलता के कारण उन्नति करेंगे। 3 अक्टूबर के बाद शनि ग्रह का गोचर फिर से प्रतिकूल हो रहा है। उस समय कोई भी निर्णय बहुत सोच विचार कर लेना चाहिए। 26 नवम्बर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी। प्रोपर्टी से संबंधित काम करने वाले व्यक्तियों को हानि हो सकती है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्षका पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। द्वितीय स्थान का राहु आपके संचित धन में कमी ला सकते हैं। आय के सारे मार्ग भी प्रभावित हो सकते हैं। कुछ ऐसे खर्च आ सकते हैं, जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। आपको चोरी आदि से धन हानि भी हो सकती है। किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है। रोग दूर करने में भी पैसा खर्च हो सकता है।

जून के बाद आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होना शुरू हो जाएगा। सट्टा, ग्रेच्युटी या लॉटरी के माध्यम से भी आपको लाभ प्राप्त हो सकता है। शेयर बाजार से जुड़े व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा। आप अपने बच्चे की उच्च शिक्षा पर भी धन खर्च कर सकते हैं। 26 नवम्बर के बाद चतुर्थ स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से भूमि, भवन एवं वाहन के साथ रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की भी प्राप्ति हो सकती है। परिवार या संबंधियों के मांगलिक कार्य व बच्चे की उच्च शिक्षा पर भी आप अधिक खर्च करेंगे।

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पाप ग्रह से प्रभावित होने के कारण आपका घरेलू वातावरण अनुकूल नहीं रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना व समर्पण में कमी आएगी। परिवार में स्वार्थ की भावना उत्पन्न होगी और इसी स्वार्थ के कारण पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है। आपकी माता का स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है। द्वितीयस्थ राहु के प्रभाव से आपके अंदर वाणी दोष उत्पन्न हो सकता है अतः अच्छा होगा कि इस समय के अंतराल में आपको अपनी वाणी पर नियन्त्रण रखना होगा।

जून के बाद पारिवारिक वातावरण अनुकूल होना शुरू हो जाएगा। तृतीय स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी। आपको छोटे भाई बहनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आपके पराक्रम में वृद्धि होगी।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से संतान संबंधित परेशानी बनी रहेंगी। आपके बच्चों की उन्नति में भी व्यवधान आ सकता है, जिससे वे अपने लक्ष्य तक पहुंचने में कठिनाईयों का सामना करेंगे। नवविवाहित व्यक्तियों को संतानोत्पत्ति में विलम्ब हो सकता है।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। उस समय गर्भाधान के लिए बहुत अच्छा योग बन रहा है। आपके बच्चों की शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी और शिक्षा के क्षेत्र में कुछ विशेष करेंगे। संतान के लिए विवाह का प्रबल योग बन रहा है। यदि वह विवाह के योग्य है तो विवाह भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। अष्टमस्थ गुरु के कारण आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव बना रहेगा। मौसमजनित बीमारियों से थोड़ी परेशानी हो सकती है। अपने खान-पान के साथ साथ अपनी दिनचर्या को व्यवस्थित रखें। सुबह सुबह व्यायाम के साथ योगाभ्यास भी करना चाहिए। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली बेहतर बनाने की कोशिश करें। किसी आर्थिक मुद्दे को लेकर या किसी पारिवारिक परेशानी के कारण दिमागी तनाव न पालें।

जून के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी। उस समय आपके स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह के प्रभाव से आपके मन में अच्छे विचार आएंगे। धार्मिक कृत्यों में रुचि बढ़ेगी जिससे आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे।

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर में सफलता प्राप्ति के लिए आप को अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है। जो विद्यार्थी विदेश जाकर पढ़ाई करना चाहते हैं उनके लिए समय अनुकूल है। विद्यार्थियों में पढ़ाई के प्रति रुचि बनी रहेगी, साथ ही आलस्य का त्याग करें।

जून से गुरु एवं शनि का गोचर अनुकूल होने के कारण जो व्यक्ति इलेक्ट्रॉनिक या हार्डवेयर से संबंधित शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो उसके लिए समय काफी अच्छा है। तकनीकी शिक्षा या उच्च शिक्षा में भी आपको सफलता प्राप्त हो सकती है। जिन जातकों की अभी तक नौकरी नहीं लगी है उनको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा हो सकती है। चतुर्थस्थ शनि के प्रभाव से घर से दूर की यात्रा हो सकती है। नौकरी करने वालों का स्थानान्तरण भी हो सकता है।

26 जून के बाद आपकी छोटी-मोटी यात्राओं के साथ-साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। नवमस्थ गुरु के प्रभाव से आपकी धार्मिक यात्राएं भी हो सकती हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत अच्छा नहीं रहेगा। मानसिक अस्थिरता के कारण पूजा-पाठ में मन कम ही लगेगा। एकाग्रता नहीं रहने के कारण ध्यान, मन्त्र पाठ इत्यादि क्रियाएं नहीं कर पाएंगे। जून के बाद आप धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। पंचमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप किसी को गुरु भी बना सकते हैं। उनसे गुरु मन्त्र लेकर उसकी साधना भी कर सकते हैं।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा सुश्रूषा करें।
- केला या पिली वस्तु का दान करें। वीरवार का व्रत करें एवं बेसन के लड्डू दान करें।
- बुधवार या शनिवार को चिड़ियों को दाना डालें।

वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि चतुर्थ भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरुआत में मकर राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु दशम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ में दशमस्थ गुरु पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है। 28 फरवरी से भाग्य आपके अनुकूल हो रहा है। कार्य व्यवसाय में सफलता मिलेगी। वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। द्वितीयस्थ राहु का नकारात्मक प्रभाव आपके व्यवसाय पर पड़ेगा।

24 मई को राहु ग्रह का गोचर लग्न स्थान में हो रहा है। मानसिक अशान्ति एवं शारीरिक आलस्यता के कारण आपके कार्यों में कुछ व्यवधान आएंगे। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो साझेदार के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं। ऐसी स्थिति में आपको विवेक से काम लेना चाहिए।

धन संपत्ति

व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी परन्तु आप इच्छित बचत नहीं कर पाएंगे। आप अपनी भौतिक सुख सुविधा पर भी अधिक खर्च करेंगे। चतुर्थस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन एवं वाहन इत्यादि का भी सुख प्राप्त होगा।

फरवरी के बाद पिता से लाभ मिलेगा। बच्चों की उच्च शिक्षा पर भी व्यय करेंगे। लग्नस्थ राहु के प्रभाव से शारीरिक व्याधी दूर करने में भी आपके पैसे खर्च होंगे। 24 जुलाई से द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। घर परिवार में मांगलिक कार्य होंगे।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक रूप से अच्छा नहीं है। चतुर्थ एवं द्वितीय स्थान पीड़ित होने के कारण घरेलू वातावरण अशान्त बना रहेगा। परिवार में एक-दूसरे के साथ वैचारिक मतभेद होते रहेंगे। 23 फरवरी के बाद संतान संबंधित परेशानी हो सकती है। परिवार के कुछ लोगों का बर्ताव अच्छा नहीं रहेगा। ऐसे में विपरीत परिस्थितियों से निपटने के लिए आपको अपने अन्दर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करनी होगी। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से समाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

24 जुलाई से चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप के परिवार में परस्पर सहयोग एवं भावनात्मक प्रेम में वृद्धि होगी। परिवार के सभी सदस्यों का सहयोग प्राप्त होगा। माता पिता के लिए यह समय अच्छा रहेगा। मातुल पक्ष के लोगों के साथ आपके संबंध मधुर होंगे।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा परन्तु फरवरी के बाद बहुत बढ़िया हो रहा है। शिक्षा-दीक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी। अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो सकता है। आपकी दूसरी संतान के लिए समय सामान्य रहेगा। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी।

24 जुलाई के बाद सफलता प्राप्ति लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता होगी। आप अपनी मेहनत के बल पर ही लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ बढ़िया रहेगा परन्तु किंचित मानसिक परेशानी बनी रहेगी। 28 फरवरी के बाद गुरु की दृष्टि लग्न पर होगी जिसके प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व मानसिक शांति, प्रसन्नता एवं सकारात्मक सोच में वृद्धि के संकेत हैं।

24 मई को राहु ग्रह का गोचर लग्न स्थान पर हो रहा है। उस समय स्वस्थ रहते हुए भी बीमारी जैसा अनुभव होता रहेगा। आलस्य की भावना बनी रहेगी। सुबह सूर्योदय के पहले उठकर व्यायाम करना आपके स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा, परन्तु फरवरी के बाद समय उत्तम हो रहा है। व्यावसायिक शिक्षा के लिए समय बहुत बढ़िया चल रहा है। विद्यार्थियों को करियर में सफलता मिलेगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल जाएगा।

24 जुलाई के बाद प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी करने वाले व्यक्तियों को सफलता प्राप्त होगी और अपने शत्रुओं पीछे छोड़कर आगे बढ़ेंगे

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। फरवरी के बाद छोटी-मोटी यात्राओं के साथ-साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी। ये यात्राएं आपके लिए अनुकूल या उन्नतिकारक भी सिद्ध हो सकती हैं। इन यात्राओं के दौरान आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

24 जुलाई के बाद आप पूरे परिवार के साथ किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा करेंगे।

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

अपने जन्म स्थल से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्मभूमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

28 फरवरी से पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप योग, ध्यान एवं साधना अधिक करेंगे।

- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं एवं राहु के मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन सुबह स्नानादि से निवृत्त होकर सूर्य को जल दें।
- गणेशजी के मन्त्र का पाठ करें एवं नित्य प्राणायाम करें।
- एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में बहा दें।



SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि पंचम भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं पंचम भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु लग्न भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु एकादश भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गशी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं एकादश भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं दशम भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ व्यापारिक सफलता के लिए श्रेष्ठ रहेगा। आय के सारे मार्ग खुलेंगे। आपके कार्य व्यवसाय में चौमुखी विकास होगा। कोई नया कार्य भी प्रारम्भ करेंगे जिसमें आपको अत्यधिक लाभ होगा। वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। व्यवसाय को एक नया मोड़ मिलेगा। 29 मार्च के बाद द्वादशस्थ गुरु के कारण आपके कुछ विरोधी उत्पन्न हो सकते हैं परन्तु आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा उन पर भी विजय प्राप्त कर सकते हैं।

25 अगस्त से गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर एक साथ अनुकूल हो रहा है जिसके फलस्वरूप आप अपने व्यवसाय में उन्नति करेंगे। आपको कर्मचारियों का पूरा सहयोग मिलेगा। इस सफलता के पीछे आपके भाईयों का सहयोग होगा। व्यापार का स्तर बढ़ाने के लिए अपना संचित धन भी खर्च कर सकते हैं। नौकरी करने वालों के लिए भी यह वर्ष अनुकूल रहेगा। अधिकारियों का सहयोग मिलता रहेगा।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के साथ होगा। व्यापारिक अनुकूलता के कारण इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। निष्ठा के साथ प्रयास करते हैं तो आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। धनागम के योग प्रबल होंगे तथा आय के नये साधन मिलेंगे।

25 अगस्त के बाद आपका रुका हुआ धन मिल सकता है। मातुल पक्ष के लोगों से भी लाभ होगा। लग्न स्थान के राहु शारीरिक व्याधि दूर करने में पैसा खर्च करा सकते हैं परन्तु सामान्य काम-काज पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। छठे स्थान का शनि शत्रुओं से भी लाभ करा सकता है।

घर-परिवार, समाज

घर परिवार में शान्ति का वातावरण बना रहेगा। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि अविवाहित व्यक्तियों का विवाह भी करा सकती है। विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है जिससे परिवार में खुशहाली का माहौल बनेगा। भाई-बहन सहित पूरे परिवार का सहयोग मिलता रहेगा। समाज में आपकी पद-प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी। मार्च के बाद संतान

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है।

लग्न स्थान के राहु आपका स्वास्थ्य व पारिवारिक अनुकूलता प्रभावित कर सकते हैं। 25 अगस्त के बाद अपने बौद्धिक बल द्वारा आप अपने घरेलू वातावरण को अनुकूल बना लेंगे। अष्टम स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं।

संतान

वर्षारम्भ में पंचमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि से संतान के लिए उत्तम योग बन रहे हैं। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। गर्भाधान के लिए उत्तम समय है। यदि सन्तान विवाह योग्य है, तो उसका विवाह भी हो सकता है। 29 मार्च के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है।

25 अगस्त से समय फिर से अच्छा हो रहा है। आपका सन्तान की शिक्षा में सुधार होगा और उनको उन्नति के अवसर भी मिलेंगे। 05 अक्टूबर के बाद समय और भी शुभ है।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य के लिए सामान्य रहेगा। लग्नस्थ राहु के प्रभाव से बीमारी नहीं रहने के बावजूद भी बीमारी जैसा अनुभव होगा। गुरु ग्रह का गोचर शुभ होने के फलस्वरूप स्वास्थ्य श्रेष्ठ व मन में प्रसन्नता बनी रहेगी।

29 मार्च के बाद द्वादशस्थ गुरु के कारण छोटी-मोटी बीमारियों से परेशानी हो सकती है परन्तु 25 अगस्त से गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर एक साथ अनुकूल होने के कारण समय बहुत अच्छा हो रहा है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। शिक्षा के क्षेत्र में आप कुछ विशेष करेंगे। सप्तम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप कोई व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं तथा शीघ्र ही अपने लिए आय के नवीन स्रोतों का भी सृजन करेंगे। गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय कुछ प्रभावित होगा।

25 अगस्त के बाद आपको प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिलने के प्रबल योग बन रहे हैं। सभी बेरोजगारों को नौकरी मिल सकती है। सरकारी अफसरों या वरिष्ठ लोगों का भरपूर सहयोग मिलेगा।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में आपकी छोटी-छोटी यात्राएं होती रहेंगी। सप्तम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपकी व्यवसायिक यात्रा भी होंगी।

29 मार्च के बाद आपकी विदेश यात्रा भी होंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

लाभ मिलेगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। आपके अंदर ईश्वर के प्रति अटूट विश्वास बढ़ेगा। आप अपनी पारिवारिक सुख शान्ति के लिए कोई विशेष पूजा का आयोजन करेंगे जिसमें आपके परिवार वालों का पूर्ण सहयोग होगा।

- वीरवार के दिन पीली वस्तु का दान करें। गुरु ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।
- अपने माता पिता की सेवा करें।
- प्रत्येक दिन दुर्गा कवच या दुर्गा चालीसा का पाठ करें।



SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि पंचम भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु लग्न स्थान में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं एकादश भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं द्वादश भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

यह साल आपके लिए कई लाभकारी अवसर लेकर आ रहा है। आप अपने व्यावसायिक जीवन में अपने सहयोगियों के साथ अपने अधिकारियों को भी प्रभावित करेंगे। साल की शुरुआत में आपके कार्यों में देरी हो सकती है जिसके चलते तनावपूर्ण स्थिति बन सकती है।

आप अपने लक्ष्य को योजनानुसार प्राप्त कर सकेंगे। शनि का गोचर आपके समक्ष कुछ चुनौतियां खड़ी करेगा। आपको अपने भविष्य को ध्यान में रखते हुए अपनी योजना निर्धारित करनी होगी और इस ओर ध्यान देना होगा। जो व्यक्ति रोजगार की तलाश में हैं उन्हें अड़चनों के बावजूद सफलता प्राप्त होगी।

धन संपत्ति

आर्थिक तौर से यह साल आपके लिए कई लाभकारी अवसर लेकर आने वाला है। आपको पहले महीने में प्रतीत नहीं होगा क्योंकि इस दौरान राहु ग्रह का गोचर अच्छा नहीं है। आपको आर्थिक हानि का सामना करना पड़ सकता है। आपको इस दौरान यही सलाह दी जाती है कि इस समय अपनी वित्तीय योजनाओं को निर्धारित कर आगामी समय के लिए खुद को तैयार रखें। अप्रैल के बाद समय आपके लिए बहुत ही अनुकूल हो रहा है। आप बड़े काम करने में सफल होंगे।

23 सितम्बर के बाद गुरु का गोचर फिर से प्रभावित हो रहा है। उस समय कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। अतः पहले से ही कुछ अतिरिक्त धन का संचय करें। आपकी धर्मपत्नी का स्वास्थ्य खराब हो सकता है जिसमें भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। आपके दाम्पत्य जीवन में सामान्य उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। पंचम भाव का शनि संतान सुख में कमी कर सकता है। ऐसे में अपने बच्चों के साथ मधुर संबंध बनाना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। 17 अप्रैल के बाद षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से मातुल पक्ष के लोगों के साथ आपके संबंध मधुर होंगे।

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

आपको बड़े भाईयों का अच्छा सहयोग मिलेगा।

गुरु के गोचर के बाद आपके घरेलू वातावरण में अनुकूलता आएगी। परिवार के सभी लोगों का सहयोग मिलेगा। परिवार में सुख-शान्ति का वातावरण बनेगा। तृतीय स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी।

संतान

वर्ष के प्रारम्भ में संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। पंचमस्थ शनि आपके बच्चे के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है जिससे उसकी शिक्षा व उन्नति में रुकावटें आ सकती हैं। इस समयान्तराल में गर्भवती स्त्रियों को बहुत सावधान रहना चाहिए।

मई के बाद अचानक आपके बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार होगा और उनकी उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। यदि आपकी संतान विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है। आपके दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। लग्नस्थ राहु के प्रभाव से स्वास्थ्य संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान होते रहेंगे। इस समय के अंतराल में दवा से अधिक दुआ आपके लिए लाभप्रद रहेगी। 17 अप्रैल के बाद षष्ठस्थ शनि ग्रह के फलस्वरूप आपका स्वास्थ्य अनुकूल होना शुरू हो जाएगा। अच्छे स्वास्थ्य लिए खान-पान एवं दिनचर्या भी सही रखेंगे जिससे आपके स्वास्थ्य में अनुकूलता बनी रहेगी।

23 सितम्बर के बाद द्वादशस्थ गुरु के प्रभाव से मोटापा एवं लीवर जनित बीमारियों से परेशानी हो सकती है। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरूरी होगा। सुबह-सुबह व्यायाम करना या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा नहीं तो आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ प्रतियोगिता परीक्षा के लिए अच्छा नहीं रहेगा। आलस्य की भावना आपकी उच्च शिक्षा में व्यवधान डाल सकती है। व्यावसायिक व्यक्तियों का समय सामान्य रहेगा। विदेशी भाषा सीखने के लिए यह समय बहुत अच्छा है।

शनि एवं गुरु के गोचर के बाद समय काफी उत्तम हो जाएगा। आप सारे शत्रुओं को परास्त कर अपने करियर में आगे रहेंगे। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे। बेरोजगार लोगों को इच्छित नौकरी मिल सकती है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में ही आपकी विदेश यात्रा होगी। छोटी यात्राएं तो होती रहेंगी। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए अच्छा योग बन रहा है।

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

मई के बाद आप ज्यादातर यात्रा पर ही रहेंगे दूर की यात्राएं अधिक होंगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण हो सकता है। इन सब यात्राओं से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप दान-पुण्य करेंगे। 1 मई से आपकी अपने इष्टदेव में भक्ति और प्रगाढ़ होगी। आप अपनी धर्मपत्नी के साथ घरेलू सुख-शान्ति के लिए कोई विशेष पूजा पाठ संपन्न करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पुजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें और काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।



SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

वार्षिक फलादेश - 2031

इस वर्ष वृष राशि के शनि छटे भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में वृश्चिक राशि के राहु द्वादश भाव में रहेंगे और 9 अगस्त को तुला राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में वृश्चिक राशि के गुरु द्वादश भाव में रहेंगे और 17 फरवरी को धनु राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 14 जून को वृश्चिक राशि एवं द्वादश भाव में गोचर करेंगे और फिर मार्गी होकर 15 अक्टूबर को धनु राशि एवं लग्न स्थान में आ जाएंगे। 4 जनवरी से 15 अगस्त तक मंगल वक्री होकर तुला राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे। 2 अगस्त से 15 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ व्यावसायिक उन्नति के साथ होगा। व्यक्तिगत संबंधों में भी सुधार आएगा। जीवन के हर क्षेत्र में आपको सफल परिणाम देखने को मिलेंगे। अधिकारी व वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। 18 फरवरी के बाद आपके व्यवसाय में कई लाभकारी अवसर मिलेंगे। यदि आप साझेदारी में हैं तो अच्छा लाभ होगा और आपको मित्र का पूरा सहयोग मिलेगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को कार्यस्थल पर ही मान सम्मान मिलेगा।

द्वादशस्थ राहु के कारण गुप्त शत्रु आपके कार्यों में रुकावटें डालने की कोशिश करेंगे परन्तु आपके पराक्रम के डर से कुछ कर नहीं पाएंगे। 8 अगस्त के बाद आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे और उसमें आपको सफलता प्राप्त होगी।

धन संपत्ति

यदि वर्ष के प्रथम दो माह छोड़ दिए जाएं तो पूरा वर्ष आपके लिए अनुकूल रहेगा। धनागम में निरन्तरता होने के कारण आपकी आर्थिक वृद्धि होगी जिससे आपके पुराने चले आ रहे सारे कर्जों से मुक्ति मिल सकती है। द्वादशस्थ राहु के कारण कुछ चुनौतियां आपके सामने आ सकती हैं।

8 अगस्त के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। अचानक आय के स्रोत खुलेंगे। रुके हुए या फंसे हुए पैसे आने शुरू हो जाएंगे। 15 अक्टूबर से गुरु ग्रह का गोचर द्वादश स्थान में हो रहा है। उस समय आपके आर्थिक क्षेत्र में उतार-चढ़ाव की स्थिति बन सकती है। इसलिए आपको आर्थिक मामलों में विशेष सावधानी से काम लेना चाहिए।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बना रहेगा। आपके मातुल पक्ष के लोगों के साथ समन्वय मधुर होंगे। आपके माता-पिता के लिए यह समय बहुत शुभ रहेगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद धर्मपत्नी के साथ संबंधों में मधुरता बढ़ेगी। भाई बहनों

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

के साथ आपका संबंध अच्छा रहेगा। परिवार में मांगलिक कार्य होते रहेंगे। सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आपके विरोधी शान्त होंगे।

संतान

वर्ष के प्रथम दो माह छोड़ दिए जाएं तो पूरा साल संतान के लिए अच्छा रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति के अच्छे योग बन रहे हैं। शिक्षा के क्षेत्र में उनकी रुचि बढ़ेगी।

आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय बहुत अच्छा है। उसका विवाह भी हो सकता है। 15 अक्टूबर से अपने बच्चों पर ज्यादा ध्यान देना होगा नहीं तो गलत संगत में पड़ सकते हैं, जो कि उनकी उन्नति में बाधा उत्पन्न कर सकती है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्षारम्भ सामान्य रहेगा। द्वादश स्थान का गुरु आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे। मधुमेह रोगियों को ज्यादा परहेज की आवश्यकता है। गुरु के जल तत्व राशि में होने के कारण कफ या पेट संबंधित परेशानी का सामना करना पड़ सकता है परन्तु 18 फरवरी के बाद गुरु का गोचरीय प्रभाव लग्न स्थान में होने से स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा।

छठे स्थान के शनि आपके अंदर रोगप्रतिरोधक शक्ति का विकास करेंगे जिससे आप स्वस्थ बने रहेंगे परन्तु 15 अक्टूबर के बाद गुरु ग्रह का गोचर फिर से प्रतिकूल हो रहा है। उस समय आप छोटी-मोटी मौसमजनित बीमारी या सर्दी-जुखाम से परेशान हो सकते हैं। इसलिए उस समय के अंतराल में सावधानी बरतना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। व्यावसायिक व्यक्तियों को अच्छा लाभ होगा। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए 18 फरवरी के बाद समय श्रेष्ठ है। छठे स्थान का शनि इच्छित प्रतियोगिता में सफलता प्राप्त करा सकता है।

8 अगस्त से समय बहुत अच्छा हो रहा है। उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल सकता है। प्रतियोगिता परीक्षार्थी अपने लक्ष्य में अवश्य सफल होंगे। जो जातक रोजगार की तलाश में हैं उनको मनोनुकूल नौकरी की प्राप्ति होगी।

यात्रा-तबादला

18 फरवरी के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। इस समय में आपकी यात्रा अधिक सुखद व मनोरंजनात्मक रहेगा। इस यात्रा के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

15 अक्टूबर को द्वादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं और विदेशी संपर्कों से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष आप ईश्वर भक्ति, योग, तीर्थाटन, गुरु भक्ति या गुरु दीक्षा लेने जैसी गतिविधियों में रुचि लेने के अतिरिक्त पूजा-पाठ, मंत्र जाप तथा यज्ञ आदि शुभ कर्म अधिक करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- राहु ग्रह का मन्त्र पाठ करें या शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।



SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

वार्षिक फलादेश - 2032

वर्षारम्भ में शनि वृष राशि एवं छठे भाव में होंगे और 31 मई को मिथुन राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। तुला राशि के राहु एकादश भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में धनु राशि केगुरुलग्न स्थान में रहेंगे और 5 मार्च को मकर राशि एवं द्वितीय भाव में गोचर करेंगे और वक्री होकर 12 अगस्त को धनु राशि एवं लग्न स्थान में आजाएंगे और पुनः मार्गशीर्ष होकर 23 अक्टूबर को मकर राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक स्तर के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत हितकारी होगा। आपको प्रतीत होगा कि आपके कुछ सपने अभी भी अधूरे हैं और इसलिए आप सपनों को पूरा करने के लिए अथकपरिश्रम करेंगे और सफल होंगे। ग्रहगोचर अनुकूल होने के कारण ऑफिस में आई किसी भी समस्या का समाधान निकाल कर अपने अधिकारियों की नजरों में अच्छे बने रहेंगे।

12 अगस्त के बाद अचानक आपके कार्यों में उन्नति होगी। आपके कार्य व्यवसाय में पत्नी का पूरा सहयोग मिलेगा। अपने मित्र के साथ मिलकर कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे और उस काम में आपको अच्छा लाभ मिलेगा।

धन संपत्ति

वर्ष का पूर्वार्द्धआर्थिक उन्नति के लिए श्रेष्ठतम रहेगा। आय के स्रोत खुलेंगे। रुके हुए या फंसे हुए धन की प्राप्ति होगी निवेश करने के लिए भी यह समय एकदम उपयुक्त होगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। संचित धन में वृद्धि होगी।

12 अगस्त के बाद अचानक आर्थिक स्थितिमें वृद्धि होगी। व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी। धन संचित करने में आपके जीवनसाथी का मुख्य सहयोग होगा। पुराने चले आ रहे कर्ज इत्यादि से मुक्ति मिलेगी। धार्मिक व मांगलिक कार्यों में आप खुले हाथों से व्यय करेंगे। अपने पारिवारिक सुख सुविधाओं पर अधिक खर्च करेंगे।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का पूर्वार्द्ध पारिवारिक वातावरण के लिए उत्तम रहेगा। आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा।

मई के बाद चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी माता के लिए अच्छा नहीं है। आपकी धर्मपत्नी के स्वास्थ्य अनुकूल नहीं होने के कारण पारिवारिक माहौल अनुकूल नहीं रहेगा। परिवार के कुछ लोगों का बर्ताव आपको अच्छा नहीं लगेगा। आप अपनी सहनशक्ति बढ़ाएं और बुद्धिविवेक के द्वारा पारिवारिक स्थिति अनुकूल बनाने की कोशिश करें।

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

आप सामाजिक गतिविधियों में कम ही भाग लेंगे।

संतान

यह वर्ष संतान के लिए श्रेष्ठ रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। आप अपने बच्चों से जितनी अपेक्षा रखते हैं वे उससे भी अच्छा करेंगे। संतान के लिए यह उत्तम समय चल रहा है।

12 अगस्त के बाद बच्चों के साथ प्रेम संबंधों में वृद्धि होगी जिससे आपके घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल बना रहेगा। पूरा साल आप तंदुरुस्त और सेहतमंद महसूस करेंगे क्योंकि लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपके अन्दर उत्साहवर्धक ऊर्जाओं की वृद्धि होगी। आप अपनी दिनचर्या में नयी गतिविधियों को शामिल करेंगे जैसे कि जिम जाना या सुबह-सुबह टहलने जाना।

मई के बाद समय थोड़ा प्रभावित हो रहा है। आप आने अन्दर धैर्य बनाए रखें व कार्य के प्रति एकाग्रता बनाए रखें एवं स्वास्थ्य पर ध्यान दें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता मिलने का पूर्ण योग बन रहा है। व्यावसायिक शिक्षा व तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने वालों के लिए यह समय श्रेष्ठ है। जो व्यक्ति अभी नौकरी के तलाश में हैं उनको मनोनुकूल नौकरी की प्राप्ति होगी।

मई के बाद समय कुछ प्रभावित हो रहा है। अपने मन को लक्ष्य के प्रति केन्द्रित कर तैयारी करते रहें क्योंकि अभी की मेहनत आने वाले समय में काम आएगी और उस समय आप अपने लक्ष्यको प्राप्त करेंगे।

यात्रा-तबादला

नवम पर गुरु की दृष्टि के कारण लम्बी यात्रा होगी। धार्मिक यात्रा के भी प्रबल योग बन रहे हैं। व्यावसायिक व्यक्तियों की व्यवसाय से संबंधित यात्राएं होती रहेंगी। वर्ष के उत्तरार्द्ध में नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा।

मई के बाद यात्रा करते समय या वाहन चलाते समय सावधानी बहुत जरूरी है। क्योंकि लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से वाहन दुर्घटना या यात्रा के अंतराल में चोरी होने के प्रबल संकेत बन रहे हैं। 12 अगस्त के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है।

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी जिसके चलते आप पूजा, पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान अधिक करेंगे।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।
- आर्थिक उन्नति के लिए लक्ष्मी जी पूजा करें या संतोषी का व्रत व उपासना आपके लिए लाभप्रद रहेगी।
- गणेश जी के मन्त्र का पाठ करें।



SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

वार्षिक फलादेश - 2033

इस वर्ष शनि मिथुन राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे। 30 जनवरी तक राहु तुला राशि एवं एकादश भाव रहेंगे उसके बाद कन्या राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। 18 मार्च तक गुरु मकर राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे उसके बाद कुम्भ राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। 24 मार्च से 8 अक्टूबर तक मंगल वक्री होकर धनु राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक रूप से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में रोजी-रोटी के नये आयाम तलाशने का आप प्रयास करेंगे जिसमें आपको सफलता भी मिलेगी। रचनात्मक कार्यों के प्रति आपका रुझान बढ़ेगा। सप्तमस्थ शनि के प्रभाव से व्यापारिक क्षेत्र में उन्नति व आर्थिक लाभ होंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को जल्दवबाजी में कोई निर्णय नहीं लेने चाहिए। किसी प्रकार का परिवर्तन या बदलाव करने से पहले उस पर विशेष ध्यान दें। नहीं तो आने वाले समय के लिए यह निर्णय अच्छा नहीं होगा।

18 मार्च से सप्तमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि व्यापारिक व्यक्तियों के लिए अत्यधिक शुभ हो रही है। यह समय आपके व्यापार में कुछ उपलब्धियां लेकर आएगा। यह उपलब्धि किसी नए रोजगार, पदोन्नति या किसी व्यावसायिक क्लाइंट के साथ एक सफल योजना के रूप में भी हो सकती है। साझेदारी में काम करने वाले व्यक्तियों को इच्छित लाभ होगा और आप अपने साझेदार से संतुष्ट भी रहेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष उत्तम रहेगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। व्यापारिक अनुकूलता के कारण संचित धन में वृद्धि होगी जिससे पुराने चले आ रहे ऋण इत्यादि से मुक्ति मिलेगी। यदि आप धन निवेश करना चाह रहे हैं तो यह समय आपके लिए शुभ है। फिर भी निवेश करने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी व्यक्तियों से सलाह अवश्य लें।

18 मार्च के बाद समय और भी अच्छा हो रहा है। फंसे हुए धन या रुके हुए धन की प्राप्ति होगी। आपके परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे। उसमें आप धन व्यय करेंगे। साथ ही लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि यदा-कदा आपको मानसिक रूप से अशान्त कर सकती है। परंतु इसका सामान्य कार्य-कलापों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। उत्साह एवं पराक्रम के साथ अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में तत्पर रहेंगे। इस वर्ष वाहन क्रय-विक्रय व भूमि क्रय-विक्रय करते समय सावधान रहें क्योंकि चतुर्थ स्थान पर शनि एवं राहु ग्रह की युति अच्छी नहीं होती।

घर-परिवार, समाज

द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से पारिवारिक वातावरण अनुकूल रहेगा। परिवार

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

में एक-दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। पूरे परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। 18 मार्च से आपके छोटे भाईयों के लिये समय बहुत अच्छा हो रहा है। आपके धर्मपत्नी के साथ संबंध मधुर होंगे। सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे। सामाजिक उत्थान या सामाजिक कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य भी संपन्न करेंगे।

आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी, जिससे परिवार में खुशी का माहौल बनेगा। आपके परिवार में मांगलिक कार्य भी अधिक होंगे। यदि आप अविवाहित हैं तो इस वर्ष विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा। आपके बच्चे विवेक व बुद्धि से अपनी उन्नति के मार्ग बनाएंगे। पंचम स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि आपके बच्चों को आलसी बना सकती है। उनका रहन सहन व दिनचर्या खराब कर सकती है तथा उनकी शिक्षा दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है। अतः आपको उनकी दिनचर्या पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपके दूसरे बच्चे की उन्नति होगी और उसके साथ संबंधों में मधुरता आएगी। यदि वह विवाह के योग्य हैं तो इस वर्ष अवश्य विवाह हो जाएगा।

स्वास्थ्य

यह वर्ष आपके स्वास्थ्य के लिए बहुत अच्छा नहीं है। लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से कुछ न कुछ परेशानी बनी रहेगी। मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान होते रहेंगे। यदि पहले से किसी लम्बी बीमारी से परेशान हैं तो परहेज की ज्यादा आवश्यकता है। नहीं तो आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है।

ऐसे में अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए नियमित व्यायाम या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। कुछ समय ऐसा भी आएगा जब आप खुद को थका हुआ महसूस करेंगे। परन्तु घबराने की कोई बात नहीं है, क्योंकि कोई स्वास्थ्य संबंधित बड़ी समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः आप तनाव व चिंता मुक्त रहें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर व प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। 18 मार्च के बाद भाग्य का सहयोग पूर्ण रूप से मिलने के फलस्वरूप आप अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। विद्यार्थियों का नए-नए तकनीकी विषय की ओर रुझान होगा। मैनेजमेंट, प्रशासन, शिक्षण से जुड़े लोगों को रिसर्च व ट्रेनिंग के सिलसिले में विदेश जाने का मौका मिल सकता है।

एकादशस्थ राहु के प्रभाव से अचानक ही आपको सफलता प्राप्त होगी। जो व्यक्ति व्यापार में अपना करियर बनाना चाहते हैं उनके लिए यह वर्ष बहुत ही शुभ है।

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

यात्रा-तबादला

यात्रा के लिए यह वर्ष आनन्ददायक रहेगा। इच्छित सभी यात्राओं का भरपूर लाभ उठाएंगे। 18 मार्च के बाद छोटी-मोटी यात्राओं के साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप धार्मिक तीर्थ यात्रा भी करेंगे।

व्यवसाय से संबंधित आपकी अनेक यात्राएं होंगी और सभी यात्राओं से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके घर से दूर भी हो सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

अधिक व्यस्तता के कारण धार्मिक कार्य कम ही करेंगे। लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि आपके दैनिक पूजा पाठ को भी प्रभावित कर सकती है। अष्टम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से तन्त्र, मन्त्र, यन्त्र इत्यादि के प्रति आपका आकर्षण बढ़ेगा। 18 मार्च से समय बहुत ही शुभ हो रहा है। उस समय आपका दैनिक पूजा पाठ नियमित रूप से होगा। धार्मिक कृत्य व दूसरों की सहायता करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। आप मानसिक रूप से संतुष्ट होंगे।

- मंगलवार के दिन हनुमानजी को लड्डू का भोग लगाकर गरीबों में प्रसाद वितरित करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- पारद शिवलिंग अपने घर में स्थापित कर, सपरिवार उसका दर्शन करें। इसके प्रभाव से सभी दोषों का नाश होगा और आपके परिवार में सुख समृद्धि का वास होगा।

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

वार्षिक फलादेश - 2034

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि मिथुन राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे और 13 जुलाई को कर्क राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। 12 अगस्त से पहले राहु कन्या राशि एवं दशम भाव में रहेंगे और उसके बाद सिंह राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कुम्भ राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे और 28 मार्च को मीन राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। व्यापार में आपको नए भागीदार भी मिल सकते हैं। व्यापार में हजारों व्यवधान आने के बावजूद भी आपको मुनाफा प्राप्त होगा, साथ ही कारोबार का भी विस्तार होगा। सरकारी सौदे और समझौतों से आपका लाभ दोगुना होने वाला है। आपको कुछ नए निवेशक भी मिलेंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है। यह परिवर्तन आपके लिए लाभप्रद रहने वाला है।

13 जुलाई से अष्टम भाव में शनि ग्रह का गोचर आपके व्यावसायिक जीवन में थोड़े बहुत झटके ला सकता है। आपके कार्यों में गुप्त शत्रु या विरोधियों द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा उन शत्रुओं पर भी विजय प्राप्त कर लेंगे। फिर भी बिना किसी पर विश्वास किये अपना कार्य करते रहें।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। लंबे समय से रुका हुआ धन वापस मिलने का योग है। नौकरी या व्यापार में नए प्रयोग से बचें। सप्तमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि किसी स्त्री के माध्यम से लाभ या धनागमन का संकेत दे रही है। आयात-निर्यात करने वालों व्यक्तियों को अच्छा लाभ मिलेगा। एकादस्थ राहु के कारण आपके आय के स्रोतों में वृद्धि होगी। आर्थिक उन्नति के बहुत सारे अवसर मिलेंगे। पुराने चले आ रहे ऋण इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है।

13 जुलाई के बाद कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे, जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। अष्टमस्थ शनि के कारण धोखा या धन हानि का योग बन रहा है। अतः आपको शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाना होगा। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। माता-पिता की बीमारी में भी आपका धन खर्च हो सकता है। अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं नहीं तो आपका अनावश्यक खर्च बढ़ सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष के पूर्वार्द्ध में अनावश्यक तनाव और विवाद की स्थिति

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

बनेगी। शत्रु भी सर उठायेंगे और उनके कारण आप अशान्त रह सकते हैं। साथ ही करीबी लोगों का उतना साथ नहीं मिलेगा जितना आप उम्मीद लगाये बैठे हैं। कोई साथ का व्यक्ति जो आपके कार्यस्थल से सम्बन्धित है धोखा दे सकता है या उसके कारण आपको कुछ परेशानी उठानी पड़ सकती है। जीवन साथी का सहयोग तो मिलेगा परन्तु वैचारिक मतभेद बहुत अधिक रहेगा जिसके कारण आप बहुत असहज महसूस कर सकते हैं।

वर्ष का उत्तरार्द्ध पारिवारिक वातावरण के लिए बहुत ही शुभ रहने वाला है। परिवार में एक-दूसरे के साथ भवनात्मक लगाव में वृद्धि होगी। आपके माता-पिता के लिए समय काफी शुभ है। परन्तु सास ससुर को शारीरिक कष्ट होगा। नाम प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। इस समय के अंतराल में समाज में आपका एक अगल व्यक्तित्व होगा।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। आपके बच्चे अपने बौद्धिक बल के द्वारा उन्नति करेंगे। दूसरी संतान के लिए वर्ष का प्रथम भाग बहुत ही शुभ है। बच्चों के साथ प्रेम समन्वय में वृद्धि होगी। दूसरी संतान यदि विवाह के योग्य है तो विवाह हो सकता है।

13 जुलाई के बाद पंचम स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी दे सकती है। जिससे उनकी शिक्षा दीक्षा भी प्रभावित होगी। अतः इस समय के अंतराल में आपको उनके स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए।

स्वास्थ्य

लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि स्वास्थ्य की समस्या उत्पन्न कर सकती है, जिससे आप रक्तचाप, मधुमेह, एलर्जी या मस्तिष्क सम्बन्धी किसी बीमारी से परेशान हो सकते हैं। अतः अत्यधिक सावधानी बरतें और अपना ख्याल रखें। मानसिक तनाव बढ़ सकता है। अनावश्यक यात्राएं होंगी और उसमें भी शारीरिक कष्ट की सम्भावना रहेगी। शारीरिक व्याधि दूर करने के लिए अन्न दान कर सकते हैं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपका स्वास्थ्य और ज्यादा प्रभावित हो रहा है। व्यापारिक व्यस्तता के कारण आप समय पर अपना खान-पान नहीं कर पाएंगे। जिसके परिणामस्वरूप आपके स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है। बेहतर होगा कि आप अपने दैनिक जीवन में भोजन का अनुशासन बनाये रखें व लापरवाही ना करें। किसी भी मुद्दे को लेकर आवश्यकता से ज्यादा चिंता न करें। सुबह जल्दी उठ कर टहलना या व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार परिश्रम करना पड़ेगा। नौकरी इच्छित व्यक्तियों को 28 मार्च के बाद नौकरी में अवसर मिलेंगे। माध्यमिक शिक्षा ग्रहण कर रहे शिक्षार्थियों के लिये यह समय काफी शुभ है।

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं या विदेशी भाषा सीखना चाहते हैं। तो वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके लिए श्रेष्ठ है। यदि आप अपने शत्रुओं को परास्त कर उनसे आगे निकलना चाहते हैं, तो आपको नीतियों में बदलाव करना पड़ेगा।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में ही छोटी-मोटी यात्राओं के साथ आपकी लम्बी-लम्बी यात्राएं भी होंगी। धार्मिक स्थलों की यात्रा करने का अवसर प्राप्त होगा। 28 मार्च के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तर आप के लिए बहुत अनुकूल रहेगा।

अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्ति अपनी जन्म भूमि की यात्रा करेंगे। आप अपने परिवार के साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा का आनन्द प्राप्त करेंगे।

वर्ष के प्रारम्भ में आप तीर्थ यात्रा व धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। मन्दिर निर्माण, धार्मिक उत्सव व भण्डादि कार्यों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप अपने कार्य व्यवसाय पर अधिक ध्यान देंगे। कर्म ही पूजा है, इस वाक्य को चरितार्थ करेंगे।

- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें एवं शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।
- सातमुखी रुद्राक्ष शनिवार की प्रातः धारण करें। आपको शनि की शुभता प्राप्त होगी।
- अपने घर में पारद शिव की स्थापना कर सुबह-सुबह उसका दर्शन करें एवं निम्न मन्त्र का पाठ करें-

ॐ नमः शिवाय।

महादशा :- गुरु
(13/01/2016 - 13/01/2032)

आपकी कुण्डली में गुरु की महादशा 13/01/2016 को आरम्भ और 13/01/2032 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 16 वर्ष है।

आपकी जन्म कुण्डली में गुरु दशम भाव में स्थित है तथा दशम भाव सम्मान, नाम और यश आचरण पद और प्रतिष्ठा, लक्ष्य और अधिकार, कर्तव्य, उन्नति, धार्मिक उत्सव, उच्च पद, धर्म स्थलों की यात्रा, राज सम्मान, और वस्तुओं का द्योतक है।

गुरु स्वभावतः

एक शुभ ग्रह है तथा द्वितीय, चतुर्थ तथा दशम भावों को देख रहा है और इन भावों पर शुभ प्रभाव डाल रहा है। सोलह साल की यह अवधि आपके लिए आनन्द और समृद्धि की होगी।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी गुरु दशम भाव में स्थित है तथा द्वितीय भाव और चतुर्थ भाव के अतिरिक्त षष्ठ भाव (शत्रु तथा रोग भाव) को देख रहा है जिसके फलस्वरूप आपके साथ तो कोई रोग या दुर्घटना नहीं होगी।

अर्थ-संपत्ति :

गुरु दशम भाव में स्थित है और प्रतिष्ठा और सम्मान के भाव को बली कर रहा है। दशम भाव से, जो एक केंद्र है, इसकी दृष्टि द्वितीय अर्थात् धनभाव पर (चतुर्थ तथा षष्ठ भाव के अतिरिक्त) है जिसके फलस्वरूप आपको चल तथा अचल संपत्ति अर्जित करने का पूर्ण अवसर इस दशा काल में मिलेगा। आप भोग-विलास की वस्तुएं खरीदेंगे।

व्यवसाय :

गुरु दशम भाव में स्थित है और उसको बली कर रहा है। आप, जो कुछ शुरू करेंगे, उसमें सफल होंगे।

आपको नाम और यश की प्राप्ति होगी। नौकरी में पदोन्नति होगी और आपको आदर और सम्मान मिलेगा।

पारिवारिक जीवन :

एक केन्द्र दशम भाव से गुरु की दृष्टि दूसरे केन्द्र चतुर्थ भाव अर्थात् सुख-स्थान पर है जिसके फलस्वरूप आपका पारिवारिक जीवन सुखी तथा उत्साहपूर्ण होगा। आपके जीवन साथी भी आपका पूर्ण सहयोग करेंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

आपकी शिक्षा उत्तम होगी ।



SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

अंतर्दशा :- गुरु - शुक्र
(26/11/2023 - 27/07/2026)

आपके लिए बृहस्पति महादशा 13/01/2016 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में पांचवी अंतर्दशा शुक्र की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 26/11/2023 को प्रारंभ होकर 27/07/2026 के समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, सुख और कला का कारक है।

इस अवधि में आप सुखी रहेंगे। परिवारजनों और मित्रों से उत्तम संबंध रहेंगे। प्रसन्न और संतुष्ट होंगे। किस्मत चमकेगी; धनी बनेंगे। शिक्षा उत्तम होगी। अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। प्रभाव में वृद्धि होगी। प्रसिद्धि और सम्मान मिलेंगे। समाज में रुतबा बढ़ेगा, कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी। उत्तम मित्र होंगे, नये मित्र बनेंगे जो लाभकारी रहेंगे।

आपके जीवनसाथी सफल और लोकप्रिय होंगे; आय अच्छी होगी। आपके पिता को साझेदारी से लाभ होगा। माता प्रसन्न रहेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए विभिन्न माध्यमों से लाभ, शत्रुओं और स्पर्धियों पर विजय का संकेत है।

आपकी संतान को परीक्षा में सफलता के लिए परिश्रम करना होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो खर्चे बढ़ सकते हैं।

अगर आप सेवारत हैं तो आय अच्छी होगी; प्रभावशाली लोग सहायता करेंगे। परामर्शदाताओं को साझेदारी से लाभ होगा। व्यापारी खूब धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। किसी भी काम में अति न करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए लक्ष्मीजी की उपासना करें।

अंतर्दशा :- गुरु - सूर्य
(27/07/2026 - 15/05/2027)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 13/01/2016 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 9 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 27/07/2026 को प्रारंभ होकर 15/05/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य आत्मा, पिता, कार्यक्षमता और स्वास्थ्य का कारक है।

इस अवधि में आपका घर सुखी रहेगा, फिर भी आप थोड़ा सावधान रहें और घर में ज्यादा कठोर व्यवहार न करें, अन्यथा संबंधों में कटुता आ सकती है। मेहमानों से घर में हंसी-खुशी का वातावरण रहेगा। मित्रों की संख्या पर्याप्त होगी। भूमि क्रय कर सकते हैं। उत्तम आवास और वाहन सुख रहेगा। शिक्षा उत्तम होगी। प्रसिद्धि, प्रोन्नति और कार्यों में सफलता का संकेत है। पिता और उच्चपदस्थ व्यक्तियों से लाभ हो सकता है।

आपके जीवनसाथी को कार्यों में सफलता मिलेगी। आपके पिता के जीवन में अप्रत्याशित परिवर्तन आ सकता है। माता के आत्मविश्वास में वृद्धि होगी, सफल रहेंगी, जीवन

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

में प्रगति होगी। आपके भाई-बहनों के लिए धनार्जन, कार्यों की समाप्ति, प्रसन्नता, उत्तम स्वास्थ्य और शत्रुओं के नाश का संकेत है।

आपकी संतान को पढ़ाई में अधिक परिश्रम करना चाहिए। अगर वे कार्यरत हैं तो खर्चे बढ़ेंगे, यात्राएं होंगी।

अगर आप सेवारत हैं तो धनार्जन होगा, उच्चपद मिलेगा, सरकार से लाभ होगा। परामर्शदाताओं को साझेदारी से लाभ होगा। व्यापारी खूब धन कमाएंगे और सफलता प्राप्त करेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। अधिक उत्तेजना और अत्यधिक परिश्रम से बचें। अरिष्ट से बचाव के लिए सूर्य गायत्री मंत्र का जाप करें।

अंतर्दशा :- गुरु - चन्द्र
(15/05/2027 - 13/09/2028)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 13/01/2016 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा चंद्रमा की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 4 मास है। आपके लिए यह 15/05/2027 को आरंभ होकर 13/09/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र सुंदरता, स्वास्थ्य, मानसिक स्वास्थ्य और भावनाओं का कारक है।

इस अवधि में आपका पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा। परिवार में हंसी-खुशी का वातावरण रहेगा। आप कुनबे के प्रमुख बने रहेंगे। धन का संचय होगा। मृदुवाणी से लोग प्रभावित होंगे। राजनीति में सफल हो सकते हैं। शिक्षा उत्तम होगी। अध्यात्म में दिलचस्पी ले सकते हैं। विरासत से लाभ हो सकता है। अप्रत्याशित धन प्राप्त हो सकता है। ज्ञान-विज्ञान में रुचि होगी। जीवनसाथी से धन का लाभ हो सकता है।

आपके पिता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। माता के बहुत से मित्र होंगे। आपके भाई-बहनों के लिए यात्रा, स्पर्धियों के कारण समस्याएं, जीवन में खुशी और उत्तम शिक्षा का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो सफल रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो भाग्यशाली रहेंगे। परामर्शदाताओं को अचानक लाभ और निवेश से धनागम होगा। व्यापारियों के कार्य में कुछ परिवर्तन हो सकता है।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। चेहरे और मुख की मामूली तकलीफ हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए सफेद वस्तुओं का दान दें।

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

**अंतर्दशा :- गुरु - मंगल
(13/09/2028 - 20/08/2029)**

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 13/01/2016 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में आठवीं अंतर्दशा मंगल की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 13/09/2028 को प्रारंभ होकर वद 20/08/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल साहस, शौर्य और आत्मविश्वास का कारक है।

इस अवधि में आपको साझेदारी से लाभ होगा; धनी और शक्तिशाली बनेंगे। व्यापार में लाभ होगा। पारिवारिक जीवन में मामूली तनाव हो सकता है। कार्यक्षेत्र में वांछित सफलता मिलेगी। स्वास्थ्य और कार्यक्षमता उत्तम रहेंगे, सफलता और प्रसन्नता मिलेगी, शिक्षा उत्तम होगी। कटुवचन बोलने से बचें। आप बुद्धिमान और कल्पनाशील हैं। स्वयं के परिश्रम से धनी बन सकते हैं।

आपके जीवनसाथी का आत्म-विश्वास बढ़ेगा। आपके पिता को निवेश से लाभ होगा। माता को अचल संपत्ति से आय होगी। आपके भाई-बहनों के लिए कार्यक्षेत्र में प्रगति, निवेश से लाभ, यात्रा, सफलता और उत्साह के कारण प्रसिद्धि का संकेत है।

आपकी संतान स्पर्धियों पर विजयी होगी; साख उत्तम होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो स्वस्थ और धनी होंगे; भाई-बहनों से संबंध उत्तम होंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो धनार्जन उत्तम रहेगा। परामर्शदाता भाग्यशाली रहेंगे, आय अच्छी होगी, प्रसिद्धि प्राप्त होगी। व्यापारी खूब धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए हनुमान चालीसा का पाठ करें।

**अंतर्दशा :- गुरु - राहु
(20/08/2029 - 13/01/2032)**

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 13/01/2016 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में नवीं अंतर्दशा राहु की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 4 मास 24 दिन है। यह 20/08/2029 को प्रारंभ होकर 13/01/2032 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक सुख, अचानक परिवर्तन और विदेशियों का कारक है।

इस अवधि में आपके खर्चे बढ़ सकते हैं; धनसंचय में बाधा आ सकती है। प्रगति में निराशा हो सकती है। नये मित्र बन सकते हैं। विदेश की यात्रा या वहां पर निवास संभव है। अध्यात्म में रुचि हो सकती है। मुकदमे में जीत हो सकती है। कार्यालय सुविधासंपन्न होगा। किरायेदार सहायता करेंगे। पालतू जानवरों से खुशी मिल सकती है। स्वास्थ्य और कार्यक्षमता उत्तम होने के कारण सब बाधाओं को पार कर लेंगे।

आपके जीवनसाथी का कार्यालय उत्तम होगा। आपके पिता को अचल संपत्ति प्राप्त

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

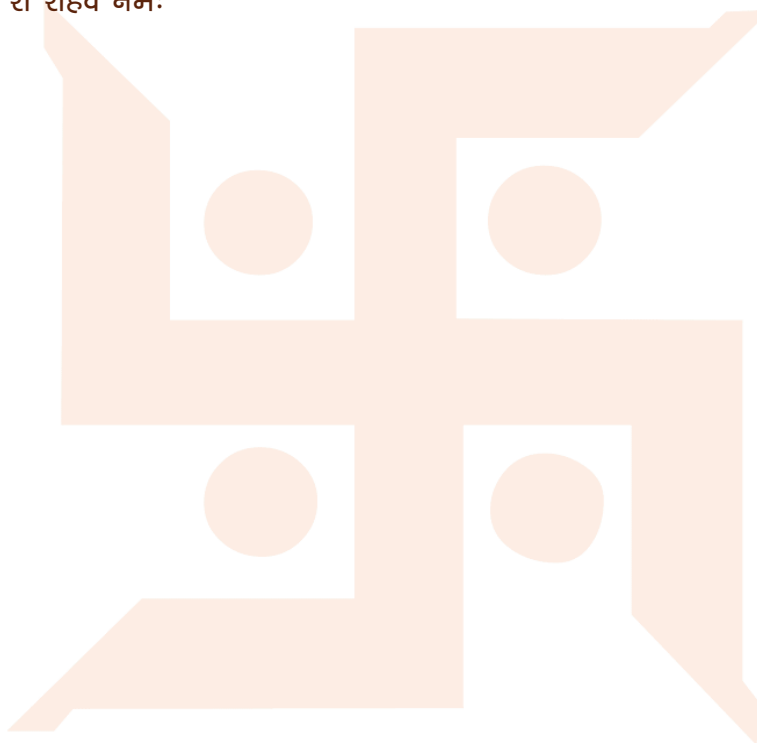
हो सकती है; घरेलू जीवन सुखी रहेगा। माता भाग्यशाली और धनी बनेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए कार्यक्षेत्र में सफलता और सौभाग्य का संकेत है।

आपकी संतान के जीवन में कुछ परिवर्तन या अप्रत्याशित घटना घट सकती है। अगर वे कार्यरत हैं तो अचानक लाभ या परिवर्तन हो सकता है, वसीयत और उपहार से धनागम हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो मिलजुल कर कार्य करने से लाभ होगा। परामर्शदाता उत्साह से पूर्ण और व्यस्त रहेंगे। व्यापारियों के कार्य में विस्तार होगा, कर्ज से मुक्ति मिलेगी।

स्वास्थ्य का ध्यान रखें। मामूली बीमारियों को अनदेखा न करें। अरिष्ट से बचाव के लिए राहु मंत्र का जाप करें।

ॐ रां राहवे नमः



SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

योग

मालव्य योग

स्वगेहतुङ्गाश्रयकेन्द्रसंस्थैरुच्चोपगैर्वाचनसूनुमुख्यैः ।
क्रमेण योगा रुचकाख्यभद्रहंसाख्यमालव्यशशाभिधानाः ॥
अस्थूलोष्ठोऽप्यविषमवपुर्नैव रक्ताङ्गसन्धि-
र्मध्ये क्षामः शशिधररुचिर्हस्तिनासः सुगण्डः ।
सद्दीप्ताक्षः समितिर्विदितो जानुदेशाप्रपाणि-
र्मालव्योऽयं विलसति नृपः सप्ततिर्वत्सराणाम् ॥
वक्त्रं त्रयोदशमिताङ्गुलमस्य दीर्घं
तिर्यग्दशाङ्गुलमितं श्रवणान्तरालम् ।
मालव्यसंज्ञनृपतिः ससुतो भुनक्ति
लाटांश्च मालवससिन्धुसुपरियात्रान् ॥

॥ मानसागरी ॥ अ.4/श्लोक 2, 9 1-2 ॥

यदि जन्मपत्रिका में स्वराशि या उच्चहोकर शुक्र केन्द्र में हो तो मालव्य योग बनता है ।

मालव्यनामक योग में समुत्पन्न जातक सर्वावयव सम्पन्न शरीरवाला, चन्द्रवत कान्तिवाला, युद्ध में मान रखने वाला, आजान बाहु (घुटनापर्यन्त बांह वाला) और दीर्घायु राजा होता है । मुख की लम्बाई 13 अङ्गुल एवं 10 अङ्गुल दोनों कानों के मध्य वाला होता है । लाट, मालवा, सिन्धु और परियात्र पर्वतीय देशों का प्रधान शासन अपने पुत्रों के साथ करता है ।

योग कारक ग्रह : शुक्र

योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण से घटित हो रहा है । फलस्वरूप आप उच्चकोटि के कानून विशेषज्ञ, राजनेता, इलेक्ट्रॉनिक्स विशेषज्ञ, संगीतज्ञ, अभिनेता, कलाकार, सिनेमा क्षेत्र में प्रसिद्ध, मीडिया में श्रेष्ठ, ज्योतिष के प्रति श्रद्धालु, एक्सपोर्ट अर्थात् निर्यात के क्षेत्र में ख्याति प्राप्त करने वाले व्यक्ति होंगे ।

वाशि योग

सूर्याद्व्ययगैर्वाशिर्द्वितीयगैश्चन्द्रवर्जितैर्वेशि ।
उत्कृष्टवचाः स्मृतिमानुद्योगयुतो निरीक्षते तिर्यक् ।
सर्वशरीरे पृथुलो नृपतिसमः सात्त्विको वाशौ ॥

॥ सारावली ॥ अ.14/श्लोक 1, 6 ॥

यदि जन्मकुंडली में सूर्य से द्वादश स्थान में चंद्रमा को छोड़कर अन्य ग्रह विद्यमान हो तो वाशि नामक योग बनता है ।

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

योग कारक ग्रह : बुध,शनि,सूर्य

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप उत्कृष्ट वाणी वाले, स्मरण शक्ति वाले, उद्यमी, तिरछी दृष्टि वाले, स्थूल शरीर वाले, राजा के समान व्यक्तित्व वाले तथा सात्विक प्रवृत्ति वाले होंगे।

अमलयोग

चन्द्राब्धोन्म्यमलाहवयः शुभखगैर्योगो विलग्नादपि ।

क्षमेशः स्यादमले धनी सुतयशः संपद्युतो नीतिमान् ।

॥ फलदीपिका ॥ अ. 6/श्लोक 19-20 ॥

यदि पत्रिका में लग्न या चंद्रमा से दशम स्थान में शुभ ग्रह हो तो अमला योग होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप आप भूमि के स्वामी, धनी, नीतिवान् पुत्र एवं संपत्ति से युक्त यशस्वी व्यक्ति होंगे।

अस्त्र योग

भावैः सौम्ययुतेक्षिततैस्तदधिपैः सुस्थानगैर्भास्वरैः

स्वोच्चस्वर्क्षगतैर्विलग्नभवनाद्योगाः क्रमाद्द्वादश ।

शत्रून् बलिष्ठान् बलवन्निगृह्य क्रूरप्रवृत्त्या सहितोऽभिमानी ।

व्रणाङ्किताङ्गश्च विवादकारी स्यादस्त्रयोगे दृढगात्रयुक्तः ॥

॥ फलदीपिका ॥ अ. 6 /श्लोक 44, 50 ॥

यदि जन्मपत्रिका में षष्ठ भाव का स्वामी अस्त न होकर स्वराशि या उच्च राशि में स्थित हो तथा श्रेष्ठ (उत्तम) स्थान में बैठा हो और षष्ठ भाव शुभ ग्रह से युक्त या निरीक्षित हो तो अस्त्र योग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,शुक्र

योग की संभावना : 96 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप अपनी शक्ति से बलवान्, शत्रुओं को परास्त करने वाले, क्रूर प्रवृत्ति वाले और अभिमानी होंगे। आप के शरीर के अवयव दृढ़ होंगे किन्तु शरीर में घाव के चिह्न से युक्त और झगड़ालू प्रवृत्ति के होंगे।

महादान योग

दानाधिपेन संदृष्टे लग्ने तन्नायकेपि वा ।

तस्मिन्केन्द्रत्रिकोणस्थे महादानकरो भवेत् ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

अ.7/भाव-9/श्लोक-45 ।।

यदि जन्मपत्रिका में लग्नेश पर या लग्न पर नवमेश की दृष्टि हो वह नवमेश भी केन्द्र या त्रिकोण में हो तो जातक महादानी होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,गुरु

योग की संभावना : 24 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप हाथी-घोड़ा दान, तुलादान तथा महादान करेंगे। आप महादानी होंगे।

सुनफा योग

सुनफा रविरहितैः वित्तसंस्थैः कैरववनबान्धवाद्विहगैः ।

श्रीमान् स्वबाहुविभवो बहुधर्मशीलः

शास्त्रार्थविद्बहुयशाः सुगुणाभिरामः ।

शान्तः सुखी क्षितिपतिः सचिवोऽथ वा स्यात् ।

सुतः पुमान् विपुलधीः सुनफाभिधाने ।।

॥ सारावली ॥ अ. 13/श्लोक 1, 4 ॥

यदि जन्मकुंडली में सूर्य को छोड़कर चंद्रमा से धनभाव में कोई ग्रह हो तो सुनफा योग बनता है।

योग कारक ग्रह : बुध,शनि,चंद्र

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप लक्ष्मीवान्, अपने परिश्रम से धनार्जन करने वाले, धार्मिक, यशस्वी, गुणी, शान्तप्रिय, सुखी, राजा या मंत्री होंगे।

सात्त्विक बुद्धि योग

शौर्याधिपे सौम्यान्विते सात्त्विकबुद्धियुक्तः ।

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.4/श्लो.-40

यदि जन्मकुंडली में तृतीयेश बुध से युक्त हो तो जातक सात्त्विक बुद्धि का होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,शनि

योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप सात्त्विक बुद्धि के प्राणी होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

कंठरोग योग

पापे तृतीये गलरोगमत्र वदन्ति मांघादियुते विशेषात् ।

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.4/श्लो.-47 ॥

यदि जन्मपत्रिका में तीसरे भाव में पाप ग्रह हो विशेषतः मांघंशादि युक्त हो तो कंठरोग होता है।

योग कारक ग्रह : शनि

योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको कंठ रोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

दीर्घायु भ्रातृ योग

॥ भारतीय ज्योतिष ॥ पृ.-285 ॥

यदि जन्मपत्रिका में तृतीय भाव में शुभग्रह हो तो दीर्घायु भाई होते हैं।

योग कारक ग्रह : बुध

योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके भाई दीर्घायु होंगी, ऐसा प्रतीत होता है।

उच्च प्रासाद (भवन) प्राप्ति योग

तृतीये सौम्यसंयुक्ते गृहेशे स्वबलान्विते ।
तदीशे बलसंपूर्णे हर्म्यप्राकारमण्डितम् ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.4/श्लो.-59 ॥

यदि जन्मपत्रिका में तीसरे भवन में शुभ ग्रह स्थित हो, चतुर्थेश अपने बल से पूर्ण हो तृतीये बलिष्ठ हो तो विशाल भवन प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : बुध

योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको महल (भवन) सुख प्राप्त होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

निष्कपट योग

हृदये शुभसंयुक्ते स्वोच्चमित्रगृहान्विते ।
शुभग्रहाणां क्षेत्रे वा निष्कापट्यं विनिर्दिशेत् ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.4/श्लो.-143 ॥

यदि जन्मपत्रिका में चतुर्थ स्थान में शुभ ग्रह अपने उच्च या मित्र के भवन में हो अथवा शुभ ग्रह की राशि में हो तो जातक निष्कपट होता है।

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

योग कारक ग्रह : शुक्र

योग की संभावना : 9 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप निष्कपट प्राणी होंगी, ऐसा प्रतीत होता है।

सुन्दर भवन प्राप्ति योग

तृतीये सौम्यसंयुक्ते गेहेशे स्वबलान्विते ।

लग्नेशे बलसंपूर्णे हर्म्ये प्राकारसंयुतम् ॥

॥ जातकपारिजात ॥ अ.12/श्लो.-148 ॥

यदि जन्मपत्रिका में तृतीय भाव में शुभ ग्रह हो, चतुर्थेश बलिष्ठ हो और लग्नेश पूर्ण बली हो तो जातक को सुंदर भवन प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,गुरु

योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको सुंदर भवन प्राप्त होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

वाहन योग

वाहनार्थतृतीयेषु भाग्यकर्मभवाधिपाः ।

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.4/श्लो.-177 ॥

यदि जन्मपत्रिका में सुख, लाभ एवं पराक्रम भाव में नवमेश, दशमेश एवं लाभेश हो तो जातक को वाहन प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,बुध,शुक्र

योग की संभावना : 1728 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको उत्तम वाहन सुख प्राप्त होगा ऐसा प्रतीत होता है।

बहुपुत्र योग

पुत्रस्थानपतौ तु वा नवमपे पुंवर्गे पुरुषग्रहेक्षितयुते जातस्तु पुत्राधिकः ।

॥ जातकपारिजात ॥ अ. 13/श्लो.-9 ॥

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश अथवा नवमेश पुरुष ग्रह के वर्ग में हो तथा पुरुष ग्रह से दृष्टिगत या युत हो तो बहुपुत्र योग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,सूर्य

योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको अनेक पुत्रों का सुख प्राप्त होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

एकपुत्र योग

पुत्रेशांशपतिः स्वभांशकगतो यद्येकपुत्रं वदेत् ।

॥ जातकपारिजात ॥ अ. 13/श्लो.-11 ॥

यदि जन्मपत्रिका में पंचम स्थान का स्वामी जिस नवांश में हो, उस नवांश का स्वामी निज नवांश में हो तो एक पुत्र योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल

योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको मात्र एक पुत्र का सुख प्राप्त हो ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यांशके सौम्यग्रहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे वा क्षयेऽथे ।

अक्लेशजातं मरणं नराणाम् ॥

॥ फलदीपिका-अ.14/श्लो.-21 ॥

यदि जन्मकुंडली में द्वादशेश सौम्यग्रह की राशि या सौम्य ग्रह के नवांश या सौम्य ग्रह के साथ स्थित हो तो विना पीड़ा की मृत्यु होती है।

योग कारक ग्रह : मंगल

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका मरण बिना क्लेश का होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

पुनर्जन्म योग

महीजोमही सम्प्रापयेत्प्राणिनः

सम्बन्धाद्व्ययनायकस्य कथयेत्तत्रान्तराशयंशतः ।

॥ फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23 ॥

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में मंगल हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में मंगल स्थित हो अथवा द्वादशेश मंगल से संबंध स्थापित करता हो तो जातक मरणोपरांत शीघ्र जन्म लेकर पृथ्वी पर आता है।

योग कारक ग्रह : मंगल

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत पुनर्जन्म लेकर पृथ्वी पर आएँगे। ऐसा प्रतीत होता है।

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

बहुभार्या योग

कुटुम्बकलत्रनाथाभ्यां समेतैर्ग्रहनायकैर्वा कलत्रसंख्यां प्रवदन्ति सन्तः ॥
॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.-6/श्लो.-14 ॥

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीयेश या सप्तमेश के साथ जितने ग्रह हों उतनी पत्नी होती हैं।

योग कारक ग्रह : बुध, शनि

योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो या दो से अधिक जीवनसाथी हो सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्यायोग

कलत्रेशे बहुगुणे तुङ्गवक्रादिहेतुभिः ।
बहुभार्यं नरं विद्यादुदयर्क्षगतेऽपि वा ॥
॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.-6/श्लो.-15 ॥

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश उच्च वक्र आदि बहुत गुणों से युक्त हो अथवा लग्नस्थ हो तो मनुष्य बहुत स्त्रियों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : बुध

योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके अधिक जीवनसाथी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

द्विविवाह योग

कारके पापसंयुक्ते नीचराश्यंशकेऽपि वा ।
पापग्रहेण संदृष्टे विवाहद्वयमादिशेत् ॥
॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.-6/श्लो.-19 ॥

यदि जन्मकुण्डली में सप्तमभाव कारक ग्रह पाप युक्त हो अथवा नीचराशि नीचांशक में पाप ग्रह से दृष्ट हो तो द्विविवाह योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र, सूर्य, राहु

योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप दो जीवन साथी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

विवाहोपरान्त भाग्योदय योग

भाग्यं विवाहत्परतो वदन्ति शुक्रस्तगे चोपचयान्विते वा ।

कुटुम्बमेतादृशभावयुक्ते लग्नेश्वरे वा शुभदृष्टियोगे ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.-6/श्लो.-62 ॥

जन्मपत्रिका में यदि शुक्र सप्तम में हो अथवा उपचय 3/6/11/10 स्थानों में हो अथवा द्वितीयस्थ हो अथवा लग्नेश इन भावों में से किसी भी स्थान में हो एवं शुभ ग्रह द्वारा निरीक्षित हो तो विवाहोपरान्त भाग्योदय होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,शुक्र

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका भाग्योदय विवाहोपरान्त होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

द्विभार्या योग

पापाः सप्तमे द्विभार्यः ।

॥ बृहद्योग रत्नाकर ॥ पृ. 303 ॥

यदि जन्मपत्रिका में सप्तम भाव में पाप ग्रह हो तो द्विभार्या योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल

योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके जीवन में दो जीवनसाथी आएंगे, अर्थात् आपके दो विवाह हो, ऐसा प्रतीत होता है।

गजकेसरी योग

‘‘केन्द्रस्थिते देवगुरौ शशाङ्काद्योगस्तदाहुर्गजकेसरीति ।

दृष्टे सितार्येन्दुसुतैः शशाङ्के नीचास्तहीनैर्गजकेसरीस्यात् ॥’’

॥ बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 1 ॥

चन्द्रमा से केन्द्र में गुरु हो तो गजकेसरी योग होता है और चन्द्रमा नीच अस्तादि में न गये हुये शुक्र, गुरु और बुध से देखा जाता हो तो भी गजकेशरी योग होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,चंद्र

योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में गजकेसरी योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप धनी, मेधावी, गुणी तथा राजप्रिय सम्मानित पुरुष होंगे।

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

काहल योग- प्रथम विधि

”अन्योन्यकेन्द्रग्रहगौ गुरुबन्धुनाथौ-
लग्नाधिपे बलयुते यदि काहलः स्यात् ।”

॥ बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 10 ॥

जिस जातक की पत्रिका में गुरु और चतुर्थेश परस्पर केन्द्र में हों, और लग्नेश बली हो तो काहल योग का सृजन होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु

योग की संभावना : 48 में 1

आपकी पत्रिका के अनुसार काहल योग के प्रथम विधि के अनुसार पत्रिका में काहल योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप तेजस्वी, साहसी, मूर्ख सेना के बल से युक्त, ग्राम पति, मुखिया या ग्राम प्रधान होंगे।

गोपुरांश योग

”सगोपुरांशो यदि गोधनानि ”

॥ बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ॥

जिस जातक की पत्रिका में “गोपुरांश” भाग में ग्रह स्थित हो, वह मनुष्य गौ और धन दोनों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु

योग की संभावना : 4 में 1

आपकी पत्रिका में “गोपुरांश” योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप गो धन अर्थात् पशुओं और धन से पूर्ण रहेंगे।

पारावतांश योग

”करोति पारावतभागयुक्तो विद्यायशः श्रीविपुलं नराणाम् ।”

॥ बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 35 ॥

जिस जातक की पत्रिका में “परावतांश” भाग में ग्रह स्थित हो, वह प्राणी विद्या, यश, अचल लक्ष्मी तथा अतुल सम्पत्ति से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : शनि

योग की संभावना : 6 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण “पारावतांश” योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप विद्वान, यशस्वी, लक्ष्मीवान, अतुल सम्पत्तिवान व्यक्ति होंगे।

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

वासि योग

”व्ययखेटैर्वाशि दिनेशात्।”

॥ बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ॥

यदि जन्मपत्रिका में सूर्य से बारहवें भाव में कोई ग्रह हो तो “वासि” योग का निरूपण होता है।

योग कारक ग्रह : बुध, शनि, सूर्य

योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण “वासि” योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आपकी दृष्टि मन्द अर्थात् आपमें दृष्टिदोष रहेगा। आप परिश्रमी, नीचेदेखनेवाला एवं असत्यवादी होंगे।



SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com